

तापमान
अधिकतम : 39°C
न्यूनतम : 25°C

संकेत
82,445.21
25,103.20

क्रोडा
98,600
1,08,000

shahtimes2015@gmail.com

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

नई दिल्ली, मंगलवार 10 जून 2025 राष्ट्रीय संस्करण: वर्ष 23 अंक 68 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

www.shahtimesnews.com

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 14 विक्रमी सम्वत् 2082

13 जिलाहज्जा 1446 हिजरी

नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वारी, मुगदाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित



विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें।
मुफ्त पढ़ें E-paper

CMYK

CMYK

CMYK

CMYK

CMYK

CMYK

मोदी के 11 साल के राज में बदली देश की तस्वीर शाह , राजनाथ और नड्डा ने कहा: 'ऐसा ही हुआ'

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि उनकी सरकार के 11 वर्ष के कार्यकाल में देश ने 140 करोड़ लोगों को सामूहिक भागीदारी से सुशासन के बल पर विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से बदलाव देखा है, जिससे तेजी से प्रगति हुई है और 'जीवन म' अर्थव्यवस्था बन गया है, बल्कि जलवायु परिवर्तन और डिजिटल नवाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक प्रमुख वैश्विक आवाज भी बन गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2014 में राजग सरकार के केन्द्र की सत्ता में आने के बाद श्री मोदी ने पहली बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के 11 वर्ष

सुशासन से विभिन्न क्षेत्रों में आया बदलाव, प्रगति के साथ जीवन में सुगमता बढ़ी: मोदी

सुगमता' आई है। श्री मोदी ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार के कार्यकाल के 11 वर्ष पुरे होने पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि भारत न केवल सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बन गया है, बल्कि जलवायु परिवर्तन और डिजिटल नवाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक प्रमुख वैश्विक आवाज भी बन गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2014 में राजग सरकार के केन्द्र की सत्ता में आने के बाद श्री मोदी ने पहली बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के 11 वर्ष

पिछले 11 वर्ष का कार्यकाल रहा आर्थिक पुनरुत्थान व राष्ट्रीय सुरक्षा का नया युग नई दिल्ली। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि केन्द्र में राजग सरकार के 11 वर्ष के कार्यकाल में देश ने आर्थिक पुनरुत्थान, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय सुरक्षा का एक नया युग देखा है। श्री शाह ने राजग सरकार का 11 वर्ष का कि प्रधानमंत्री मोदी के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण ने देश को दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में आत्मविश्वास के साथ खड़ा होने में सक्षम बनाया है। उन्होंने एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि भारत आज अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की हर कोमत पर रक्षा करने के संकल्प पर पूरी तरह से सुसज्जित, अश्वस्त और अडिग है।

अभूतपूर्व विकास व आर्थिक परिवर्तन व युगांतरकारी राजनीतिक दौर रहा नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पीएम मोदी के 11 वर्ष के कार्यकाल की सराहना करते हुए इसे 'अभूतपूर्व विकास' व 'युगांतरकारी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन' का युग बताया है। श्री सिंह ने रक्षा क्षेत्र में भारत की बढ़ती आत्मनिर्भरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण ने देश को दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में आत्मविश्वास के साथ खड़ा होने में सक्षम बनाया है। उन्होंने एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि भारत आज अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की हर कोमत पर रक्षा करने के संकल्प पर पूरी तरह से सुसज्जित, अश्वस्त और अडिग है।

पूरे होने के अवसर पर श्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के सिद्धांत से प्रेरित होकर राजग सरकार ने तेजी से और संवेदनशीलता के साथ युगांतरकारी परिवर्तन किए हैं। श्री मोदी ने कहा है कि आर्थिक विकास से लेकर सामाजिक उत्थान तक, सरकार ने जन-केंद्रित, समावेशी और सर्वांगीण प्रगति को प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा -**शेष पृष्ठ दो पर**

बदली राजनीति की संस्कृति, लिए कई बड़े और कड़े फैसले नई दिल्ली। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सोमवार को मोदी सरकार को 'यारदर्शी व भविष्यदर्शी' बताया और कहा कि पीएम ने भारत में राजनीति की संस्कृति में आमूल-चूल परिवर्तन किया है। श्री नड्डा ने मोदी सरकार के 11 वर्ष पुरे होने के मौके पर यहां पार्टी मुख्यालय में विशिष्ट रूप से आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सरकार ने निराशा के वातावरण को दूर कर विकसित भारत की मजबूत आधार रखने का काम किया है। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले की सरकार में भ्रष्टाचार का बोलबाला था और वह नकारात्मक एजेंडा के साथ चल रही थी।

कारगिल युद्ध के शहीदों को उनके घर जाकर सम्मानित करेगी सेना

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सेना 26वें कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में करीब डेढ़ महीने तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करेगी और शुरुआती कार्यक्रम में कारगिल युद्ध में सर्वोच्च बलिदान देने वाले योद्धाओं के परिजनों को इस सप्ताह उनके निवास पर ही सम्मानित किया जाएगा। सेना के अनुसार ये कार्यक्रम विजय दिवस यानी 26 जुलाई तक आयोजित किए जाएंगे और इनमें देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले नायकों की अदम्य भावना, बलिदान और साहस का सम्मान किया जाएगा। सेना ने इस सप्ताह एक विशेष संपर्क अभियान की योजना बनाई गई है जिसमें कारगिल युद्ध के दौरान राष्ट्र की सेवा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले युद्ध नायकों के परिजनों को सम्मानित किया जाएगा। अपनी तरह के इस पहले अभियान में सेना के प्रतिनिधि शहीदों के 545 निकटतम परिजनों से मिलेंगे और उनके निवास स्थान पर उनका सम्मान किया जाएगा। सेना कर्मियों की एक टीम सेना की ओर से आभार पत्र, एक स्मृति चिह्न, विभिन्न केंद्रीय और राज्य सरकार एजेंसियों द्वारा अधिकृत लाभों का विवरण लेकर 25 राज्यों, दो केंद्र शासित प्रदेशों तथा नेपाल का दौरा करेगी और युद्ध नायकों के परिवारों से बातचीत कर उनकी किसी भी समस्या के बारे में पूछताछ करेगी। सेना शहीदों के परिवारों की सहायता के साथ-साथ इस अवसर का इस्तेमाल निकटतम परिजनों की शिकायतों को दूर करने के लिए भी करेगी। सेना विरासत को



26वें कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में डेढ़ महीने तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करेगी सेना

संरक्षित करने के लिए यादगार चीजें भी एकत्र करेगी और इन्हें कारगिल युद्ध स्मारक, द्वास में सम्मानजनक स्थान देगी। ये कार्यक्रम 26 जुलाई को कारगिल युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि समारोह के साथ समाप्त होंगे, जो देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले बहादुरों के सम्मान और आदर का प्रतीक है। डेढ़ महीने से भी अधिक समय तक चलने वाला यह स्मरणोत्सव न केवल अतीत का सम्मान करेगा, बल्कि वर्तमान और भविष्य पीढ़ियों को सेवा तथा बलिदान के मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रेरित भी करेगा। देश में हर वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है जो राष्ट्र के दिल में गौरव व गंभीर यादों के साथ अंकित है।



अमेरिका में 12 देशों के नागरिकों की एंटी बैन विस्तृत खबर देश-विदेश पर



स्पेन के कार्लोस अल्काराज फ्रेंच ओपन चैंपियन बने विस्तृत खबर खेल टाइम्स पर

सऊदी ने भारतीय यात्रियों पर नहीं लगाया कोई प्रतिबंध नई दिल्ली। सऊदी अरब द्वारा भारतीय यात्रियों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। सूत्रों ने सोमवार को कहा कि सऊदी अरब की यात्रा करने वाले भारतीयों पर किसी भी प्रतिबंध के बारे में रिपोर्ट गलत है। सऊदी सरकार ने इस मामले में कोई अधिसूचना जारी नहीं की है। सूत्रों ने बताया कि हर साल हज के दौरान भीड़भाड़ से बचने के लिए अल्पकालिक वीजा पर अस्थायी प्रतिबंध लगाया जाता है, जो हज के समापन के साथ समाप्त होता है। इस साल भी वही किया गया है।

यूपी समेत छह राज्यों में और चढ़ेगा पारा श्रीगंगानगर देश में सबसे ज्यादा गर्म नई दिल्ली। देश का उत्तर पश्चिमी इलाका इन दिनों भीषण गर्मी की चपेट में है। मौसम विभाग ने सोमवार को राजस्थान में हीटवेव का अरिज अलर्ट जारी किया है। राज्य का श्रीगंगानगर रविवार को देश में सबसे ज्यादा गर्म रहा। यहां 47.4 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। विभाग के मुताबिक 11 जून तक बीकानेर संभाग में पारा 47 डिग्री तक पहुंच सकता है। इस बीच 30 से 40 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से धूल भरी हवाएं चल सकती हैं। इसके अलावा जवाहर, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में भी तापमान बढ़ सकता है। मानसून की बात करें, तो यह अभी भी विहार-पश्चिम बंगाल की सीमा पर अटका है। 15 जून तक इसके मध्य प्रदेश में पहुंचने की संभावना है। भारत मौसम विभाग (आईएमडी) ने बताया कि जब से बारिश का रिकॉर्ड रखा जा रहा है (साल 1901) तब से अब तक सबसे ज्यादा बारिश इस साल मई में हुई है। इस साल देश में औसतन 126.7 एमएम बारिश हुई।

गोवा के स्वास्थ्य मंत्री ने डाक्टर से माफी मांगी, निलंबन वापस लिया पणजी। गोवा के स्वास्थ्य मंत्री विश्वजीत राणे ने गोवा मंडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (जीएमसीएच) में एक डाक्टर से बर्बरतापूर्ण करने के मामले में सोमवार को माफी मांग ली। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि मैंने हीट ऑफ द मूमेंट में जिस तरह से स्थिति को हैंडल किया, उसका मुझे बहुत दुख है। दरअसल, स्वास्थ्य मंत्री राणे ने 7 जून को जीएमसीएच का औचक निरीक्षण किया था। इस दौरान उन्होंने ड्यूटी पर तैनात डा. रुदेश कुट्टीकर पर मरीजों के साथ गलत व्यवहार करने का आरोप लगाया और सबके सामने फटकार लगाई। उन्होंने डाक्टर को सस्पेंड करने का आदेश भी दे दिया था। हालांकि, गोवा सरकार ने सस्पेंशन वापस ले लिया है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इसमें स्वास्थ्य मंत्री राणे ने डाक्टर की तरफ उंगली दिखाते हुए कहा था कि आप अपनी जुबान पर काबू रखना सीखिए, आप डाक्टर हैं मैं आमतौर पर अपना आपा नहीं खोता, लेकिन आपको मरीजों से ठीक से व्यवहार करना होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने मप्र के दो पत्रकारों को दी गिरफ्तारी से राहत

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मध्य प्रदेश में एक पुलिस अधिकीश के कार्यालय में कथित तौर पर मारपीट और जान के खतरे की आशंका के खिलाफ रायचूर दो पत्रकार शशिकांत जाटव और अमरकांत सिंह चौहान की याचिकाओं पर गिरफ्तारी से अंतरिम राहत देते हुए उन्हें मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने की सोमवार को अनुमति दी।

पीठ ने याचिकाकर्ता दोनों पत्रकारों -शशिकांत जाटव और अमरकांत सिंह चौहान को गिरफ्तारी से तो राहत दी, लेकिन किसी अन्य प्रकार की राहत के लिए उनकी याचिका पर विचार करने से इन्कार कर दिया और उन्हें मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय जाने को कहा। पीठ ने कहा कि हम याचिका पर विचार नहीं कर रहे हैं। हालांकि, आरोपों को देखते हुए हम याचिकाकर्ताओं को आज से (10 जून 2025) दो सप्ताह के भीतर संबंधित उच्च न्यायालय जाने की अनुमति देते हैं। इस बीच जब तक याचिकाकर्ता उच्च न्यायालय नहीं जाते तब तक उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। याचिकाकर्ताओं ने अपीलकर्ता अजय सहित भिंड पुलिस पर हिरासत में हिसा, जाति-आधारित दुर्व्यवहार और जान को लगातार खतरा होने का आरोप लगाया है। इससे पहले, शीर्ष अदालत ने दो जून को उन पत्रकारों की याचिका पर नौ जून को सुनवाई करने की सहमति व्यक्त की थी।

मद्रास के राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल वसूली पर अंतरिम आदेश नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मद्रास उच्च न्यायालय को उस आदेश पर सोमवार को अंतरिम रोक लगा दी, जिसमें मद्रै-तूतीकोरिन राष्ट्रीय राजमार्ग को पुनर्निर्माण नहीं होने तक वहां टोल शुल्क वसूली पर रोक लगाई गई थी। शीर्ष अदालत के इस अंतरिम आदेश के बाद एनएचएआई मद्रास के मद्रै- तूतीकोरिन राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल वसूली करने के लिए स्वतंत्र है।



शिक्षा मद का 2291.30 करोड़ रोकने के मामले में तत्काल सुनवाई से इन्कार नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने केंद्र सरकार पर समय शिक्षा योजना की 2291.30 करोड़ रुपये की धनराशि रोकने का आरोप लगाते हुए उसका भुगतान करने का निर्देश देने की तमिलनाडु सरकार की याचिका पर शीघ्र तत्काल सुनवाई करने से सोमवार को इन्कार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा इसमें कोई जल्दबाजी नहीं।

अंतरिक्ष में नई इबारत लिखने को तैयार शुभांशु शुक्ला

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली/लखनऊ। इंडियन एस्ट्रोनाट शुभांशु शुक्ला एक्सओम मिशन 4 के तहत (आज) 10 जून को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) जाएंगे। उनके अंतरिक्ष रवाना होने से उनके घर को उनकी जीवन यात्रा से जुड़े पोस्टर लगाकर सजाया गया है। साथ ही इसमें उनको इस बड़ी उपलब्धि के लिए बधाई दी गई है। इनमें वह अलग-अलग कार्यक्रमों में दिख रहे हैं। किसी में प्रधानमंत्री मोदी उनका हीसला अफजाई कर रहे हैं। किसी में वह प्रशिक्षण स्थान पर दिख रहे हैं। इससे पहले रविवार को शुभांशु ने फुल इंटर फाइनल रिहर्सल की। इसमें असेंबली बिलडिंग से रॉकेट तक जाने और उसमें बैठने के प्रॉसेस को फालो किया। इस दौरान शुभांशु ने कहा कि यह एक बेहतरीन यात्रा रही है। ये पल बताते हैं कि आप किसी ऐसी चीज का हिस्सा बनने जा रहे हैं, जो आपके खुद से बहुत बड़ी है। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि बहुत सी भाग्यशाली हूँ कि मुझे मिशन का हिस्सा बनने का अवसर मिला। एक्सओम मिशन 4 में चार देशों के चार एस्ट्रोनाट 14 दिन के लिए स्पेस स्टेशन जाने वाले हैं। यह मिशन 10 जून 2025 को शाम 5:54 बजे लॉन्च होगा। शुभांशु आईएसएस पर जाने वाले पहले और स्पेस में जाने वाले दूसरे भारतीय होंगे। इससे पहले राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत यूनियन के स्पेसक्राफ्ट से अंतरिक्ष यात्रा की थी। एक्सओम 4 मिशन के चालक दल में भारत, पोलैंड और हंगरी के मंबर शामिल हैं। स्लावो

पोस्टरों से सजाया गया उनका घर, आईएसएस जाने से पहले की फाइनल रिहर्सल, आज रवाना होंगे, ऐसा करने वाले पहले भारतीय बनेंगे शुभांशु

वह प्रशिक्षण स्थान पर दिख रहे हैं। इससे पहले रविवार को शुभांशु ने फुल इंटर फाइनल रिहर्सल की। इसमें असेंबली बिलडिंग से रॉकेट तक जाने और उसमें बैठने के प्रॉसेस को फालो किया। इस दौरान शुभांशु ने कहा कि यह एक बेहतरीन यात्रा रही है। ये पल बताते हैं कि आप किसी ऐसी चीज का हिस्सा बनने जा रहे हैं, जो आपके खुद से बहुत बड़ी है। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि बहुत सी भाग्यशाली हूँ कि मुझे मिशन का हिस्सा बनने का अवसर मिला। एक्सओम मिशन 4 में चार देशों के चार एस्ट्रोनाट 14 दिन के लिए स्पेस स्टेशन जाने वाले हैं। यह मिशन 10 जून 2025 को शाम 5:54 बजे लॉन्च होगा। शुभांशु आईएसएस पर जाने वाले पहले और स्पेस में जाने वाले दूसरे भारतीय होंगे। इससे पहले राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत यूनियन के स्पेसक्राफ्ट से अंतरिक्ष यात्रा की थी। एक्सओम 4 मिशन के चालक दल में भारत, पोलैंड और हंगरी के मंबर शामिल हैं। स्लावो

केरल में सिंगापुर के कार्गो शिप में आग लगी, पांच घायल कोच्चि। केंरल के कोच्चि में सिंगापुर के कार्गो शिप एमवीडब्ल्यूएनएचआई 503 में सोमवार सुबह आग लग गई। कार्गो शीलका के कोलंबो पोर्ट से 7 जून को रवाना हुआ था। इसे 10 जून को नवी मुंबई के जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ('नवावा शेवा पोर्ट') पहुंचना था। इंडियन कोस्ट गार्ड के मुताबिक घटना के दौरान कार्गो पर 18 क्यू मैक्स स्वार थे। इनमें से 4 मैक्स लापता बताए जा रहे हैं, 5 घायल हैं। न्यू मॉलैर के पास इंडियन कोस्ट गार्ड के शिप-राजदूत, अर्नवेश, सचेत, समुद्र प्रहरी, राजदूत और सी-144 रेस्क्यू में जुटे हैं। इंडियन नौका आर्गुएन्सस सूत्र भी ऑपरेशन में शामिल है।

लोकल ट्रेन से गिरने पर पांच लोगों की मौत, सात घायल मुंबई। महाराष्ट्र के मुंबा रेलवे स्टेशन पर कसारा से आने वाली एक भीड़भाड़ वाली लोकल ट्रेन से गिरने से सोमवार को पांच लोगों की मौत हो गई और सात अन्य घायल हो गए। मुंबा पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक अनिल शिंदे ने यह जानकारी दी। श्री शिंदे ने कहा कि यह दुर्घटना सुबह करीब नौ बजे हुई और हमें सवा नौ बजे सूचना मिली और हम मौके पर पहुंचे, तो पाया कि करीब सात लोग घायल हैं और कम से कम पांच लोगों की मौत हो चुकी है। घायलों और मृतकों को तुरंत नजदीकी छत्रपति शिवाजी महाराज अस्पताल, कलवा ले जाया गया, जिनमें से चार घायल खुद जुपिटर अस्पताल चले गए। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक रिपोर्टों से पता चलता है कि घटना के दौरान 10 से 12 यात्री ट्रेन से गिरे थे। अधिकारियों ने दुर्घटना का मुख्य कारण अत्यधिक भीड़ बताया है, कथित तौर पर उस समय कई यात्री ट्रेन के दरवाजों पर लटक रहे थे।

सुकमा विस्फोट में एसपी शहीद सुकमा। जिले में सोमवार सुबह नक्सलियों ने आईईडी ब्लास्ट कर पुलिस अधिकारी की गाड़ी को उड़ा दिया है, जिसमें एसपी आकाश राव गिरफ्तार शहीद हो गए। वहीं एसडीओपी व टीआई समेत दो लोग घायल हो गए। गोलापल्ली मार्ग पर नए कैंप की स्थापना कर पुलिस अधिकारी लौट रहे थे। इस दौरान नक्सलियों द्वारा लगाए गए आईईडी की चपेट में आने से एसपी गिरफ्तार हुए। सुकमा के महेनगर किसी भी प्रकार की नक्सली घटना को रोक जा सके। आईजी बस्तर पी. सुंदरराज ने बताया कि कोटा-एरांबोरा मार्ग पर डांडा के पास आईईडी विस्फोट की चपेट में आने से उपचार के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

तहल्लूर को परिवार से बात करने की मिली छूट

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड तहल्लूर हुसैन राणा की याचिका पर सोमवार को दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में सुनवाई हुई। राणा को अपने परिवार से बात करने की परमिशन मिल गई है।

मांमले की सुनवाई स्पेशल एनआईए जज चंद्र जीत सिंह ने की। राणा फिलहाल अपने परिवार को केवल एक बार फोन कर सकता है। यह कॉल जेल के नियमों के अनुसार और तिहाड़ जेल के अधिकारी की निगरानी में की जाएगी। कोर्ट ने जेल अधिकारियों से रिपोर्ट भी मांगी है, जिसमें पूछा गया है कि क्या राणा को भविष्य में नियमित फोन कॉल की अनुमति दी जानी चाहिए। इससे पहले 24 अप्रैल को कोर्ट ने राणा की याचिका खारिज कर दी थी। राणा के वकील पीयूष सचदेवा ने कहा था कि एक विदेशी नागरिक के तौर पर उसे परिवार से बात करने का अधिकार है और उसके इलाज को लेकर परिवार चिंतित है, लेकिन एनआईए ने जांच का हवाला देकर इसका विरोध किया था, जिसके बाद कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी थी। आरोपी राणा 9 जुलाई तक

तिहाड़ जेल अधिकारी की मौजूदगी में सिर्फ एक बार फोन करेगा, मुंबई हमले का मास्टरमाइंड



एनआईए की हिरासत में है। 28 अप्रैल को पिछली सुनवाई में उसकी कस्टडी 12 दिन के लिए बढ़ा दी गई थी। दरअसल, एनआईए ने 10 अप्रैल को तहल्लूर राणा को अमेरिका से भारत लाया था। उसका प्रत्यर्पण 'ऑपरेशन राणा' के तहत हुआ था। तहल्लूर को अमेरिका के शिकागो में अक्टूबर 2009 में अमेरिकी एजेंसी एफबीआई ने गिरफ्तार किया था।

कोरोना मामलों की संख्या 6491 तक पहुंची नई दिल्ली। देशभर में कोरोना संक्रमण के सक्रिय मामलों की संख्या सोमवार सुबह तक 6491 पहुंच गई और राहत की बात यह है कि इसके संक्रमण से पिछले 24 घंटों के दौरान किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार सोमवार सुबह आठ बजे तक 358 नए संक्रमणों के मामले सामने आए, जिससे कोविड-19 के कुल मामलों की संख्या 6,491 हो गई। राहत की बात यह है कि पिछले 24 घंटों में कोरोना से संबंधित किसी अन्य मरीज की मौत नहीं हुई और मृतकों की संख्या 65 पर स्थिर है। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार सबसे ज्यादा मामले केरल में दर्ज किए गए हैं। देश के दस राज्यों में कोरोना सक्रिय मामलों में वृद्धि हुई है। जिनमें से केरल, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में भी मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। कोरोना संक्रमण के मामले में केरल सबसे अधिक प्रभावित राज्य बना हुआ है, जहां सोमवार सुबह सक्रिय मामलों की संख्या 1957 तक पहुंच गई और दिल्ली में लगभग 42 नए मामले सामने आए, जिससे कुल मामलों की संख्या 728 हो गई।

कोरोना मामलों की संख्या 6491 तक पहुंची नई दिल्ली। देशभर में कोरोना संक्रमण के सक्रिय मामलों की संख्या सोमवार सुबह तक 6491 पहुंच गई और राहत की बात यह है कि इसके संक्रमण से पिछले 24 घंटों के दौरान किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार सोमवार सुबह आठ बजे तक 358 नए संक्रमणों के मामले सामने आए, जिससे कोविड-19 के कुल मामलों की संख्या 6,491 हो गई। राहत की बात यह है कि पिछले 24 घंटों में कोरोना से संबंधित किसी अन्य मरीज की मौत नहीं हुई और मृतकों की संख्या 65 पर स्थिर है। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार सबसे ज्यादा मामले केरल में दर्ज किए गए हैं। देश के दस राज्यों में कोरोना सक्रिय मामलों में वृद्धि हुई है। जिनमें से केरल, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में भी मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। कोरोना संक्रमण के मामले में केरल सबसे अधिक प्रभावित राज्य बना हुआ है, जहां सोमवार सुबह सक्रिय मामलों की संख्या 1957 तक पहुंच गई और दिल्ली में लगभग 42 नए मामले सामने आए, जिससे कुल मामलों की संख्या 728 हो गई।

RADIO SD 90.8 FM
...आपके दिल की बात

2 National Awards & Golden Miles Awarded
only Community Radio Station of India

रेडियो पर चिज्ञापन के लिए संपर्क करें
8937095000/20

WE ARE HIRING
MARKETING EXECUTIVES & INTERNS FOR RADIO

Follow us on radiosa908fm
MANDI SAMIR ROAD, MIZAPUR, BANGALORE- 561001
CONTACT - 8937095000/20

संक्षिप्त समाचार

दोनों डिप्टी सीएम लोगों को आपस में लड़ा रहे: सपा

कौशांबी, जिले में रामबाबू आत्महत्या प्रकरण को लेकर सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक्स पर ट्वीट करते हुए लिखा है कि भाजपा की राजनीति में इन दिनों अंदरूनी खींचतान का भयानक दृश्य देखने को मिल रहा है, जो कौशांबी में दो भाजपाई उपमुख्यमंत्रियों के बीच चल रही नोकझोंक से स्पष्ट होता है। उन्होंने आगे लिखा कि समाज में फैल रही असमंजस और अविश्वास की स्थिति को देखना अत्यंत चिंताजनक है। पहले एक उपमुख्यमंत्री ने पाल समाज के लोगों को मोहरा बनाकर अपनी स्वाधीन राजनीतिक खेल खेला, जबकि दूसरे ने अपने समाज को सहानुभूति दिखाकर झुठी रणनीति अपनाई। इसके पीछे दोनों के ऊपरवाले और उनके राजनीतिक गुलामों के बीच की टकराहट भी एक महत्वपूर्ण कारण बन रही है। सपा की राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक्स पर ट्वीट करते हुए लिखा है कि इस सब के बीच यह समझना आवश्यक है कि भाजपा की अंदरूनी राजनीति केवल सत्ता की होड़ नहीं, बल्कि जनता को बांटने और विभाजित करने का एक प्रयास है।

धर्म के गांवों में पंजरिवर्तन चिंता का विषय: समिति

नई दिल्ली, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक समिति ने कहा है कि पंजाब के 12 हजार गांवों में से आठ हजार गांवों में ईसाई धर्म के प्रचारक गरीब और कमजोर सिखों का तरह-तरह के लालच और लोभ देकर धर्म परिवर्तन करा रहे हैं जो चिंता का विषय है। समिति के अध्यक्ष सरदार हर्भोत सिंह कालका और महासचिव सरदार जगदीप सिंह काल्हौ ने सोमवार को यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पंजाब के गांवों में ईसाई धर्म के प्रचारक पहुंच चुके हैं, जो गरीब और कमजोर सिखों को तरह-तरह के लालच और लोभ देकर ईसाई धर्म में शामिल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि पंजाब में ईसाई धर्म का प्रचार बढ़े स्तर पर पहुंच चुका है, लेकिन एसजीपीसी समिति सिख धर्म के प्रचार-प्रसार की अपनी जिम्मेदारी निभाने में असफल रही है। पंजाब में समिति संसाधनों के बावजूद, दिल्ली गुरुद्वारा समिति ने हाल के समय में 2500 से अधिक सिखों की अमृत संचार के जरिये सिख धर्म में वापसी करवाई है।

यूपी के तीन जिलों में लू का अलर्ट

लखनऊ, देश में मानसून के पिछले महीने समय से पहले आ जाने जाने से दिल्ली समेत कई राज्यों में मूसलाधार बरसात देखने को मिली, लेकिन अब बरसात का दौर थमने के बाद एक बार फिर दिल्ली और उत्तर भारत के कई राज्यों में गमी लोगों को झुलसा रही है। देश की राजधानी में सूख आसमान से आग बरसा रहा है। आज दिल्ली में मौसम साफ रहने वाला है। अगले 4 दिन तक दिल्ली की गर्मी से राहत नहीं मिलने वाली है, हालांकि इसके बाद 13 जून को बारिश के आसार हैं। उत्तर प्रदेश में चुभौली-जलौली गर्मी पड़ रही है। मौसम विभाग ने आज से 11 जून के बीच प्रदेश के दक्षिणी और पश्चिमी भागों में कहीं-कहीं लू चलने का अनुमान लगाया है। आगरा, ब्रज और बुंदेलखंड क्षेत्र में धूल भरी हवाओं के साथ लू चल सकती है। प्रदेश में 11 जून से बारिश होने की संभावना है। इससे पहले राज्य में गर्मी और लू देखने को मिल सकती है।

प्रथम पृष्ठ के शेष...

मोदी के
कि भारत आज न केवल सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कार्रवाई और डिजिटल नवाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक प्रमुख वैश्विक आवाज भी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश को अपनी सामूहिक सफलता पर गर्व है, लेकिन इसके साथ ही, हम आशा व विश्वास के साथ विकसित भारत के निर्माण के लिए नए संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि पिछले 11 वर्षों में कई सकारात्मक बदलाव आए हैं और जीवन की सुगमता को बढ़ावा मिला है। श्री मोदी ने सरकार की उपलब्धियों को संवाद-शैली के माध्यम से प्रस्तुत करने वाली नमो एप के माध्यम से इस परिवर्तनकारी यात्रा के बारे में जानकारी जुटाने के लिए देशवासियों को प्रोत्साहित भी किया है।

इस एप के जरिये इंटरैक्टिव गेम, क्विज़, सर्वेक्षण और अन्य प्रारूपों के माध्यम से प्रेरणादाई जानकारी प्राप्त की जा सकती है। प्रधानमंत्री ने लोगों को नमो एप और आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध वीडियो, इन्फोग्राफिक्स और लेखों जैसे डिजिटल आकर्षक प्रारूपों के माध्यम से भारत की विकास यात्रा के बारे में जानकारी लेने के लिए भी आमंत्रित किया। श्री मोदी ने अपने पोस्ट में कहा कि सुशासन और परिवर्तन पर स्पष्ट प्रतिबद्धता 140 करोड़ भारतीयों के आशीर्वाद और सामूहिक भागीदारी के बल पर भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से परिवर्तन देखे हैं। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका

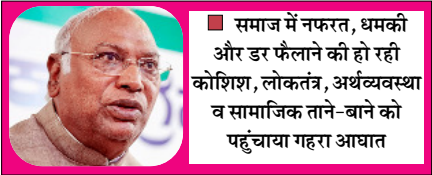
विफलताओं की मिसाल साबित हुए हैं मोदी शासन के 11 साल : खड़गे

वादे करके छीन ली गई करोड़ों की नौकरियां

नई दिल्ली, वार्ता

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मोदी सरकार के 11 साल के शासन काल को विफल, संवैधानिक ढांचे को नुकसान पहुंचाने, हकीकत की जगह सिर्फ जुमलेबाजी करने और सामाजिक ताने बाने को आघात पहुंचाने वाला करार देते हुए सोमवार को कहा कि इस दौरान राज्यों की अनदेखी हुई तथा संघीय ढांचे को कमजोर किया गया है।

खड़गे ने कहा कि पिछले 11 वर्ष में मोदी सरकार ने लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने को गहरा आघात पहुंचाया है। भाजपा-आरएसएस ने हर संवैधानिक संस्था को कमजोर कर, उनकी स्वायत्तता पर कड़ा प्रहार किया है। चाहे वो जनमत चुराकर पिछले दशकों से सरकारें गिराता हो या एक-दलीय तानाशाही शासन जबरन लागू करना हो। इस दौरान, राज्यों के हकों की अनदेखी हुई है और संघीय ढांचे को कमजोर किया गया है। उन्होंने कहा कि समाज में नफ़रत, धमकी और डर का वातावरण फैलाने की कोशिश जारी है। दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक तथा कमजोर वर्गों का शोषण लगातार बढ़ा है। इनके



हमारी चुनौती का जवाब मोदी हैं, नड्डा नहीं
नई दिल्ली, कांग्रेस ने कहा है कि एक दिन पहले पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने कार्यकाल पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सवालों का जवाब देने की चुनौती दी थी, लेकिन सोमवार को भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा को 11 साल की उपलब्धियों का लेखा-जोखा पेश करने को प्रेस के सामने लाया जा रहा है। कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख जयराम रमेश ने कहा कि जब चुनौती मोदी के लिए थी, तो नड्डा को प्रेस के सवालों का जवाब देने और 11 साल की उपलब्धियां गिनाने क्यों भेजा जा रहा है। उन्होंने चुटकीले तौर पर कहा कि क्या सवाल करने वाले अनुकूल चेहरे अब तक नहीं मिले हैं। उन्होंने कहा कि कल हमने प्रधानमंत्री को उनकी सत्ता में 11 साल पूरे होने के मौके पर पहली बार एक अनरिस्कप्टेड और बिना पूर्व-निर्धारित सवाल-जवाब वाला प्रेस कॉन्फ्रेंस करने की खुली चुनौती दी थी, लेकिन भाजपा अध्यक्ष नड्डा आज सामने आएंगे, जिन्हें दोपहर 12 बजे प्रेस से बात करने के लिए भेजा गया।

आरक्षण और बाबूबरी के अधिकार से वंचित रखने की साजिश जारी है। मणिपुर की ना थमने वाली हिंसा भाजपा की प्रशासनिक विफलता का सबसे बड़ा सबूत है। भाजपा-आरएसएस ने देश के जोड़ीपी विकास दर को 5-6 प्रतिशत की आदत डाल दी, जो यूपीए सरकार

दस मुद्दों पर केंद्र को घेरेंगी कांग्रेस

नई दिल्ली, मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर कांग्रेस केंद्र से लेकर राज्य और जिलास्तर तक पोल-खोल अभियान चलाने की तैयारी में है। कांग्रेस के रिसर्च विभाग को जिम्मेदारी दी गई थी कि वो तथ्यों और आंकड़े जुटाए, जिससे राज्यवार मोदी सरकार के 11 साल की पोल खोल की जा सके। इसमें मुख्य रूप से इन मुद्दों का ख्याल रखा गया है।

कांग्रेस आर्थिक मोर्चे पर नाकामी, विदेश नीति भटकौड़ी, 11 साल में वो वादे जो जुमले साबित हुए, सामाजिक ताने बाने को चोट, संवैधानिक संस्थाओं और एजेंसी का बेजा इस्तेमाल, चुनावी प्रक्रिया में धांधली, क्रोनी कैपिटलिज्म को बढ़ावा, आतंकी हमलों पर जवाबदेही नहीं, सेना के शौर्य पर सियासी लाभ लेने की लगातार कोशिश और पीएम ने 11 सालों में एक भी पीसी क्यों नहीं की, जवाबदेही का सवाल मुद्दों पर बीजेपी को घेरेंगी। रिसर्च विभाग ने इसके इर्द गिर्द तैयारी पूरी कर ली है। अब राज्य और केंद्र के नेताओं ने उसी आधार पर मीडिया, सोशल मीडिया, पीसी, पोस्टर और रैलियों में इसका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। इसकी शुरुआत चुनावी राज्य बिहार में कांग्रेस ने की है, जुमलों की लिस्ट के जरिए। इस दौरान कांग्रेस प्रवक्ता राजीव गोड़ा ने कहा कि सरकार अर्थव्यवस्था पर पीठ थपथपा रही है, लेकिन जॉबलेस ग्रोथ हो रही है। वहीं, कांग्रेस प्रवक्ता महिमा सिंह ने कहा कि सरकार को आंकड़े जारी कर रही है, उसमें तथ्यों और आंकड़ों की बाजीगरी है। उसने किसान लाभार्थियों को 3.7 लाख करोड़ रुपए वितरित किए, जबकि हकीकत यह है कि अप्रैल 2022 से नवंबर 2023 के बीच करीब खरा 2 करोड़ लाभार्थी लिस्ट से ही हटा दिए गए।

अध्यक्ष ने मोदी सरकार को हर नीति को विफल करार देते हुए कहा कि नोटबंदी, गलत जीएसटी, अनियोजित लोक-डाउन और असंगठित क्षेत्र पर लोथीड़ा चलाकर करोड़ों का भविष्य बर्बाद किया। मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, डिजिटल इंडिया, नमामो गंगे, 100

जनता को भ्रमित कर रहे हैं तेजस्वी यादव: राजीव रंजन

नई दिल्ली, जनता दल यूनाइटेड ने बिहार विधानसभा के विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव पर जनता को भ्रमित करने का आरोप लगाते हुए सोमवार को कहा कि लालू प्रसाद यादव के शासनकाल के दौरान आरक्षण के लिए कोई प्रावधान नहीं किए गए।

जनता दल यूनाइटेड के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने यहां कहा कि नीतीश सरकार द्वारा कराए गए जाति सर्वेक्षण पर सवाल उठाकर श्री तेजस्वी यादव जनता को भ्रमित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्री लालू प्रसाद यादव के शासनकाल के दौरान पिछड़ों, वंचितों और महिलाओं को उनके अधिकार देने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। वर्ष 1990 से वर्ष 2005 तक राजद की सरकार थी और इस दौरान पंचायतीराज या अन्य संस्थानों तथा नौकरियों में महिलाओं, वंचितों और पिछड़ों वर्ग के लिए आरक्षण के प्रावधान नहीं किए गए।

हरियाणा-महाराष्ट्र चुनाव डेटा कब शेयर करेगा ईसी

नई दिल्ली, वार्ता

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सोमवार को हरियाणा और महाराष्ट्र में 2009 से 2024 के दौरान हुए चुनावों का डेटा शेयर करने के चुनाव आयोग के फंसले को सरहना की।

राहुल ने पूछा कि क्या चुनाव आयोग डिजिटल फॉर्मेट में डेटा सौंपने की तारीख बता सकता है। राहुल ने यह सवाल एक्स पर एक पोस्ट के जरिए पूछा। उन्होंने 7 जून को पब्लिश एक मीडिया रिपोर्ट का स्क्रीनशॉट भी शेयर किया, जिसमें दावा किया गया है कि चुनाव आयोग ने 2025 की शुरुआत में दिल्ली हाईकोर्ट को 2009 से 2024 तक हरियाणा और महाराष्ट्र के वोटर्स लिस्ट का डेटा शेयर करने का आश्वासन दिया था। हालांकि, चुनाव आयोग की ओर से इस पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। राहुल ने शनिवार को देश के दो दैनिक अखबारों में अपने लेख के जरिए 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए चुनाव आयोग से जवाब मांगा था। आयोग के सूत्रों ने रविवार को कहा कि वह तभी जवाब देगा जब राहुल उन्हें डायरेक्ट लैटर लिखेंगे। राहुल ने कहा था- महाराष्ट्र की तरह बिहार में मैच फिक्सिंग होगी राहुल गांधी ने अखबारों में अपने लेख में



■ तारीख बताएं चुनाव आयोग, दो दिन पहले कहा था कि विस 24 के चुनाव में मैच फिक्सिंग हुई थी: राहुल

कहा था कि- महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में रमैच फिक्सिंग की गई थी, जिसमें पहले से भाजपा की जीत तय करने की पूरी कोशिश की गई। भाजपा और उसके सहयोगियों ने चुनाव जीतने के लिए 5 स्टैप को आश्वासन दिया था। हालांकि, चुनाव आयोग की ओर से इस पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। राहुल ने शनिवार को देश के दो दैनिक अखबारों में अपने लेख के जरिए 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए चुनाव आयोग से जवाब मांगा था। आयोग के सूत्रों ने रविवार को कहा कि वह तभी जवाब देगा जब राहुल उन्हें डायरेक्ट लैटर लिखेंगे। राहुल ने कहा था- महाराष्ट्र की तरह बिहार में मैच फिक्सिंग होगी राहुल गांधी ने अखबारों में अपने लेख में

जनता के सामने पेश करें लेखा-जोखा: सपा

शाह टाइम्स ब्यूरो



■ मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर सपा सुप्रियो ने सरकार को घेरा

अखिलेश ने कहा कि उत्तर प्रदेश के लोग इसीलिए ज्यादा आकलन करेंगे, क्योंकि देश के प्रधानमंत्री इसी राज्य से आते हैं। दिल्ली और लखनऊ के बीच तालमेल नहीं दिखाई देता। अखिलेश ने आगे कहा कि दिल्ली और लखनऊ के बीच कोई तालमेल है, ऐसा नहीं लगता। यह मैं नहीं कह रहा, बल्कि यह इनकी योजनाओं में साफ दिखता है। उन्होंने सरकार की योजनाओं पर सवाल उठाते हुए कहा कि जो गांव गांव लिए गए, अगर

उनकी तस्वीर नहीं बदली, तो प्रश्न चिह्न लगता है और यह प्रश्न चिह्न उत्तर प्रदेश सरकार पर लगता है। अखिलेश यादव ने बीजेपी सरकार पर आंतरिक खींचतान का आरोप लगाते हुए कहा कि वहाँ जितने लोग बीजेपी में बैठे हैं, वे एक-दूसरे के सिर से टकरा रहे हैं। कोई किस विभाग नहीं है, जहाँ खींचतान न चल रही हो। गांवों में अब भी गंदगी घरी हुई है। सपा प्रमुख ने किसानों की समस्याओं पर सरकार को घेरे हुए सवाल उठाया कि फसलों का कोई एरियल सर्वे करता है क्या? आपको खुद जाकर किसानों का सामना करना चाहिए, जो आप करना नहीं चाहते। उत्तर प्रदेश में आज भी बड़े पैमाने पर लोग बेरोजगारी और महंगाई से जूझ रहे हैं। कार्यवाहक डीजीपी को लेकर अखिलेश यादव ने कहा कि जब स्थानी सरकार बनोगी, तभी प्रदेश का स्थानी डीजीपी मिलेगा। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि अब 2027 के बाद ही उत्तर प्रदेश को स्थायी डीजीपी मिल पाएगा।

अर्थ व्यापार

लिवाली की बढौलत शेयर बाजार में रही तेजी

मुंबई, वार्ता

अमेरिका और चीन के बीच लंदन में होने वाली व्यापार वार्ता से वैश्विक स्तर पर तनाव कम होने की उम्मीद से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर हुई चौतरफा लिवाली की बढौलत सोमवार को शेयर बाजार लगातार चौथे दिन तेजी रही। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक संसेक्स 256.22 अंक की छलांग लगाकर 82,445.21 अंक और नेशनल स्टीक एक्सचेंज इण्डेक्सईएनएसई कि निफ्टी 100.15 अंक उछलकर 25103.20 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह बीएसई का मिडकैप 1.03 प्रतिशत की तेजी के साथ 86,570.16 अंक और स्मॉलकैप 1.19 प्रतिशत मजबूत रहकर 54,074.



88 अंक हो गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4335 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2798 में लिवाली जबकि 1409 में बिकवाली हुई वहीं 128 में कोई बदलाव नहीं हुआ।

इसी तरह एनएसई में कारोबार के लिए रखी गई कुल 3055 कंपनियों के शेयरों में से 2066 में तेजी जबकि 904 में गिरावट रही वहीं 85 में टिकाव रहा। बीएसई में रिपटी की 0.11 प्रतिशत की गिरावट को

छोड़कर अन्य 20 समूहों में तेजी का रुख रहा। शुरुआती कारोबार में संसेक्स 386 अंक की तेजी के साथ 82,574.55 अंक पर खुला और लिवाली दम पर थोड़ी देर बाद ही 82,669.00 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। वहीं, बिकवाली होने से दोपहर बाद यह 82,369.24 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। अंत में पिछले दिवस के 82,188.99 अंक के मुकाबले 0.31 प्रतिशत उछलकर 82,445.21 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह निफ्टी 157 अंक चढ़कर 25,160.10 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 25,160.10 अंक के उच्चतम जबकि 25,077.15 अंक के निचले स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 25,003.05 अंक की तुलना में 0.40 प्रतिशत मजबूत होकर 25,103.20 अंक पर बंद हुआ।

एसबीआई ने दिया 8076 करोड़ का लाभांश

नई दिल्ली, देश के सबसे बड़े वाणिज्यिक बैंक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने सरकार को वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 8076 करोड़ रुपये से अधिक का लाभांश दिया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को बैंक अध्यक्ष सीएस सेट्टी ने सोमवार को यहां इस राशि का चेक सौंपा। बैंक ने मई 2025 में एक नियामक फाइलिंग में बताया कि उन्होंने वित्त वर्ष 2025 के लिए 15-90 रुपये या 1590 प्रतिशत का अंतिम लाभांश को मंजूरी दी है। यह वीते 12 सालों के दौरान बैंक की ओर से सबसे बड़ा लाभांश भुगतान है। इससे पहले साल 2013 में बैंक ने 41-5 रुपये या 4500 प्रतिशत का लाभांश दिया था।

अधिकांश खाद्य तेल सस्ते, जिंसों में टिकाव

नई दिल्ली, वार्ता



विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर उठाव सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिस बाजार में अधिकांश खाद्य तेल 953 रुपये प्रति बिन्टल तक सस्ते हो गए जबकि अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का जून वायदा 14 रिंगिट बढ़कर 3925 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। वहीं, जून का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0-02 सेंट की गिरावट के साथ 47-49 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान घरेलू बाजार में अधिकांश खाद्य तेलों में तेजी का रुख रहा। मूँगफली तेल 110 रुपये, सोया

अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान चावल और गेहूं के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के थोक दाम इस प्रकार रहे :- दाल-दलहन : चना 5700-5900, दाल चना 6700- 6800, मसूर काली 7500 –7600, मूँग दाल 9500-9600, उड़द दाल 9200-9300, अरहर दाल 8600-8700 रुपये प्रति बिन्टल रहे। दाल : उःभाव प्रति बिन्टलः गेहूं दढ़ा 2950-3050 रुपये और चावल 3650-3750 रुपये प्रति बिन्टल रहा। चीनी-गुड़ : चीनी एस. 4280-4380, चीनी एम. 4500-4600, मिल डिलीवरी 3620-3720 और गुड़ 4400-4500 रुपये प्रति बिन्टल बोले गए।

उत्तर प्रदेश के 10 जिलों में सभी भूलेख होंगे ऑनलाइन

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ, यूपी के 10 जिलों में नक्शा कार्यक्रम के तहत शहरी भूमि रिकॉर्ड तैयार किए जा रहे हैं। इनमें टांडा, नवाबगंज, गोरखपुर, झांसी आदि शहर शामिल हैं, इससे शहरी नियोजन के साथ संपत्ति कर निर्धारण और विवादों को कम करने में मदद मिलेगी। साल 2031 और पविष्य की योजनाओं के बारे में बताया। सचिव ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार का लक्ष्य एक ट्रिग्लियन डॉलर की अर्थव्यवस्था हासिल करना है। राज्यस्व विभाग ने ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव मनोज जोशी ने पत्रकार वार्ता में यह जानकारी दी। उन्होंने यूपी में डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड मॉडर्नाइजेशन प्रोग्राम और शहरी

नक्शा कार्यक्रम से मिलेगी सटीक जानकारी, जमीन के लिए नहीं होंगे झगड़े

क्षेत्रों के लिए 'नक्शा' कार्यक्रम' के बारे में बताया। राज्यस्व विभाग के अध्यक्ष अनिल कुमार ने भी डिजिटल भूमि प्रबंधन, नवाचारों और पविष्य की योजनाओं के बारे में बताया।

सचिव ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार का लक्ष्य एक ट्रिग्लियन डॉलर की अर्थव्यवस्था हासिल करना है। राज्यस्व विभाग ने ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव मनोज जोशी ने पत्रकार वार्ता में यह जानकारी दी। उन्होंने यूपी में डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड मॉडर्नाइजेशन प्रोग्राम और शहरी

जियो-रेफरेंसड किया गया है। प्रत्येक भूखंड को यूनिक लैंड पार्सल आइडेंटिफिकेशन नंबर (यूपलपीआईएन) दिया गया है। इसमें भूखंड का आकार, स्वामित्व और भौगोलिक निर्देशांक शामिल हैं। इससे संपत्ति लेन-देन, कर निर्धारण और आपदा प्रबंधन में आसानी होगी। स्वामित्व योजना के तहत डूबन सर्वेक्षण से ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय अधिकार रिकॉर्ड तैयार किए गए हैं। नक्शा कार्यक्रम के तहत प्रदेश के 10 शहरी निकायों में शहरी भूमि रिकॉर्ड तैयार किए जा रहे हैं। इनमें अंबेडकर नगर का डाला, बाराबंकी का नवाबगंज, बुलंदशहर का अनुपशहर, चित्रकूट, गोरखपुर, हरदोई, झांसी, मिर्जापुर का चुनार, पल्लीवाड़ा का पूनपुर, शाहजहाँपुर का तिलहर शामिल हैं।

शाह टाइम्स
क्लासीफाईड्स
Sale

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना
खोई हुई मरदाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें वा फोन करें।
कालीजाना, उमराओ-UP

हाशमी देवाखाना
9997461320, 8272800800

Cipzer
HEALTHY WITH CARE
जॉन्डिस क्योर लिबर का जिगरी दोस्त
गुरु की कमी, परबन्गी जॉन्डिस, कोटी लीवर, एल्कोहलिक लीवर डिजीज, वाई से लहने की लाकल देता है ताकि
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

काम कोर्स उदास क्यों?
अधिक तालुई, हैटअपेज पाक, शीघ्रप्रतन, गुप्तसकता, बचन की गुलामिच से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इंटरनेशनल
08899787114
09808917010

वैधानिक सूरणा
पदकों को सुवर्ण रिच क्लर है कि इन अनुभव में प्रकाशित होने वाले सभी विचारों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि किसी भी विचार पर कोई कार्यवाही या कार्य करता है या कोई बचन देता है, तो ऐसा वह व्यक्ति, बुद्धि वगैरह पर करने, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई कर्मचारी विचारप्रणय या उसके किसी उपकरण या सेवा से किये गए किसी ऐसे को सम्पूर्ण का आश्वासन नहीं दे रहा ऐसे विचारों विचार करके किसी व्यक्ति को हूई नहीं, हीन परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

निगम का प्लान: 2028 तक कूड़े के पहाड़ों का हो जाएगा सफाया

शाह टाइम्स संवाददाता
नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम ने दिल्ली सरकार को कूड़ा निस्तारण के लिए जो कार्ययोजना जमा की है उसके अनुसार दिल्ली में जितना कूड़ा उत्पन्न होगा उसको निस्तारण की क्षमता उससे ज्यादा हो जाएगी।

२०२८ तक दिल्ली में प्रतिदिन १३२२९ टन कूड़ा उत्पन्न होने का अनुमान है। बिजली बनाने के प्लांट ओखला और तेहखंड के विस्तार, गाजीपुर में नए प्लांट और ५०० टन प्रतिदिन की क्षमता के चार बायोगैस प्लांट बनने से कूड़ा निस्तारण की क्षमता १४००० टन प्रतिदिन हो जाएगी। फिलहाल दिल्ली में ११३०० टन प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले

कूड़े में से ८०१० टन प्रतिदिन ही निस्तारित हो पा रहा है जबकि शेष तीन हजार टन प्रतिदिन के करीब लैंडफिल पर डाला जा रहा है। अब एमसीडी की स्थायी समिति का भी गठन होने जा रहा है तो अब कूड़ा निस्तारण से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं में मंजूरी में भी देरी नहीं होगी। निगम की योजना है कि वर्तमान ओखला के कूड़े से बिजली बनाने के संयंत्र से १५५० टन प्रतिदिन कूड़ा निस्तारण होता है। निगम इसकी क्षमता एक हजार टन प्रतिदिन बढ़ाने पर काम कर रहा है। निगम की योजना है कि ३१ मार्च २०२७ तक इस कार्य को पूरा कर लिया जाए। इसी तरह तेहखंड के कूड़े से बिजली बनाने के संयंत्र की क्षमता एक

हजार टन प्रतिदिन दिसंबर २०२७ तक बढ़ जाएगी। गाजीपुर में भी २००० टन प्रतिदिन कूड़ा निस्तारण के लिए कूड़े से बिजली बनाने का संयंत्र दिसंबर २०२८ तक पूरा करने पर निगम कार्य कर रहा है। इससे सीधे तौर पर चार हजार टन प्रतिदिन की क्षमता को कूड़े से बिजली बनाने के संयंत्रों से बढ़ जाएगा। जबकि ५०० टन प्रतिदिन की क्षमता के चार बायोगैस संयंत्र स्थापित किए जाने की योजना भी २०२७ तक के आखिर तक की है। इससे २००० टन कूड़ा निस्तारित हो जाएगा। उल्लेखनीय है कि निगम ने लक्ष्य रखा है दिसंबर २०२८ तक तीनों कूड़े के पहाड़ों को पूरी तरह खत्म करके उस क्षेत्र को हरा भरा विकसित कर दिया जाए।

त्रिलोकपुरी मेट्रो स्टेशन पर लगी आग दमकलकर्मियों ने पाया काबू

शाह टाइम्स संवाददाता
नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो की पिंक लाइन पर ट्रेन सेवाएं सोमवार को कुछ समय के लिए बाधित रही। डीएमआरसी के मुताबिक, त्रिलोक पुरी-संजय लोक मेट्रो स्टेशन के एक कमरे में आग लगने और धुआं निकलने के कारण मजलिस पार्क से शिव विहार रूट पर ट्रेन सेवाएं सुबह ११:२० बजे से कुछ समय के लिए प्रभावित रही। डीएमआरसी के मुताबिक, धुआं निकलने के कारण से स्टेशन पर सिग्नलिंग/एएफसी सिस्टम में गड़बड़ी उत्पन्न हुई, जिसके कारण ट्रेनों को निम्न तरीके से संचालित किया गया। त्रिलोकपुरी-संजय लोक स्टेशन पर दोनों दिशाओं से आने वाली ट्रेनें फिलहाल सिग्नलिंग न मिल पाने के कारण २५ किलोमीटर प्रति घंटे की सीमित गति से चल रही हैं। पिंक लाइन के बाकी हिस्सों पर ट्रेन सेवाएं सामान्य रूप से चल रही हैं। यात्रियों को ट्रेन सेवाओं के बारे में अपडेट करने के लिए स्टेशन परिसर और ट्रेनों के अंदर लगातार घोषणाएं की जा रही हैं। डीएमआरसी के मुताबिक, दिल्ली अग्निशमन सेवा कर्मियों की मदद से धुआं पर काबू पा लिया गया।

मोदी सरकार जन-आधारित व पारदर्शी शासन की प्रतीक: जगत प्रकाश नड्डा

शाह टाइम्स संवाददाता
नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्प से सिद्धि के गौरवशाली ११ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार जन-आधारित और पारदर्शी शासन की प्रतीक है, जिसने बीते ११ वर्षों में भविष्यदृष्टि से आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव रखी है। यही कारण है कि 'विक, सित भारत' और 'अमृतकाल' को हम जमीन पर उतरते हुए देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले ११ वर्षों में भारत ने गरीब और जन कल्याण के अभूतपूर्व परिवर्तन देखे हैं। उन्होंने बताया कि यह सरकार रैस्पॉसिव, रैस्पॉसिबल, अकाउंटेबल, ट्रांसपेरेंट, करणान-फ्री गवर्नमेंट है। यह रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म की अवधारणा को चरितार्थ करने वाली गवर्नमेंट है। उन्होंने कहा कि ११ वर्ष पहले देश तुष्टिकरण और विभाजन की राजनीति में डूबा था, लेकिन मोदी के नेतृत्व में अब पॉलिटिक्स ऑफ परफॉर्मंस, जवाबदेही और रिपोर्ट कार्ड वाली राजनीतिक संस्कृति स्थापित हुई है जो अब न्यू नॉर्मल, न्यू ऑर्डर बन चुकी है।आज भारत का आम नागरिक कहता है कि मोदी हैं तो मुमकिन है। मोदी के प्रति यह धारणा बन चुकी है कि वे समस्याओं का समाधान करेंगे। यह आम नागरिक की सोच बन गई है।

नड्डा ने कहा कि राष्ट्रहित में मोदी सरकार ने हमेशा ही साहसिक और ऐतिहासिक फैसले लिए हैं, अनुच्छेद ३७० को हटाना, तीन तलाक को खत्म करना, नया वक्फ कानून और सीएए लागू करना तथा विधायी निकायों में महिलाओं के लिए ३३ प्रतिशत आरक्षण इसके उदाहरण हैं।

आतंकवाद के खिलाफ भारत की रणनीति में अब निर्णायकता और आक्रामकता एक 'न्यू नॉर्मल' बन गई है। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के बाद ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद के खिलाफ भारत की निर्णायक छवि को दुनिया में स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि पिछले ११ वर्षों में मोदी सरकार ने एमसी-एसटी-ओबीसी समेत समाज के सभी वर्गों के सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। महिलाओं को नेतृत्व में लाने के लिए उन्हें सेना, शिक्षा, रोजगार और स्वरोजगार के अवसर दिए हैं। भारत नक्सलवाद के खाल्मे की ओर तेजी से बढ़ रहा है। चाहे आतंकी हमला हो या किसी अन्य प्रकार की सुरक्षा चुनौती, बीते ११ वर्षों में मोदी सरकार ने हर चुनौती का सीधा और निर्णायक जवाब दिया है। यह एक सशक्त, आत्मविश्वासी और जवाबदेह राष्ट्र की पहचान है। भाजपा सिर्फ शरीबी हटाओ का नारा नहीं देती, बल्कि गरीबों का कल्याण करके दिखाती है। उन्होंने बताया कि स्वच्छ भारत अभियान केवल शौचालय निर्माण तक सीमित नहीं, बल्कि स्वास्थ्य सुधार में भी बड़ा योगदान दिया है।

कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री की अध्यक्षता में महापौर से की भेंट

शाह टाइम्स संवाददाता
नई दिल्ली। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के.शिवकुमार की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधिमंडल ने आज दिल्ली के महापौर राजा इकबाल सिंह से दिल्ली नगर निगम के मुख्यालय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविक सेंटर में मुलाकात की। कर्नाटक के प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात का मुख्य उद्देश्य दिल्ली नगर निगम द्वारा ठोस कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में अपनाए जा रहे उपगमों का अध्ययन करना,मास्टर प्लान २०४१ एवं भवन उपनियमों के ऊपर चर्चा करना था। इस अवसर पर निगमायुक्त श्री अश्वनी कुमार, अतिरिक्त आयुक्त एंजल भाटी सहित दिल्ली नगर निगम एवं कर्नाटक के वरिष्ठ अधिकारीगण

भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर दिल्ली के महापौर सरदार राजा इकबाल सिंह ने कहा कि कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री श्री डी. के. शिवकुमार की अध्यक्षता वाले प्रतिनिधिमंडल से आज निगम मुख्यालय में वातां हुई। उन्होंने कहा कि कर्नाटक का प्रति. निधिमंडल मास्टरप्लान २०४१, भवन उपनियमों एवं ठोस कचरा प्रबंधन के बारे में दिल्ली नगर निगम द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में जानना चाहता था। माननीय महापौर ने कहा कि यह दिल्ली नगर निगम के लिए एक गर्व का क्षण है कि ठोस कचरा प्रबंधन एवं लीगेंसी कचरे के निस्तारण के हमारे मॉडल को अन्य राज्यों में भी अपनाया जाएगा। कर्नाटक के माननीय उपमुख्यमंत्री डी. के. शिवकुमार ने

कहा कि दिल्ली एक ऐतिहासिक एवं विशाल शहर है जिसकी जनसंख्या बेंगलुरु से काफी अधिक है। उन्होंने कहा कि हम मुख्यतः तीन बिंदुओं पर दिल्ली नगर निगम द्वारा किए जा रहे कार्यों का अध्ययन करने आए हैं, ठोस कचरे का प्रबंधन,नगर नियोजन एवं भवन उपनियम। उपमुख्यमंत्री महोदय ने कहा कि हमने आज दिल्ली के मास्टर प्लान २०४१ के ऊपर एवं कचरे के एकत्रीकरण एवं निस्तारण पर दिल्ली नगर निगम की प्रस्तुति देखी। उन्होंने कहा कि हम आज ओखला लैंडफिल साइट पर जाकर लीगेंसी कचरे के निस्तारण के कार्य को देखेंगे एवं दिल्ली नगर निगम द्वारा जल्द ही आरम्भ किए जाने वाले बायोगैस संयंत्रों के बारे में भी जानेंगे।

के लिए बाइक चुराई थी। दिल्ली के पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त अभिषेक धानिया ने बताया कि पूर्वी जिले में संगठित अपराध के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति के अनुसरण में गाजीपुर थाने द्वारा आपराधिक गतिविधियों को खत्म करने और सादाधिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी बीच चोरी की बाइक के संबंध में गाजीपुर थाने में दो

तीन रॉबर गिरफ्तार
नई दिल्ली। दिल्ली के उत्तरी पूर्वी जिला पुलिस की वेलकम थाने की टीम ने पशु चिकित्सा के साथ हुई रॉबरी के मामले को सुलझाकर तीन रॉबर को गिरफ्तार किया है।पुलिस ने उनके पास से रॉब हुई नकदी में से ३७,०००/- बरामद किए हैं। दिल्ली के उत्तर पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त आरोध मिश्रा ने बताया कि ७ जून को सुबह लगभग ०७:०० बजे वेलकम थाने को जाफराबाद मेट्रो स्टेशन के पास एक लड़के के साथ हुई रॉबरी की सूचना मिली। मौके पर पहुंचने पर, पुलिस को शिकायतकर्ता ने बताया कि वह अपने पशुओं को बेचने के लिए जाफराबाद आया था। जब वह मेट्रो स्टेशन के पास था, तो चार अज्ञात व्यक्तियों ने उस पर हमला किया और उसका बैग लूट लिया जिसमें ४९,२००/- रुपए थे और फिर मौके से भाग गए। इसके बाद वेलकम थाने के रहत मामला दर्ज कर एसीपी भजनपुरा विवेक त्यागी की देखरेख में एसएचओ वेलकम रुपेश खत्री के नेतृत्व में एसआई योगेश, अमन, एएसआई विशाल, रामवीर, हेड कांस्टेबल हरेंद्र और पुनोत की टीम ने जांच शुरू की। जांच के दौरान टीम ने सीसीटीवी फुटेज और स्थानीय मुखविरों से पता चला कि कुछ ही घंटों में टीम ने रॉबरी में शामिल तीनों आरोपी अदनाम (२०),अमन (१९) और अयान (२०) को गिरफ्तार कर लिया।



दिल्ली नगर निगम मुख्यालय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविक सेंटर में कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के.शिव कुमार महापौर राजा इकबाल सिंह से मुलाकात करते हुए।

पारा 4 4 डिग्री के पार, तीन दिन लू का यलो अलर्ट, बार-बार पानी पीने की सलह

शाह टाइम्स संवाददाता
नई दिल्ली। 12 जून तक के लिए मौसम विभाग ने लू का यलो अलर्ट जारी किया है। ऐसे में लोगों को चिल्ला चलाती गर्मी और लू के थपेड़ों का सामना करना पड़ रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक सोमवार को लोधी रोड, सफ़दरगंज, आयानगर में तापमान ४४ डिग्री सेल्सियस से अधिक दर्ज किया गया। वहीं दिल्ली का वास्तविक अधिकतम तापमान ४३.४ डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जो औसत से ३.४ डिग्री अधिक रहा। इस बीच, मौसम विभाग ने १२ से १४ जून तक बारिश की संभावना बताई है। दोपहर बाद भी तपिश से लोगों को राहत नहीं मिल रही है। स्थिति यह रही कि दोपहर

तीन बजे के बाद भी सड़क पर चल रहे पैदल और बाइक सवार लोगों तपिश के थपेड़ों ने परेशान किया। १२ जून तक तापमान ४४ से ४५ डिग्री तक रहने का अनुमान है। महौी के अंत तक ही दिल्ली में मानसून दस्तक दे सकता है। दिल्ली में लू चलने से तापमान ४४ डिग्री जा लगा ।तेज धूप से लोगों को खासी परेशानी हुई। सड़कों पर सनछा छाया रहा । वायु गुणवत्ता अभी खराब श्रेणी में बनी हुई है। न्युतम तापमान २७.६ डिग्री दर्ज किया गया। दिन का तापमान ४१ डिग्री सेल्सियस रहा। दिन में आसमान साफ रहा। तेज धूप भी छिली रही। एनसीआर के शहरों में भी हवा मध्यम से खराब श्रेणी में चल रही है।

एसीबी के सामने पेश नहीं हुए सिसोदिया

शाह टाइम्स संवाददाता
नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने सोमवार को भ्रष्टाचार निरोधक शाखा के समन का जवाब देते हुए कहा कि वह पहले से निर्धारित कार्यक्रम के कारण पेश नहीं हो सकेंगे। उनके वकील ने इस संबंध में एसीबी को औपचारिक जवाब भेज दिया है। एसीबी ने सिसोदिया को एक मामले में पृष्ठछाछ के लिए तत्काल किया था। दिल्ली सरकार के स्कुलों में क्लासरूम निर्माण में कथित भ्रष्टाचार को लेकर पृष्ठछाछ के लिए भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने सर्वेयर् जैन को छत्र चूकी को एसीबी कार्यालय में बुलाया था। सर्वेयर् जैन एसीबी कार्यालय पहुंचे, जहां उनसे इस मामले में पृष्ठछाछ की गई। वहीं, नौ जून यानी सोमवार को मनीष सिसोदिया को पृष्ठछाछ के लिए बुलाया गया था।

सीबीसी के अनुसार, क्लासरूम के निर्माण की लागत को २४.८६ लाख रुपये प्रति कमरा दिखाया गया, जबकि सामान्य रूप से इसकी निर्माण में पांच लाख रुपये का ही खर्चा आता। सीबीसी की २०२० की रिपोर्ट में सीपीइब्यूडी नियमों, वित्तीय दिशा निर्देशों और टेंडर

प्रक्रिया में अनियमितता की बात भी सामने आई थी। इस रिपोर्ट में कहा गया कि सेमी परामनेट स्ट्रक्चर (एसपीएस) के लिए ८८०० रुपये प्रति वर्ग फुट की लागत ली गई। यह सामान्य से पांच गुना अधिक था। जांच के पाया गया कि २०१५-१६ में स्वीकृत प्रोजेक्ट को जून २०१६ तक पूरा नहीं किया था। इसके लागत १४ फीसदी से ९० फीसदी तक बढ़ गई। आप से जुड़े ३४ टेकेंडरों को अनुचित लाभ पहुंचाने के भी आरोप लगे। भाजपा और कांग्रेस ने इसे जनता के पैसे को लूट का मामला बताया है। मनीष सिसोदिया और सर्वेयर् जैन पहले से ही दूसरे मामलों की जांच का सामना कर रहे हैं। सिसोदिया शराब नीति के मामले में जेल जा चुके हैं। वहीं, जैन मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जमानत पर बाहर हैं।

पिंक लाइन पर देरी से चल रही ट्रेन
नई दिल्ली। डीएमआरसी ने पेंक्स पर पोस्ट साइज़ कर जानकारी देते हुए बताया कि पिंक लाइन पर मेट्रो सेवा प्रभावित है। मजलिस पार्क और शिव विहार के बीच सेवाओं में देरी से चल रही है। लेकिन अन्य सभी लाइनों पर सेवा सामान्य है।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. रामा** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजड़ चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं 109-110, प्रताप भवन, 5, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।

सम्पादक:
एस.एन. रामा
*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
☎011-41509401-2
फैक्स: 011-41509403

मुख्यालय मोबाइल 9720007290
N.N.I.NoDEL.HIN.2002/8501
www.shahatimesnews.com
email:shahatimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित सम्पत्त सम्पादकों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। सम्पत्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

फैसल कुरैशी

भाई मेहरबान

अध्यक्ष: भाईचारा समिति दिल्ली/प्रदेश 9810024415

एक नजर

सात साल की बच्ची से की छेड़छाड़, लोगों ने की पिटाई
शाह टाइम्स संवाददाता
नई दिल्ली। उत्तरी दिल्ली में सात वर्षीय बच्ची से उसके पड़ोसी ने छेड़छाड़ की। २६ वर्षीय आरोपी को स्थानीय लोगों ने पकड़ लिया और उसको पिटाई कर दी। पुलिस उपायुक्त (उत्तर) राजा बंठिया ने बताया कि घटना सुबह उस समय हुई जब बच्ची अपने घर के बाहर खेल रही थी। पीड़िता ने घटना की जानकारी अपने माता-पिता को दी, जिसके बाद उन्होंने आरोपी को पकड़ा। डीसीपी बंठिया ने बताया कि इसके बाद स्थानीय लोगों ने आरोपी को पकड़ लिया और उसकी पिटाई कर दी। डीसीपी ने बताया कि पीड़िता का मेडिकल परीक्षण कराया जा रहा है और मामला दर्ज कर लिया गया है। उसी इलाके का रहने वाला आरोपी फिलहाल स्थानीय अस्पताल में अपनी चोटों के लिए इलाज कर रहा है।

ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन पर आग लगने से दो की मौत
नई दिल्ली। दिलशाद गाडन इलाके में ग्राउंड फ्लोर पर ई-रिक्शा चार्जिंग पॉइंट में आग लग गई। आग लगने से दो ई-रिक्शा और एक बाइक में चपट में आ गई। इस हादसे में दो व्यक्ति बलस गए और उन्हें एम्बुलेंस से जीटीबी अस्पताल ले जाया गया। जहां ड्यूटी पर मौजूद डॉ. कविता ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। प्रभारी एएसआई कृपाल थाना नंद नगरी को सौंप दिया गया।

झुग्गी वासियों के समर्थन में जंतर मंतर पर 29 से प्रदर्शन करेगी आप

नई दिल्ली। दिल्ली के अलग-अलग जगहों की झुगियों पर हर रही तोड़फोड़ के विरोध में आम आदमी पार्टी २९ जून को जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन करेगी। पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा वह अलग-अलग इलाकों में झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोगों से मुलाकात कर रहे हैं। सौरभ ने आदर्श नगर विधानसभा और मॉडल टाउन विधानसभा में स्थित झुग्गी बस्ती इलाकों में रहने वाले लोगों के साथ बैठक की। इस दौरान झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों ने सौरभ भारद्वाज के समक्ष अपनी समस्याओं को रखा। उन्होंने कहा, लोग डर के साए में जी रहे हैं, न जाने कब दिल्ली सरकार उनकी झुगियों को भी उजाड़ दे। इन झुग्गी बस्तियों में गरीब मजदूर झारखंड, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु सहित अन्य राज्यों से आकर लोग रहते हैं। अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाने, सम्मानजनक जर्दियों देने और दो वक्त की रोटी का इंतजाम करने के लिए मेहनत मजदूरी करते हैं। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली के अलग-अलग जगहों पर हुई बैठकों के माध्यम से भाजपा की दिल्ली सरकार के खिलाफ २९ जून को एक बड़े आंदोलन की शुरुआत करेगी। उन्होंने कहा कि २९ जून को जंतर मंतर पर एकत्रित होंगे और केंद्र सरकार से इस संबंध में उचित कदम उठाने की अपील करेंगे।

भाजपा राज में सुरक्षित नहीं बेटियां: देवेन्द्र यादव
नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेट्री के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने दिल्ली की बिगडौल कानून व्यवस्था के लिए भाजपा की डबल इंजन की सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि भाजपा का राज में दिल्ली की बेटियां असुरक्षित हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि महिलाओं से यौन उत्पीड़न और अपभ व्यवहार करने वालों पर कोई कार्रवाई तक नहीं होती है, ऐसे में ९ साल की नाबालिंग के परिवार को कौन न्याय दिलाएगा, जिसका दुष्कर्म और हत्या करके नेहरू विहार दयाल पुर में हैवान उसे सूटकेस में बंद करके ठिकाने लगाने जा रहा था। यादव ने कहा कि कांग्रेस मांग करती है कि ९ साल बेटों के साथ दुष्कर्म करके उसकी हत्या करने वाले सीधियों के खिलाफ प्रखंड से सख्त कार्रवाई की जाए। क्या इस घटना पर दिल्ली की महिला मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की चुप्पी दिल्ली की महिलाओं के साथ अन्याय नहीं है।

ओडिशा व आंध्र प्रदेश से गांजा की दिल्ली में सप्लाई, तीन पकड़े

नई दिल्ली। ओडिशा और आंध्र प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों से गांजा लाकर दिल्ली समेत अन्य शहरों में सप्लाई करने वाले एक अंतर्राज्यीय ड्रग्स तस्कर गैंग का बाहरी जिला की एंटी-नारकोटिक्स सेल ने पर्दाफाश किया है। उनके तीन तस्करों को हरियाणा विशाखापटनम से गिरफ्तार किया। तीनों के कब्जे से ५२ किलोग्राम गांजा बरामद किया है। पुलिस आरोपियों से उनके नेटवर्क के बारे में जानकारी लेने की कोशिश कर रही है।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि एंटी-नारकोटिक्स सेल ने एक पुख्ता जानकारी के बाद पश्चिम विहार पश्चिम इलाके में स्थित कृत्रिय गोंदाम में छापेमारी करके ५२ किलोग्राम गांजा जब्त किया था। एसीपी नरेंद्र खत्री की देखरेख में इंसपेक्टर रितेश के निर्देशन में पुलिस टीम ने तकनीकी निगरानी और छुपेन सॉर्स की सहायता से हरियाणा से पटना के रहने वाले धनंजय कुमार को गिरफ्तार किया। उसकी निशानदेही पर उसके दो साथी प्रदुमन रे और संतोष कुमार को विशाखापनम से गिरफ्तार किया। पृष्ठछाछ करने पर आरोपियों से पता चला कि वे ओडिशा और आंध्र प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में सीमा के सीपिंग में लगे हुए थे, जहाँ से तस्करों का सामान एकत्र किया जाता था, पैक किया जाता था और फिर सप्लाई के लिए दिल्ली ले जाया जाता था। तीनों आरोपियों पर पहले भी केस दर्ज हैं।

अवैध रूप से रह रहे 66 बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार
नई दिल्ली। सुरक्षा एजेंसियों से बचने के लिये भारत में रहने वाले बांग्लादेशी खुफ को किसी न किसी काम में लगे हुए हैं। जिनको तलाशने के लिये एजेंसियां छुपेन सॉर्स की सहायता से इनको पकड़ने की कोशिश कर रही है। उत्तरी पश्चिम जिला की विदेशी प्रकोष्ठ की पुलिस टीम ने एक बार फिर से ३१ परिवारों के ६६ बांग्लादेशी सदस्यों को पकड़ा है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि एसीपी रंजीव कुमार की देखरेख में इंसपेक्टर विपिन कुमार के निर्देशन में पुलिस टीम पहले रजनी बांग्लादेशियों को पकड़ चुकी है। जिनसे पृष्ठछाछ करके और अपने छुपेन सॉर्स की सहायता से पुलिस टीम ने भारत नगर और महेंद्र पार्क इलाके से ६६ बांग्लादेशियों को गिरफ्तार किया है। ये लोग बांग्लादेशी से अवैध रूप से भारत की सीमा में घुसकर बस,ट्रेनों आदि से अनेक शहरों में घुसे हैं। पकड़े गए बांग्लादेशी हरियाणा में मजदूरी आदि करके घनो आबादी वाले इलाकों में बसना शुरू कर दिया था। सभी ११ परिवार पहले हरियाणा के रूह (पूर्व में मेवात) के गांव ताइन में स्थित ईट भट्टों (घ३1) में मजदूर के रूप में काम कर रहे थे। हरियाणा में इनके खिलाफ सच ऑपरेशन चला तो ये लोग दिल्ली के इलाके में छिपकर रहने लगे। पुलिस टीम ने इनके घरों में पता करने के लिये डोर टूट वॉरिफिकेशन,माकिट एसीसिएशनों व आरडब्ल्यूए से मोटिंग करके और फुटपाथ पर रहने वाले लोगों से संपर्क किया। जिसके बाद इनको पकड़ा। ऑपरेशन के परिणामस्वरूप वजीरपुर जैक कालिनी से ३५ अवैध बांग्लादेशी अप्रवासी पकड़े गए। एनएस मंडी क्षेत्र से ३१ अवैध बांग्लादेशी अप्रवासी पकड़े गए। इस दौरान २० पुरुष, १६ महिलाएं और ३० बच्चों सहित कुल ६६ अवैध विदेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया। उन्होंने पहचान से बचने और मोबाइल निगरानी के माध्यम से ट्रैकिंग को रोकने के लिए जानबूझकर अपने मोबाइल फोन और सभी प्रकार के बांग्लादेशी पहचान दस्तावेजों को छिपाया।

भीषण गर्मी से आम जनजीवन हुआ अस्त-व्यस्त

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। शामली में पड़ रही भीषण गर्मी ने आम जनजीवन के साथ-साथ कारोबार को भी बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। तेज धूप और लू के थपेड़ों ने लोगों को घरों में कैद कर दिया है, जिससे बाजारों में सन्नाटा पसरा हुआ है। गर्मी का असर कपड़ों की दुकानों से लेकर खानपान के व्यवसाय तक साफ देखा जा सकता है।

सोमवार को मौसम का अधि. कतम तापमान 41 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। तापमान बढ़ने से लगने लगा है कि दोपहर के समय तो जैसे आसमान से आग बरस रही हो। तेज गर्म हवाओं के चलते लोग जरूरी कार्यों को भी टालने लगे हैं। खासकर दोपहर के समय सड़कों पर सन्नाटा छा जाता है। दुपहिया वाहनों की बिक्री पर इसका खासा असर पड़ा है। शौहूम संचालकों वैभव गर्ग, अभिषेक, दिनेश का कहना है कि ग्राहक आ ही नहीं रहे, जिससे बिक्री में भारी गिरावट आई है। व्यापारियों का कहना है कि अगर यही स्थिति बनी रही तो आने वाले दिनों में आर्थिक नुकसान और बढ़ सकता है। वहीं आम लोग भी इस झुलसाती गर्मी से बेहद परेशान हैं और मानसून के जल्दी आने की दुआ कर रहे हैं। गर्मी के कारण स्वास्थ्य समस्याएं भी बढ़ रही हैं। स्थानीय अस्पतालों में उल्टी-दस्त, डोहाड़इशान और हीट स्ट्रोक के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। डॉक्टरों के अनुसार, अत्यधिक तापमान और शरीर में पानी की कमी इसके मुख्य कारण हैं। चिकित्सकों ने



लोगों को दिन के समय घर से बाहर निकलने से बचने और अधिक से अधिक पानी पीने की सलाह दी है।

मीठे शरबत का वितरण

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। भीषण गर्मी का प्रकोप बढ़ने से समाजसेवी संगठनों द्वारा सोमवार को मीठे पानी की छबील लगाकर लोगों को शरबत का वितरण किया गया। सोमवार को शहर के झिंझाना रोड पर प्रमुख समाजसेवी व वीवी इटर कालेज के प्रबंधक संजय संगल द्वारा भीषण गर्मी में लोगों को राहत देने के लिए ठंडे पानी की

छबील लगाई। इस दौरान उनके द्वारा आने जाने वाले राहगीरों को शरबत वितरित किया गया। जिससे लोगों की भीषण गर्मी में प्यास बुझ सकी। इस अवसर पर डा। अनुराग शर्मा, मनोज शर्मा, मुरतपा, सागर गर्ग, आयुष संगल, विकास गर्ग, नीरज संगल, वाहिद, सुमैर, शिवम शर्मा आदि मौजूद रहे।

संगम ने भीषण गर्मी के मौके पर ठंडा पानी की व्यवस्था की 7 दिन के लिए
शाह टाइम्स संवाददाता शामली। भारतीय विद्यार्थी संगम शामली द्वारा आयोजित भीषण



गर्मी के मौके पर ठंडा पानी की व्यवस्था की जा रही है जिसका शुभारंभ संरक्षक मुकेश गर्ग एडवोकेट, सुरेंद्र कुमार बंसल द्वारा संयुक्त रूप से किया। उन्होंने कहा कि संगम बड़ा सराहनीय कार्य कर रही है जिसमें भीषण गर्मी के मौके पर सभी ठंडा जल सात दिनों तक पी सके। जिससे उनको गर्मी से राहत मिले। हम सभी हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं। आगे भी अगर जरूरत पड़ी ठंडे पानी की व्यवस्था रहेगी। स्थान पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर राजीव बंसल

लाख वालों का घेर पर की गई है। इस अवसर पर अध्यक्ष अनुराग जैन, सचिव मनीष भटनागर, कोषाध्यक्ष वैभव संगल, रामनिवास सैनी, विनोद मित्तल, दिव्या भुषाकर, ऋषभ जैन, रवि संगल, मनोज मित्तल, अजय गर्ग आदि रहे।

भीषण गर्मी में बिजली संकट, ट्रांसफार्मर फूंकने से ग्रामीण परेशान
शाह टाइम्स संवाददाता गढ़ीपुछा। जनपद शामली के

महिलाएं व छात्राएं खुलकर करें अपनी बात: डॉ. हिमानी अग्रवाल

शाह टाइम्स संवाददाता मेरठ। महिला आयोग आपके द्वार कार्यक्रम के अंतर्गत उ.प्र. राज्य महिला आयोग की सदस्या डॉ. हिमानी अग्रवाल मवाना में जाट कॉलेज के पीछे मोहल्ला मुन्ना लाल में पीड़िता से उसके आवास पर मिलने पहुंची। बता दें कि मोहल्ला मुन्ना लाल निवासी महिला ने रविवार को डॉ. हिमानी अग्रवाल को प्रार्थना पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगाते हुए कहा कि उसके घर के पास एक खंडरनुमा मकान में मौहल्ले के रहने वाले शराबी आये दिन शराब पीते हैं और जुआ खेलते हैं। जिस कारण बेटी का स्कूल जाना बंद हो गया है, पीड़िता ने बताया कि उसकी बूढ़ी बेटी ने भी 2023 उसकी छेड़छाड़ के कारण स्कूल जाना बंद कर दिया था, इस संबंध में पुलिस से



शिकायत की गई, लेकिन कोई भी कार्रवाई नहीं होने के आरोपियों को हौसले दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। हिमानी अग्रवाल ने पीड़ित महिला को आश्वासन दिया कि बेटी को पढ़ने के लिए भेजे। उनके खिलाफ पुलिस सख्त कार्रवाई करेगी।



झिंझाना। घायल युवक व मौके पर आकर पुलिस पार्टी जांच करती हुई।



छाया शाह टाइम्स

रुपयों के लेनदेन को संघर्ष, तीन घायल

शाह टाइम्स संवाददाता झिंझाना। कस्बे के मोहल्ला शाहमुबारिक में दो पक्षों में रुपये के लेन देन को लेकर लाठी डंडों के साथ धरदार हथियार चले, जिसमें एक पक्ष के तीन लोग घायल हो गए। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस के आने से पहले ही हमलावर फरार हो गए। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की तहरीर के आधार पर आठ लोग नामजद व कुछ अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

रविवार की देर शाम दो पक्षों में रुपये के लेनदेन पर संघर्ष हो गया था। नफीसा पुत्र हाजी नजीर ने बताया कि देर रात्रि में मेरे मामा का लडका दानिश उर्फ काला पुत्र शहीद निवासी मौ. शाहमुबारिक अपने भैंसों के व्यापार के उधार के तीन लाख रुपये लेने के लिए जरीफ पुत्र बजीर निवासी मोहल्ला शाहमुबारिक से उसके घर में गया था। जब दानिश के द्वारा जरीफ से अपने उधार के रुपये मांगे तो आपस में कहा सुनी हो गई, जिसमें दानिश अपने घर पर वापस आ गया।

पीड़ित का आरोप है कि कुछ समय पश्चात जरीफ, अमन, अन्सार, सूफियान, शाहबेज समस्त

निवासीगण मोहल्ला शाहमुबारिक अपने रिश्तेदारों समीर, सुहेल, ताबू समस्त निवासीगण छिड़ियांन कैराना व अन्य अज्ञात व्यक्तियों के साथ हाथों में लाठी डंडे गंडासों से लैस होकर घर पर आए तो सभी के द्वारा हम सभी को गाली गलौज करते हुए जान से मारने की नियत से मारपीट

करना शुरू कर दी। मारपीट के दौरान दानिश, सरफराज, शान को गम्भीर चोट आई। जिनका इलाज सरकारी अस्पताल ऊन में कराया गया, जहां से दानिश की हालत चिंताजनक होने पर जिला अस्पताल शामली को रेफर कर दिया गया। पीड़ित पक्ष

के नफीस ने थाने में आठ नामजद सहित कुछ अज्ञात के खिलाफ तहरीर दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर कार्यवाही शुरू कर दी है। वहीं पुलिस ने एक आरोपी समीर को गिरफ्तार कर जेल भेजा है।

उर्वरक के साथ ट्रेनिंग पर होगी कठोर कार्यवाही जिला कृषि अधिकारी शामली

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। यदि किसी उर्वरक विक्रेता द्वारा उर्वरकों की खरीद यथा यूरिया, डी.ए.पी. व अन्य उर्वरकों के साथ जबरेन किसी पेस्टीसाइड उर्वरक व अन्य किसी उत्पाद की ट्रेनिंग की जाती है अथवा उसके विरुद्ध ट्रेनिंग के साथ सलफर भी मिल सके तथा खरीदी की फसलों की बुवाई में डी.ए.पी. की तुलना में एन.पी. के. का प्रयोग अधिक करें जिससे फसल को नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की उपलब्धता हो सके। जनपद के सभी उर्वरक विक्रेताओं को उर्वरक बिक्री पर अनिवार्य रूप से कैंस मैमो देने व पी.ओ.एस. मशीन से उर्वरक बिक्री के साथ-साथ स्टॉक रिजिस्टर को अपडेट रखने के निर्देश दिए गए हैं एन.पी.के. की कृषकों को पी.ओ.एस. मशीन से उनकी जित के अनुसार उर्वरक देने हेतु निर्देशित किया गया। कृषकों भाई को जागरूक करें कि वह सन्तुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें और अनावश्यक रूप से किसी भी प्रकार के उर्वरकों का भण्डारण न करें।

किसान भाई एस.एस.पी. का प्रयोग अन्य उर्वरकों की तुलना में अधिक करें जिससे भूमि को अन्य तत्वों के साथ सलफर भी मिल सके तथा खरीदी की फसलों की बुवाई में डी.ए.पी. की तुलना में एन.पी. के. का प्रयोग अधिक करें जिससे फसल को नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की उपलब्धता हो सके। जनपद के सभी उर्वरक विक्रेताओं को उर्वरक बिक्री पर अनिवार्य रूप से कैंस मैमो देने व पी.ओ.एस. मशीन से उर्वरक बिक्री के साथ-साथ स्टॉक रिजिस्टर को अपडेट रखने के निर्देश दिए गए हैं एन.पी.के. की कृषकों को पी.ओ.एस. मशीन से उनकी जित के अनुसार उर्वरक देने हेतु निर्देशित किया गया। कृषकों भाई को जागरूक करें कि वह सन्तुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें और अनावश्यक रूप से किसी भी प्रकार के उर्वरकों का भण्डारण न करें।

तीनों तहसीलों में 112 शिकायतों में से 12 का मौके पर निस्तारण



शाह टाइम्स संवाददाता शामली। सोमवार को जिले की तीनों तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त 112 शिकायतों में से मात्र 12 शिकायतों का ही मौके पर पर निस्तारण किया जा सका है। कैराना तहसील में फरयादियों की शिकायतें सुनें हुए डीएम एसपी ने प्रमुखता के आधार पर फरयादियों की समस्याओं का निस्तारण करने के निर्देश दिए हैं। डीएम ने चेतावनी दी कि यदि लाप. रवाही मिलती है तो कार्यवाही की जाएगी।

सोमवार को कैराना तहसील में डीएम अरविन्द कुमार चौहान की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। डीएम ने फरयादियों की शिकायतों को सुनें हुए सभी विभागीय अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुए जनसमस्याओं का समय से गुणवत्तापरक निस्तारण करने के निर्देश दिए। साथ ही चेता. बनी दी कि यदि जन शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही बरती जाती है तो उसको बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। डीएम के समक्ष 39 शिकायतों पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से मात्र 6 शिकायतों का निस्तारण हो सका। मौके पर एसपी रामसेवक गौतम, एसडीएम कैराना



निधि भारद्वाज, जिला विकास अधिकारी सत्यराम यादव, पीडी डीआरडीएम प्रेम चन्द आदि मौजूद रहे। इसके अलावा तहसील शामली में सीडीओ विनय कुमार तिवारी की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। उनके समक्ष 42 शिकायतें आईं, जिनमें से मात्र 5 शिकायतों का मौके पर निस्तारण कर दिया गया। इस अवसर पर तहसीलदार शामली प्रियंका जायसवाल मौजूद रहे। तहसील ऊन में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन एडीएम सत्यन्तर सिंह की अध्यक्षता में हुआ। जिनके समक्ष 31 शिकायतें आईं और मात्र एक शिकायत का मौके पर निस्तारण हो सका। इस अवसर पर एसडीएम ऊन संदीप त्रिपाठी मौजूद रहे।

जैन समाज के शमशान घाट का रास्ता बनवाने व हैंड पम्प लगवाए जाने की मांग की

शाह टाइम्स संवाददाता कैराना। सभासद ने जैन समाज के शमशान घाट पर पक्का रास्ता बनवाए जाने व पेयजल सुविधा स्थापित कराए जाने की मांग की है। सोमवार को पालिका सभासद शुगन मित्तल ने तहसील दिवस में पहुंचकर एक मांग पत्र देते हुए खुरगान रोड बाईपास पर स्थित जैन समाज के पर पक्का रास्ता बनवाए जाने व पेयजल की व्यवस्था कराए जाने की मांग की है। उन्होंने बताया कि शमशान घाट का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है, लेकिन वहां पर अभी तक शमशान घाट में जाने के लिए पक्का रास्ता है और न ही पेयजल की कोई सुविधा नहीं है। सभासद ने इस संबंध में जिलाधिकारी से प्रार्थना की है कि शमशान घाट का रास्ता पक्का और उसके समीप एक सरकारी हैंड पंप लगाने की कृपा करें। उनका कहना है कि शमशान घाट पर जल संकट के चलते वहां पर काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उनका कहना है कि यह पंप न केवल जैन समाज के लिए, बल्कि अन्य समुदायों के लिए भी अत्यंत आवश्यक है, ताकि अंतिम संस्कार के समय में पानी की कमी न हो और जनसमुदाय को कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

एक नजर

सतलोक आश्रम में तीन दिवसीय अमरवाणी का अखंड पाठ शुरू



शाह टाइम्स संवाददाता झिंझाना। सतलोक आश्रम में आयोजित तीन कबीर साहेब प्रकट दिवस के उपलक्ष्य में पहले दिन विशाल भंडारे के साथ संत गरीबास महाराज की अमरवाणी का अखंड पाठ का शुभारंभ हुआ। सोमवार को समागम में अमरवाणी में बताया गया कि आज से 628 वर्ष पूर्व सर्व सृष्टि के रचनहार परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने सतलोक से सशरीर शिष्य रूप में काशी लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर संवत् 1455 सन् 1398 ज्यष्ठ मास की पूर्णमासी को प्रकट हुए थे। कबीर साहेब प्रकट दिवस के उपलक्ष्य में जगतगुरु तत्त्वदर्शी संत रामपाल महाराज के साल्थ्य में वेदखेड़ी स्थित सतलोक आश्रम में विशाल भंडारा शुरू किया गया। सतलोक आश्रम में प्रदेश के लगभग के 75 जिलों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। प्रवेश कोर्डिनेटर हरदेश दास ने बताया कि इस महा समागम में संत गरीबास महाराज की अमरवाणी का अखंड पाठ, दहेज मुक्त विवाह, आध्यात्मिक प्रदर्शनी, रक्तदान शिविर व विशाल भंडारे का आयोजन होगा। भंडारा शुद्ध देसी धी द्वारा निर्मित भंडारा है जिसमें लड्डू, जलेबी, बर्फी, पूरी, सब्जी, दाल, चावल, फूलके, सलाद आदि पकवान श्रद्धालुओं को वितरित किया जा रहा है।

सभासदों ने कैराना में नए बिजली घर बनाए जाने की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता कैराना। गर्मी के मौसम में विद्युत संकट से परेशान नागरिकों के लिए पालिका सभासदों ने एक नया बिजली घर बनाने की मांग की है। सोमवार को तहसील सभागाार कक्ष में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में पहुंचे पालिका के आधा दर्जन से अधिक सभासदों ने एसडीएम निधि भारद्वाज को एक मांग पत्र दिया। सभासदों ने मांग पत्र देते हुए बताया है कि नगर में पिछले कई दिनों से ओवरलोडिंग के कारण विद्युत आपूर्ति पूरी तरह से ढूह गई है, जिससे आम जनमानस को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। बिजली संकट ने नागरिकों के दैनिक जीवन को प्रभावित किया है। भयंकर गर्मी के चलते लोग परेशान हैं और बिजली की अनियमित आपूर्ति से स्वास्थ्य पर भी खतरा मंडरा रहा है। इस समस्या का समाधान निकालने के लिए नगर में एक नया बिजली घर बनाने के लिए सरकारी जमीन आवंटित करने की मांग की है। सभासदों ने एसडीएम को बताया कि नगर क्षेत्र में पालिका की कई जगहें ऐसी हैं जहां सरकारी जमीन उपलब्ध है। यदि उस जमीन का सही उपयोग किया जाए, तो नए बिजली घर के निर्माण की प्रक्रिया को जल्दी गति दी जा सकती है। सभासदों ने एसडीएम से आग्रह किया है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए इस प्रकरण को तत्परता से सुलझाया जाए और संबंधित अधिकारी को निर्देशित किया जाए, ताकि राहत प्रदान करने के लिए तुरंत कदम उठाए जा सकें। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से त्वरित कार्रवाई करने की उम्मीद है ताकि उन्हें राहत मिल सके। इस दौरान सभासद शगुन मित्तल, मौलवी फुरकान, तौसीफ चौधरी, राशिद, उम्मेद राणा, पूर्व सभासद मेहरखान अंसारी सहित आदि मौजूद रहे।

जंघेड़ी गौशाला के निरीक्षण पर पहुंचे डीएम, परखी व्यवस्था



शाह टाइम्स संवाददाता कैराना। डीएम अरविंद चौहान ने गांव जंघेड़ी में संचालित गौशाला में पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने गौशाला में मौजूद गोवंशों के लिए हरे चारे एवं पौने के पानी की पर्याप्त व्यवस्था करने के निर्देश दिए हैं। विगत दिनों हिंदुवादी संगठन के कार्यकर्ताओं ने गौशाला में अनियमितता के संगीन आरोप लगाते हुए धरना-प्रदर्शन किया था। सोमवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस के उपरान्त डीएम शामली अरविंद चौहान ब्लॉक क्षेत्र के गांव जंघेड़ी में संचालित गौशाला में पहुंचे। जहां संच. उन्होंने गोवंशों के लिए की गई व्यवस्थाओं का गहनता से निरीक्षण किया। डीएम ने मौके पर मौजूद कैयरटेकर से गोवंशों की संख्या तथा चारे व पानी आदि की व्यवस्था के बारे में जानकारी की। जिलाधिकारी ने भयंकर गर्मी के महेनजर गौशाला में मौजूद गोवंशों के नियमित रूप से नहलाने एवं पौने के पानी की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिए। उन्होंने गौशाला में साफ-सफाई की व्यवस्था भी दुरुस्त रखने को कहा। जंघेड़ी गांव में संच. लित गौशाला में करीब तीस गोवंश बताए गए हैं। इस दौरान एसपी शामली रामसेवक गौतम, एसडीएम निधि भारद्वाज, कोतवाली प्रभारी निरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह आदि मौजूद रहे। विदित रहे कि विगत दिनों हिंदुवादी संगठन के कार्यकर्ताओं ने तहसील मुख्यालय पर पहुंचकर पूरे जनपद में गोवंशों की दुर्दशा के आरोप लगाए थे। उन्होंने धरना-प्रदर्शन करके जंघेड़ी गांव में संच. लित गौशाला से गोवंशों के गायब होने के आरोप भी लगाए थे।

भूमि विवाद में फसल जोतने का आरोप

किठौरी। अमरपुर में जमीन पर कब्जा करने की नीयत से कुछ लोगों ने ट्रैक्टर चलाकर फसल नष्ट कर दी। विरोध करने पर उक्त लोगों ने हमीन मालिक के साथ मारपीट भी की। दीपक त्यागी पुत्र मांगू सिंह निवासी माछरा ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि अमरपुर में उसको व उसके बड़े भाई संजीव की भूमि स्थित है। जिस पर राजेन्द्र, करणवीर पुत्रगण दयाराम, सचिन, संजय सहित दो अज्ञात लोगों ने कब्जा करने की नियत से ट्रैक्टर चला दिया। विरोध करने पर आरोपियों ने दीपक व उसके पुत्र देववत, भाई संजीव के साथ गाली गलौज करते हुए लाठी डंडों से हमला कर दिया। पीड़ित ने पांच को नामजद करते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है।

नहाने गए थे चार दोस्त, लौटे दो, परिवार में मातम

शाह टाइम्स संवाददाता चौसाना। गर्मी से राहत पाने के लिए यमुना नदी में नहाने गए चार दोस्तों की टोली में से दो अब कभी घर नहीं लौटेंगे। ऊदपुर गांव के रहने वाले रहमान (16) और जैद (17) की रविवार को यमुना नदी में डूबने से मौत हो गई। ए हादसा उस समय हुआ जब चारों दोस्त सुबह करीब दस बजे नदी के ठोकर वाले हिस्से में नहा रहे थे। गहरे कुंड में उतरते ही रहमान और जैद पानी में समा गए, जबकि बाकी दो साथियों ने किसी तरह बाहर निकलकर मदद के लिए शोर मचाया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, घटना स्थल यमुना नदी में बनी एक ठोकर के पास का है जहां पानी का बहाव तेज और गहराई अधिक है। जब दोनों किशोर डूबे, तो उनके साथियों ने हिम्मत दिखाते हुए किसी राहगीर से फोन लेकर गांव में सूचना दी। सूचना



मिलते ही नवाजिश व सरकर नामक ग्रामीण तुरंत मौके पर पहुंचे और कड़ी मशक्कत के बाद दोनों युवकों को पानी से बाहर निकाला, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

तीन दिन पहले ही केरल से लौटा था रहमान

रहमान चार भाइयों में सबसे छोटा था। कुछ महीने पहले ही वह केरल गया था जहां फनीचर बनाने का

काम करता था। हादसे से ठीक तीन दिन पहले वह घर लौटा था। पूरे परिवार में उसकी वापसी की खुशी थी, लेकिन अब उसके घर में मातम पसरा है। रहमान का हंसमुख चेहरा अब केवल तस्वीरों में रह गया।

मेहनत-मजदूरी कर परिवार चलाता था जैद
वहीं जैद भी अपने पांच भाई-बहनों में सबसे छोटा था। गांव में

गहरे कुंड में डूबे दो किशोर, गांव में पसरा मातम, पीएम से इंकार



रहकर मेहनत-मजदूरी करता था और परिवार की आर्थिक मदद करता था। पिता पहले ही गुजर चुके हैं। जैद की मौत से परिवार का सहरा छिन गया।

पुलिस पर प्रशासन मौके पर पहुंचे, परिजनों ने किया पीएम से इंकार
घटना की जानकारी मिलते ही

चौसाना चौकी और विडौली थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। थानाध्यक्ष जितेंद्र कुमार, एसडीएम ऊन संदीप त्रिपाठी ने मृतकों के परिजनों से मुलाकात कर सत्वना दी और कानूनी औपचारिकताओं के तहत पोस्टमार्टम की बात कही। लेकिन गम में डूबे परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से

इन्कार कर दिया।

गांव में मातम, लोगों ने की सुरक्षा की मांग
रविवार की यह दोपहर गांव ऊदपुर के लिए काली बनकर आई। दोनों युवकों की मौत से गांव की फिजा ही बदल गई। हर गली में सन्नाटा है और हर आंख नम।

भीषण गर्मी से फसल हो रही हैं नष्ट

शाह टाइम्स संवाददाता किठौर। भीषण गर्मी के चलते किसान की फसल नष्ट हो रही हैं क्योंकि किसानों को देहांत में द्यूबवेले को पहले 18 घंटे तक बिजली मिलती थी लेकिन अब 8 घंटे बिजली मिलने की वजह से किसान को पानी पूर्ति करनी मुश्किल हो रही हैं। ऐसे में किसान सरकारी नाली के पानी के लिए मजबूर है लेकिन नाली की सफाई न होने की वजह से नाली में कबाड़ होने के कारण पानी नहीं मिल रहा है। सीसीएसयू के छात्र नेता शान मुहम्मद ने सिंचाई विभाग के एसडीओ विक्रांत सेनो व जई हेमंत कुमार से नाली सफाई कराने को लेकर शिकायत की है अधिकारियों ने तत्काल नाली सफाई के आदेश दिए। वहीं भीषण गर्मी से किसान जल्द बारिश की दुआ कर रहे हैं।

धागा व्यापारी लूटकांड घटना का खुलासा, दस लाख बरामद



शाह टाइम्स संवाददाता शामली। धागा व्यापारी के मुनीम से लूट की घटना को पूरी योजना बनाकर अंजाम दिया गया था। बदमाशों ने एक वैगनआर व बुलेरो गाड़ी क्रिएर पर लेकर खुद को जीएसटी विभाग का अधिकारी बताकर 25 लाख रुपये की नकदी

लूटी थी। देर रात्रि पुलिस ने मुठभेड़ में जहां दो बदमाशों को गिरफ्तार कर 10 लाख रुपये की नकदी बरामद की है वहीं पुलिस ने गाड़ी को क्रिएर पर देने वाले तीन अन्य लोगों को भी गिरफ्तार किया है।

गत 3 जून को शहर कोतवाली क्षेत्र के सिंभालका बाईपास पर



शामली। घटना के खुलासे के दौरान मौजूद डीएम अरविंद कुमार चौहान व एसपी राम सेवक गौतम। छाया शाह टाइम्स

बदमाशों ने खुद को जीएसटी अधिकारी बताकर धागा व्यापारी के मुनीम अनिल व चालक सतनाम से 25 लाख रुपये की नकदी लूट ली थी। सोमवार को घटना का खुलासा करते हुए एसपी रामसेवक गौतम ने बताया कि देर रात्रि ग्राम जगनपुरा तिराहा के पास चौकिंग के दौरान मुठभेड़ के बाद दो बदमाशों मोहित पुत्र लीत व शुभम उर्फ गौरव पुत्र करतार सिंह निवासीगण ग्राम भंडापुर थाना चांद, निगर जनपद बागपत को गिरफ्तार किया है। दोनों बदमाश पैर में गोली

पांच गिरफ्तार

हत और राहुल के साथ आकर रवि से बुलेरो गाड़ी तथा उसी दिन भंडापुर चांदीनगर बागपत के रहने वाले सागर पुत्र सतीश और शुभम उर्फ गौरव ने अमरजीत से वैगनआर गाड़ी ली थी। इन लोगों द्वारा रवि व अमरजीत से बताया गया कि आज एक बहुत अच्छा काम करना है अगर काम हो गया तो तुम्हें भी ठीक ठाक करिया देंगे।

अभियुक्तों द्वारा बताया कि हम लोग एक हरियाणा वाले धागा व्यापारी के पीछे लगे हुए हैं वो मेरठ से नम्बर 2 का मोटा केश लेकर आता है। जिनके आने की उम्मीद है। बाद में फर्जी नम्बर प्लेट व भारत सरकार का स्टीकर लगाकर रवि व अमरजीत की गाड़ियों से घटना को अंजाम दिया। पकड़े गए बदमाशों को जेल भेज दिया गया है। एसपी ने पुलिस टीम को 25 हजार रुपये का इनाम देने की घोषणा की है।

रिक्त पदों पर होगी चयन की प्रक्रिया

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। जिला पंचायत राज अधिकारी शामली संदीप अग्रवाल ने अवगत कराया कि निदेशक महोदय, पंचायतीराज उ.प्र. के कार्यालय ज्ञाप दिनांक 17 दिसम्बर, 2024 के क्रम में जिलाधिकारी द्वारा प्रदत्त अनुमोदन दिनांक-5.6.2025 के उपरान्त जनपद शामली के विकास खण्डों की 17 ग्राम पंचायतों (वि.ख.-कैराना की ग्राम पंचायत-गोगावा, विकास खण्ड-कांथला की ग्राम पंचायतें इसीपुरदिल, ताहिरपुर भभीमा, विकास खण्ड-शामली की ग्राम पंचायत-तानपुर सिंभालका, चून्सा, झाल, बरला जट, खानपुर एवं गौ. हरनी, विकास खंड ऊन की ग्राम पंचायत-दधेडा, भमेडी शाहपुर, कालमाजरा, आकापुर उर्फ फूसगढ़, पीरखेडा, पेलखला, लखवाडाऊदपुर एवं बसी चूँधियाती) में पंचायत सहायक एकाउंटेंट-कम-डाटा-इंट्री ऑपरेंटर

के कतिपय कारणों से रिक्त हुए पदों पर चयन की कार्यवाही निम्नानुसार किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। पंचायत सहायक/ एकाउंटेंट-कम-डाटा इंट्री ऑपरेंटर के चयन की समय-सारिणी। कार्य-1-ग्राम पंचायत द्वारा पंचायत सहायक/ एकाउंटेंट-कम-डाटा इंट्री ऑपरेंटर के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित करने की सूचना, ग्राम पंचायत के सूचना पट्ट एवं मुनादी द्वारा कराया जाना।

निर्धारित समय- 10 जून, 2025 से 12 जून, 2025, 2-जिला पंचायत राज अधिकारी कार्यालय, विकास खण्ड कार्यालय एवं ग्राम पंचायत कार्यालय में आवेदन पत्र जमा कराने की अवधि। निर्धारित समय -13 जून, 2025 से 28 जून, 2025, 3-जिला पंचायत राज अधिकारी कार्यालय व विकास खण्ड कार्यालय में प्राप्त आवेदन पत्रों को सम्बन्धित

ग्राम पंचायत को उपलब्ध कराया जाना।

निर्धारित समय-29 जून, 2025 से 4 जुलाई, 2025, 4-ग्राम पंचायत में प्राप्त आवेदन पत्रों की श्रेष्ठता सूची (मेरिट लिस्ट) तैयार करना एवं ग्राम पंचायत की प्रशासनिक समिति के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत किया जाना एवं समिति द्वारा अनुमोदित श्रेष्ठता सूची को जिला स्तरीय समिति के विचारार्थ समिति के सदस्य सचिव (जिला पंचायत राज अधिकारी) को उपलब्ध कराया जाना। निर्धारित समय-05 जुलाई, 2025 से 11 जुलाई, 2025, 5-जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा परीक्षण एवं संस्तुति। निर्धारित समय- 12 जुलाई, 2025 से 18 जुलाई, 2025, 6-ग्राम पंचायत द्वारा नियुक्ति पत्र निर्गत किया जाना। निर्धारित समय-19 जुलाई 2025 से 21 जुलाई, 2025 व्यवस्था रहेगी।

हरे चारे से गोमाता की सेवा की

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। मां शाकुंभरी देवी गऊ ग्रास समिति द्वारा नई मंडी स्थित गौशाला में 6 कुतल हरा चारा और पांच कुतल घोया और खीरा सब्जी से गौ माता की सेवा की गई। संस्था के अध्यक्ष डॉ अनिता कुमार बंसल ने बताया कि संस्था माह में एक बार गौ माता को हरा घास खिलाकर गौ माता की सेवा करती है शास्त्रों में गौ माता की सेवा करना सबसे बड़ा पुण्य का काम है गौ माता की सेवा करने से पुण्य प्राप्त होता है तथा मन को असीम शांति भी प्राप्त होती है सभी को बड़-चढ़कर गौ माता की सेवा करनी चाहिए। इस मौके पर विजय गुप्ता कपिल मित्तल वीरेन्द्र बालिवरान प्रियाशु रुहेला आदि मौजूद रहे।

वेब पोर्टल सितम्बर तक हुआ विस्तारित

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। उ.प्र. भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड लखनऊ के पत्र के क्रम में सहायक श्रमायुक्त, शामली अचला पाण्डेय ने अवगत कराया गया कि बोर्ड का वेबपोर्टल जो 9.2.2024 से बन्द होने के कारण ऐसे पंजीकृत निर्माण श्रमिक जो ससमय नवीनीकरण एवं योजना आवेदन नहीं कर पाए तथा योजनान्तर्गत प्रावधानित समय-सीमा वेबपोर्टल बन्द होने के कारण समाप्त हो गई।

उन्हें वेबपोर्टल संचालित होने के उपरान्त नवीनीकरण एवं योजना आवेदन करने हेतु माह मार्च-2025 तक छूट प्रदान की गई थी। उपर्युक्त क्रम में अवगत कराना है कि उक्त

छूट समाप्त हो जाने के उपरान्त विभिन्न जनपदीय अधिकारियों द्वारा उक्त अवधि को विस्तारित किए जाने का अनुरोध किया गया। अभी भी कई ऐसे श्रमिक आवेदनकर्ता हैं, जो कि विभिन्न कारणों जैसे श्रमिक पंजीयन में त्रुटि होने, पारिवारिक विवरण फ़ीड न होने, जन्म मृत्यु सर्टिफिकेट न होने, नवीनीकरण न होने, आधार सत्यापन न होने, आवश्यक अभिलेख उपलब्ध न होने, जानकारी का अभाव होने जैसे कारणों से उक्त छूट का लाभ नहीं ले पाए हैं। अतः श्रमिक हित में बोर्ड कार्यालय द्वारा उक्त छूट को माह सितम्बर-2025 तक विस्तारित करते हुए बोर्ड के वेबपोर्टल पर निम्नलिखित व्यवस्था करा दी गई है।

महिला ने लगाए गंभीर आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। शहर कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला पंसारियान बड़ी माता मंदिर रोड निवासी एक महिला ने कोतवाली पुलिस को शिकायती पत्र देकर जबरदस्ती कमरे में खींचने का आरोप लगाते हुए मामले में जांच कर कार्यवाही करने की मांग की है।

सोमवार को शहर के माता मंदिर रोड निवासी अनु पत्नी रविसेन कुमार उर्फ सोनू ने कोतवाली पुलिस को शिकायती पत्र देकर बताया कि उसका पति धनेन्द्र संगल उर्फ भूचल के यहां मजदूरी का कार्य करता है। गत 6 जून को शाम करीब 6 से 7 बजे के बीच पति घर पर नहीं था और प्रधान घर पर मजदूरी के रूपये देने के लिए आया। आरा. प है कि इस दौरान महिला को घर पर अकेली देखकर कमरे में खींचने का प्रयास किया, जिसका विरोध किया तो गाली गलौच की गई और जान से मारने की धमकी दी गई। महिला ने बताया कि इस दौरान उसके कपड़े भी फट गए। जिसकी शिकायत उसने डायल 1076 पर भी की थी। पीडिता ने मामले में जांच कर कार्यवाही की मांग की है।

एनओसी लेकर अन्य कॉलेज में एडमिशन लेने का दबाव

शाह टाइम्स संवाददाता थानाभवन। राजकीय महाविद्यालय थाना भवन में पिछले एक वर्ष से पढ़ रहे छात्र-छात्राओं का भविष्य फिलहाल संकट में नजर आ रहा है। प्रशासन ने इन छात्रों को एनओसी डूनों ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट्स जारी करते हुए अन्य महाविद्यालयों में दाखिला लेने के निर्देश दिए हैं। छात्रों को बताया गया है कि नए सत्र से महाविद्यालय में सरकारी व्यवस्था के अंतर्गत नए स्टाफ की नियुक्ति के साथ ही नए छात्रों का ही प्रवेश होगा। छात्रों का कहना है कि उन्होंने पूरे एक वर्ष तक मेहनत से पढ़ाई की है और अब उन्हें महाविद्यालय से बाहर कर दिया जा रहा है। इस फैसले के विरोध में छात्र-छात्राओं ने तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते हुए मां शाकुंभरी विभव.



थानाभवन। शिकायत करने पहुंचे छात्र-छात्राएं।

विद्यालय और शासन से न्याय की मांग की है। बताते चलें कि कैबिनेट मंत्री सुरेश राणा के प्रयासों से थाना भवन में राजकीय महाविद्यालय की

स्थापना हुई थी। शुरुआत में प्राइवेट स्टाफ द्वारा पढ़ाई कराई गई, और 147 छात्रों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों की.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम. में दाखिला

लिया था। प्रत्येक छात्र से लगभग 7000 रूपए शुल्क भी लिया गया था। वर्तमान में विश्वविद्यालय ने निर्देश दिए हैं कि 2025-26 सत्र से महाविद्यालय को पूर्ण रूप से सरकारी व्यवस्था के तहत संचालित किया जाएगा।

इसके चलते पहले से पढ़ रहे छात्रों को अन्य कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए एनओसी दी जा रही है। इससे नाराज छात्रों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए मांग की है कि उन्हें भी अगले सत्र में यहीं पढ़ाई जारी रखने की अनुमति दी जाए। तहसीलदार रविंद्र कुमार मौके पर पहुंचे और छात्रों से बातचीत की। उन्होंने आश्वासन दिया कि मामले को उच्च अधिकारियों तक पहुंचाया जाएगा और उनके निर्देशानुसार ही आगे की कार्रवाई होगी।

दिव्यांगों के लिए दस जून से चलेगा विशेष अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। डीएम अरविंद कुमार चौहान ने बताया कि दिव्यांग बच्चों के चिन्हांकन के लिए प्रत्येक जनपद में विकास खण्ड स्तर पर शिविर का आयोजन कर उनके चिकित्सकीय परीक्षण, दिव्यांग प्रमाण पत्र, उनकी आवश्यकता के अनुरूप सहायक उपकरण व अन्य योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए 10 जून से विशेष अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने बताया इस अभियान में सभी विकास खण्ड परिसरों में चिन्हांकन शिविर का आयोजन पूर्वान्हन 10:30 बजे से अपराहन 4 बजे तक किया जाएगा। जिसमें विकास खण्ड प्रांगण शामली में 10 जून, विकास खण्ड प्रांगण थानाभवन में 11 जून, विकास खण्ड प्रांगण ऊन में 12 जून, विकास खण्ड प्रांगण कांथला में 13 जून, विकास खण्ड प्रांगण कैराना में 19 जून को शिविर का आयोजन किया जाएगा। चिन्हांकन शिविर में सीएमओ द्वारा चिकित्सकीय दल का गठन कर दिव्यांग बच्चों का चिकित्सकीय परीक्षण किया जाएगा। दिव्यांग मंडिकल बोर्ड द्वारा उनके दिव्यांग प्रमाण पत्र व यूडीआईडी कार्ड निर्गत किए जाएंगे।

एक अभियुक्त व अभियुक्ता गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता शामली। वर्ष 2015 में थाना कोतवाली शामली क्षेत्रान्तर्गत अभियुक्त अमित शर्मा पुत्र सत्यपाल शर्मा निवासी मोहल्ला शिव विहार कालोनी हाल पता मोहल्ला दयानन्दनगर थाना कोतवाली शामली जनपद शामली द्वारा नाबालिग को बहला फुसलाकर ले जाकर दुष्कर्म की घटना कारित की गई थी, जिसमें थाना कोतवाली शामली पर मुकदमा पंजीकृत किया गया था। इसी क्रम में शामली पुलिस द्वारा तत्पता से सक्षय संकलन करते हुए अभियुक्त अमित शर्मा व उसकी की पत्नी रूबी शर्मा को उपरोक्त घटना में सहयोग देने के मामले में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया तथा सुसंगत दोस साक्ष्य के आधार पर अभियुक्तगण के विरुद्ध

माननीय न्यायालय में आरोप पत्र प्रेषित किया गया। पुलिस अधीक्षक शामली द्वारा उक्त मामले में शामली पुलिस को नियमित रूप से प्रभावी पैरवी हेतु निर्देश दिए गए। इसी क्रम में आज 9.6.2025 को न्यायालय स्पेशल पोबसो कोर्ट-1, मुजफ्फरनगर द्वारा अभियुक्त अमित व उसकी पत्नी रूबी उपरोक्त को दोषी पाते हुए अभियुक्त अमित को आजीवन कारावास की सजा व 50,000/-रुपये अर्थदंड, अर्थदंड अदा न करने पर 2 माह का अतिरिक्त कारावास व अभियुक्ता रूबी शर्मा धारा 376/120 बी भादवि व पोबसो अधिनियम में आजीवन कारावास की सजा व 50,000/-रुपये अर्थदंड, अर्थदंड अदा न करने पर 1 माह के कारावास की सजा सुनाई है।

एक नजर

समर कैम्प में स्विमिंग पूल में नहाने का बच्चों ने उठाया आनन्द



शाह टाइम्स संवाददाता

शामली। शहर के सत्यनारायण इंटर कॉलेज में समर कैम्प में सोमवार को बच्चों ने स्विमिंग पूल में नहाने, मस्ती करने और उछल कूद करने का आनन्द उठाया। समर कैम्प के सभी बच्चे गोरखी रोड स्थित स्विमिंग पूल पर पहुंचे और स्विमिंग पूल में ठंडे पानी से नहाने का आनन्द लिया और शीतलता का अनुभव किया। प्रधानाचार्य अनिल कुमार शर्मा ने सबको सुरक्षा सम्बन्धी निर्देशों से अवगत कराया और उपस्थित समस्त स्टाफ को भी बच्चों का ध्यान रखने के सख्त आदेश दिए। छोटे बच्चों व बड़े बच्चों के लिए अलग-अलग स्विमिंग पूल की व्यवस्था थी। पानी में नहाते हुए और क्रीडा करते हुए बच्चे ऐसे प्रतीत हो रहे थे जैसे छोटी-छोटी मोछलियां उछल कूद कर रही हों। नहाने के बाद सभी बच्चों ने घर से लाया हुआ नाश्ता जैसे सैंडविच, चिप्स, क्रकुरे, बिस्कुट, फ्रूटी आदि का भी आनन्द लिया। कैम्प संचालिका छवि शर्मा बच्चों को देख रख और सुरक्षा सम्बन्धी दायित्व का निर्वाह बड़े ध्यान पूर्वक कर रही थी। जिससे बच्चों को किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आई।

कुटुंब प्रबोधन गतिविधि का आयोजन, परिवारों को संस्कारित करने का लिया संकल्प



शाह टाइम्स संवाददाता

कैराना। सोमवार को नगर के सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में कुटुंब प्रबोधन गतिविधि की एक महत्वपूर्ण जिला बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में सभी नगर खंड के संयोजक और प्रमुख उपस्थित रहे। बैठक में सह प्रांत संयोजक बालकृष्ण ने कुटुंब प्रबोधन के कार्यों को हर परिवार तक पहुंचाने के लिए कार्यकर्ताओं को नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बताया कि शताब्दी वर्ष के अवसर पर हर घर तक संपर्क बनाना का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, ताकि हिंदू परिवार संस्कारित और सशक्त हो सकें। साथ ही, उन्होंने सभी नगर खंडों में छोटे-छोटे पारिवारिक गोष्ठियां आयोजित करने के लिए प्रेरित किया। बैठक के अंत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह जिला संघचालक आलोक ने आशीर्वाचन स्वरूप सभी को मार्गदर्शन दिया। बैठक में प्रातः संयोजक विनय कुमार, विभाग संयोजक देवदत्त, सह विभाग संयोजक मांगेगंगा, जिला संयोजक अनिल और शुभम सहित अन्य प्रमुख सदस्य उपस्थित रहे।

जलभराव की समस्या को लेकर एसडीएम से मिले सपा विधायक

शाह टाइम्स संवाददाता

कैराना। कैराना सीट से समा. जवादी पार्टी के विधायक चौधरी नाहिद हसन कांथला ब्लॉक क्षेत्र के गांव आल्दी के ग्रामीणों के साथ में तहसील मुख्यालय पर पहुंचे। जहां पर उन्होंने एसडीएम कैराना निधि भारद्वाज से मुलाकात की। उन्होंने एसडीएम को गांव आल्दी की गलियों में हुए जलभराव की समस्या से अवगत कराया। बताया कि घरों से निकलने वाले दूषित पानी की निक. इसी की सुचारू व्यवस्था न होने से गली में गंदा पानी भरा हुआ है। यह पानी ग्रामीणों के घरों में जा घुसा है, जिस कारण महिलार्थ मकान की छत पर भोजन बनाने को विवरा है। कैराना-कांथला मार्ग की ओर आने वाले गांव के मुख्य रास्ते पर नाला निर्माण कराए जाने से जलभराव की समस्या का निस्तारण हो सकता है। इस मार्ग पर लोक निर्माण विभाग की भूमि उपलब्ध है, जिस पर एक-दो लोगों ने अवैध कब्जा कर रखा है। कब्जाधारी लोग नाला निर्माण के कार्य में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। नाला निर्माण होने से निकासी का गंदा पानी



गांव में स्थित तालाब में जा सकता है। करीब दो माह से जलभराव की समस्या बनी हुई है, जिससे मार्ग पर ग्रामीणों का आवागमन भी बंद हो चुका है। ग्रामीणों के कई बार शिकायत करने के बावजूद समस्या पर कोई सज़ान नहीं लिया गया। बरसात का मौसम नजदीक है। ऐसे में नाला निर्माण का कार्य शीघ्र कराया जाना अति आवश्यक है। विधायक ने जनहित को ध्यान में रखते हुए जलभराव की समस्या का निराकरण कराने को कहा है। उधर, विधायक नाहिद हसन का कहना है कि गांव आल्दी में जलभराव की समस्या बनी हुई है। इसी को लेकर ग्रामीणों के साथ में एसडीएम से मुलाकात की गई है। एसडीएम ने समस्या के शीघ्र निराकरण का आश्वासन दिया है।

नोएडा में बना पहला डिजिटल ई-मालखाना

■ 14 करोड़ की लागत से बना मॉडल पुलिस स्टेशन, सीपी ने किया उद्घाटन

शाह टाइम्स ब्यूरो
नोएडा। गौतमबुद्धनगर पुलिस कमिश्नरेट में पुलिसिंग के आधुनिक, ठीकरण और नागरिक सुविधा के क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक कदम उठाया है। सोमवार को पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने सेक्टर-63 स्थित नव निर्मित थाना भवन, आवासीय परिसर और जिले के पहले ई-मालखाने का विधिवत उद्घाटन किया।

ई-मालखाने में सामान पर एक बार कोड जनरेट किया जाएगा। इसे टेब की मदद से स्कैन किया जाएगा। जिससे उसका रिकार्ड मैनटेन होगा। इस अवसर पर उन्होंने थाना परिसर में पौधरोपण करे स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ जीवन का संदेश भी दिया।कलब 14 करोड़ रुपए की लागत से बने इस मॉडर्न भवन को मॉडल पुलिस स्टेशन



के रूप में विकसित किया गया है। थाना परिसर में न केवल आधुनिक कार्यालय और साइबर सेल जैसी सुविधाएं हैं, बल्कि महिला हेल्थ डेस्क, हवालात, विवेचना कक्ष, सीसीटीएनएस कक्ष और रेस्ट रूम जैसी नागरिक व पुलिसकर्मियों की आवश्यकताओं को

ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया गया है। भवन को पेपरलेस कार्यप्रणाली, हाई स्पीड इंटरनेट और ग्रीन एनर्जी से लैस किया गया है।

पहला डिजिटल ई मॉल खाना: इस थाने की सबसे बड़ी विशेषता इसका ई-मालखाना है, जो जनपद का

पहला डिजिटल मालखाना है। यह सुविधा केस से संबंधित साक्ष्यों की वैज्ञानिक व सुरक्षित ढंग से भंडारण और त्वरित जानकारी प्राप्त करने के लिए क्यू आर कोड आधारित प्रणाली से जुड़ी है। इससे जांच अधिकारियों को साक्ष्यों की जानकारी तुरंत उपलब्ध

होगी, जिससे जांच प्रक्रिया में पारदर्शिता और गति आएगी।

कर्मियों के लिए आवासीय भवन: पुलिसकर्मियों के लिए नए आवासीय भवन भी इस परियोजना का हिस्सा हैं। यहां पर पुलिसकर्मियों की सुविधा के लिए मेस, बाह्य गतिविधियों की व्यवस्था और तनाव मुक्त कार्य वातावरण सुनिश्चित किया गया है। इसके अलावा महिलाओं के लिए 24x7 महिला हेल्प डेस्क स्थापित की गई है, जहां वे बिना किसी संकोच के अपनी शिकायत दर्ज कर सकती हैं।

ग्राम प्रहरियों को किया सम्मानित: उद्घाटन अवसर पर पुलिस आयुक्त ने ग्राम प्रहरियों को सम्मानित करते हुए उन्हें किट भी वित. रित की। कार्यक्रम में अपर पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था राजीव नारायण मिश्र, अपर पुलिस आयुक्त मुख्यालय अजय कुमार, पुलिस उपायुक्त नोएडा यमुना प्रसाद, पुलिस उपायुक्त सेंट्रल नोएडा शक्ति मोहन अवस्थी, ट्रैफिक डीसीपी लखन सिंह यादव समेत अन्य पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

नोएडा एयरपोर्ट के लिए बन रहे इमरजेंसी रोड निर्माण का डीएम ने किया निरीक्षण



शाह टाइम्स संवाददाता ग्रेटर नोएडा। डीएम मनीष कुमार ने आज जेवर पहुँच कर नोएडा एयरपोर्ट के लिए नेशनल हाईवे अर्थांरिटी ऑफ इंडिया द्वारा तैयार की जा रही 8 किलोमीटर लंबी 30 मीटर चौड़ी इमरजेंसी रोड के निर्माण कार्य का स्थलीय निरीक्षण किया। इस दौरान उप जिलाधिकारी अभय कुमार

सिंह द्वारा एयरपोर्ट के लिए तैयार की जा रही इमरजेंसी रोड के कार्य कि वर्तमान प्रगति से डीएम को अवगत कराया गया।

डीएम ने एनएचएआई द्वारा रोड निर्माण को लेकर अब तक के कार्यों की समीक्षा करते हुए कार्यों में तेजी लाते हुए तय समय में इसे पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि

जेवर एयरपोर्ट केन्द्र एवं उत्तर प्रदेश सरकार का डीम प्रोजेक्ट है, इसलिए इसके किसी भी कार्यों में शिथिलता न बरती जाए।

निरीक्षण के दौरान उप जिलाधिकारी जेवर अभय कुमार सिंह, नेशनल हाईवे अर्थांरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारी व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

कुत्तों के झुंड ने मोर पर किया हमला

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के दनकौर कोतवाली क्षेत्र के जुनेदपुर गांव में एक मोर को कुत्तों के हमले से बचाया गया। सोमवार दोपहर की घटना है। मोर मॉरि परिसर में बैठा था। इसी दौरान कुत्तों के झुंड ने उस पर हमला कर दिया।

मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए मोर को कुत्तों से बचाया। हमले में मोर घायल हो गया था। ग्रामीण बौरलाल और अन्य लोगों ने कई घंटों तक मोर का इलाज किया। जब मोर की स्थिति में सुधार नहीं हुआ, तो ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना दी। वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और घायल मोर को अपने साथ ले गई। मोर को आगे का इलाज दिया जाएगा।

भूखंड बेचने का झांसा देकर डेढ़ करोड़ रुपये हड़पने का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता नोएडा। गाजियाबाद के रहने वाले प्रदीप गुप्ता ने ग्रेटर नोएडा के अंसल गोल्फ लिंक वन सोसाइटी में रहने वाली महिला मधुमा और उनके पति पर आरोप लगाया है कि उन्होंने भूखंड बेचने का झांसा देकर उनसे डेढ़ करोड़ रुपये हड़प लिए।

प्रदीप गुप्ता के अनुसार, महिला ने 3.4 करोड़ रुपये में भूखंड बेचने का सीधा तय किया था और डेढ़ करोड़ रुपये बतौर बयाना ले लिए थे। पैसा लेने के बाद महिला और उनके पति ने भूखंड बेचने से मना कर दिया और बाद में दिए गए चेक भी बैंक में बाउंस हो गए।जब प्रदीप गुप्ता ने पैसे वापस मांगे, तो महिला ने अपने पति और तीन अज्ञात साक्षियों के साथ मिलकर उनकी मारपीट की। न्यायालय के आदेश पर बीटा-2 कोतवाली पुलिस ने आरोपी दंपति और उनके तीन

छत से गिरकर दो लोगों की मौत

नोएडा। सेक्टर -63 स्थित बहलोलपुर गांव और चोटरपुर कालोनी में छत से गिरकर संदिग्ध परिस्थितियों में दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने शवों का पोस्टमार्टम करकर मामले की जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि बहलोलपुर गांव में रहने वाले 23 वर्षीय राजकिशोर रविवार रात अपने मकान की चौथी मंजिल पर सो रहे थे। वह दरारदार सॉलिंग परिस्थितियों में नीचे गिर गए। अत्यंत गंभीर हालत में उनके परिजन मनोज पंडित ने उन्हें उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती करवाया, जहां पर उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। वहीं, एक अन्य मामले में चोटरपुर कालोनी में रहने वाले 28 वर्षीय गुड्डू अंसारी रविवार रात अपने घर की तीसरी मंजिल से नीचे गिर गए। इस घटना में उनकी मौके पर मौत हो गई। पुलिस यह जांच कर रही है कि दोनों घटनाएं हादसे हैं या कुछ और।

सेक्टर-36 के निवासी प्राधिकरण कार्यालय परिसर पर देंगे धरना

शाह टाइम्स संवाददाता नोएडा। सेक्टर-36 की आरडब्ल्यूए और निवासियों के बीच सोमवार को बैठक हुई। बैठक के दौरान शोभा बिल्डर के हाई राइज जंग सोसाइटी के मामले में चर्चा की गई। आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष सुरत नागर और उपाध्यक्ष सुनील ने बताया कि बैठक में सर्वसम्मति से फैसला लिया गया है कि सभी लोग 11 जून को शोभा बिल्डर के खिलाफ प्राधिकरण कार्यालय परिसर में धरना प्रदर्शन करेंगे। बैठक की अध्यक्षता चंद्रपाल बंसल और संचालन सुनील प्रधान ने किया।

अध्यक्ष सुरत नागर ने बताया कि हमारे सेक्टर के चार नंबर गेट पर शोभा बिल्डर की ओर से हाई राइजजंग सोसाइटी बनाई जा रही है, जिसको लेकर प्राधिकरण के

अज्ञात साक्षियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

पुलिस मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई कर रही है। यह मामला ग्रेटर नोएडा में भूमि संबंधित धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाओं का हिस्सा है। हाल ही में, महिपाल सिंह नामक व्यक्ति को 1 करोड़ रुपये के भूमि धोखाधड़ी के प्रयास में गिरफ्तार किया गया था, जिसमें उसने फर्जी आधार कार्ड का उपयोग करके 200 वर्ग मीटर के भूखंड की बिक्री का प्रयास किया था। इस मामले में, अधिकारियों ने आधार कार्ड में फोटो और जन्म तिथि में असंगतियां पाईं, जिसके बाद जांच की गई और महिपाल को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने बताया कि महिपाल ने लंबे समय से खाली पड़ी भूमि की पहचान की और उसे बेचने के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार किए थे।

ट्रेन की चपेट में आया बीटेक छात्र

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के दनकौर रेलवे स्टेशन के पास रविवार को एक ट्रेन हादसे में बीटेक छात्र की मौत हो गई। मृतक की पहचान प्रतापगढ़ निवासी 22 वर्षीय विशाल के रूप में हुई है। विशाल दनकौर क्षेत्र की एक निजी विश्वविद्यालय में बीटेक द्वितीय वर्ष का छात्र था। उसकी बहन दनकौर रेलवे स्टेशन के पास रहती है। रविवार को जब विशाल देर रात तक घर नहीं पहुंचा, तो बहन ने खोजबीन शुरू की। इसी दौरान उसे पता चला कि उसके भाई की ट्रेन हादसे में मौत हो गई है। जीआरपी पुलिस को रविवार को रेलवे स्टेशन के पास एक अज्ञात युवक के शव की सूचना मिली थी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सोमवार को परिजनों ने शव की पहचान की। परिजनों का कहना है कि विशाल किसी तरह के तनाव में नहीं था।

पुलिस ने दो बदमाशों को किया गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता नोएडा। थाना सेक्टर-24 नोएडा पुलिस द्वारा बंद पड़े मकानों की रेकी करके चोरी करने वाले एक बदमाश और एक सुनार को पकड़ा है। इनके कब्जे से चोरी के आभूषण, विशाली मुद्रा व चांदी के सिक्के बरामद किए गए हैं। इनकी पहचान सोनू गौतम हुई है। सोनू सुनार मनोज कुमार वर्मा को चोरी का काल बेचता था। पुलिस ने एआरटीओ ऑफिस के पीछे वाली सड़क से गिरफ्तार किया है।

एडीसीपी सुमित शुक्ला ने बताया कि बदमाशों के पास से 4 अंगूठी पीली गले, 01 गल का हार सफेद धातु, 2 गल का हार पीली व सफेद धातु, 14 डॉलर (सिंगापुर देश के), 200 रुपया (इंडोनेशिया देश के), 06 चांदी के सिक्के व 01 चांदी का नोट बरामद किया गया है। पूछताछ के दौरान सोनू



ने बताया गया कि वह एनसीआर क्षेत्र में घूम-फिरकर घरों की रेकी करता है। चोरी किये गये आभूषणों को औने-पौने दामों में राह चलते व्यक्तियों को बेच देता है। उनके द्वारा यह सामान सेक्टर-35ए सोसाइटी के एक बन्द मकान से चोरी किया गया था।

दुकान पर बेचता था गहने:

सड़क हादसे में दो की मौत

ट्रेक्टर ने बाइक में मारी टक्कर, दोनों इंटरव्यू देने जा रहे थे

शाह टाइम्स संवाददाता नोएडा। नोएडा में सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हो गई। दोनों युवक सेक्टर-63 किसी एक कंपनी में जांच के लिए इंटरव्यू देने जा रहे थे। पीछे से ट्रैक्टर चालक ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। बाइक ट्रैक्टर के अंदर फंस गई। जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। वहां दोनों की मौत हो गई। परिजनों को जानकारी दी गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। थाना सेक्टर-63 पुलिस ने आरोपी ट्रैक्टर चालक को हिरासत में लिया गया है।

सड़क हादसे में कृष्ण कुमार पुत्र ब्रह्मदेव सिंह उम्र 25 वर्ष, और सुभाष पुत्र ओमप्रकाश उम्र 27 वर्ष दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए थे। दोनों घायलों को पुलिस द्वारा नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया था,



वहां डॉक्टर द्वारा उपरोक्त दोनों को मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ट्रैक्टर को कब्जे में लेकर चालक को हिरासत में लिया गया है। वहीं बताया जा रहा है कि वो बाइक से इंटरव्यू देने के लिए जा रहे थे। बेहलोलपुर के पास एक ट्रैक्टर ने पीछे से टक्कर मारी। जिससे बाइक डिस्वैलेस हुई और ट्रैक्टर के अंदर फंस गई। करीब 10 से 25 मीटर तक विस्फटी रही। दोनों को गंभीर चोट लगी। मौके पर मौजूद भीड़ ने ट्रैक्टर चालक को पकड़ लिया। बताया गया कि सिर में चोट लगने से दोनों की मौत हुई है। दोनों दोस्त हैं। परिजनों को जानकारी दी गई।



संदीप भाटी ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि परमेन्द्र भाटी और उनके साथी कोर्ट में अपने गैर चलाते हैं। वे न्यायिक अधिकारियों और पुलिस अधिकारियों पर अपने लोगों को क्लाइंट देने का दबाव बनाते हैं। संदीप को अनुसार, उनके एक क्लाइंट को परमिंदर भाटी के लोगों ने संपर्क किया था। इस मामले को लेकर जब वे बार सदस्यों से चर्चा कर रहे थे। तभी परमेन्द्र भाटी और उनके साथियों ने उन पर हमला कर दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि हमलावरों ने हथियार की बट से भी वार किया।

बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष उमेश भाटी ने इस घटना की निंदा की है। उन्होंने कहा कि संदीप के साथ हुई मारपीट गलत है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। घटना के बाद कई वकील संदीप भाटी के समर्थन में आ गए हैं। वकीलों ने जिला जज से मिलकर कार्रवाई की मांग की है। संदीप भाटी का कहना है कि आरोपी पहले भी कई लोगों के साथ मारपीट कर चुके हैं।

सोसाइटी में तीन घंटे बिजली आपूर्ति बाधित रही

शाह टाइम्स संवाददाता ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित कासा ग्रींस-1 सोसाइटी में रविवार रात को तीन घंटे तक बिजली आपूर्ति बाधित रही। इस दौरान लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। सोसाइटी में रहने वाले अंततः ने बताया कि रविवार रात को लगभग 10:10 बजे बिजली गई और करीब 1:30 बजे वापस आई। इस दौरान लिफ्ट का संचालन बंद रहा। इसके कारण लोगों को सीढ़ी का सहारा लेना पड़ा। ऐसे में बच्चों, बुजुर्गों और शारीरिक रूप से अस्वस्थ लोगों को परेशानी हुई। लाइट जाने के बाद डीजी का संच. हालन होता है, लेकिन अधिक लोड होने की वजह से घरों में सप्लाई नहीं पहुंच पाती। बिजली न आने के कारण गर्मी की वजह से भी लोगों की हालत खराब हो गई। लोगों का आरोप

है कि जब से एनपीसीएल ने मल्टीप्लाइंट कनेक्शन लागू गए हैं, बिजली की समस्या सोसाइटी में अधिक बढ़ गई है।

शाह टाइम्स
आपके लोकप्रिय अखबार दैनिक शाह टाइम्स में विज्ञापन एवं समाचारों के लिए संपर्क करें।
प्रवेश सिंह दतानियां
जिला प्रभारी गौतमबुद्ध नगर/खोड़ा ए-37, सेक्टर-10, नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर 9810967541, 8920145356 Email: parveshnoida@gmail.com
खबरें छुपात नहीं, छापता है

तीनों तहसीलों में 123 शिकायतें दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता ग्रेटर नोएडा।

जनाता की शिकायतों का त्वरित एवं गुणवत्ता के साथ समाधान सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से जनपद की तीनों तहसीलों दादरी, जेवर और सदर में आज तहसील संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुल 123 शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें से 13 शिकायतों का समाधान मौके पर ही संबंधित अधिकारियों द्वारा किया गया।

जिलाधिकारी गौतम बुद्ध नगर मनीष कुमार वर्मा द्वारा जेवर तहसील में संपूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर सर्वप्रथम अपने-अपने विभागों में संच. विलत लाभाभ्यर्थीपरक योजनाओं को लेकर विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल का स्थलीय निरीक्षण किया गया। उन्होंने जनसामान्य की शिकायतों का अनुश्रवण करते हुए मौके पर ही



संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि बुद्धावस्था, विधवा और दिव्यांगजन पंशन के लिए प्राप्त सभी नए आवेदनों का सत्यापन पूरी पारदर्शिता एवं गंभीरता से किया जाए। उन्होंने कहा कि पात्र लाभार्थियों को योजनाओं का लाभ समय से प्राप्त हो, यह शासन की प्राथमिकता है। अतः संबंधित विभाग यह सुनिश्चित करें कि किसी भी योग्य व्यक्ति को

अनावश्यक प्रतीक्षा न करनी पड़े। सत्यापन की प्रक्रिया को सरल, संवे. दनशील और मानवीय दृष्टिकोण के साथ प्राथमिकता पर पूर्ण किया जाए ताकि पात्र व्यक्तियों को शीघ्र पेंशन का लाभ मिल सके।

जिलाधिकारी ने जेवर में तहसील संपूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता करते हुए जनता की समस्याएं सुनीं और संबंधित विभागों को आवश्यक

दिशा-निर्देश दिए। जेवर तहसील में कुल 40 शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें से 02 का समाधान मौके पर किया गया।

जिलाधिकारी ने संपूर्ण समाधान दिवस में उपस्थित समस्त जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनता की शिकायतों के समयबद्ध निस्तारण के लिए शासन गंभीर है। अतः अधिकारी निस्तारण में कोताही न बरतें और प्राथमिकता के साथ प्रत्येक शिकायत का मौके पर जांच कर पोर्टल पर समयबद्ध फीड कराना सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर उप जिलाधिकारी जेवर अभय सिंह, उप जिलाधिकारी सदर न्यायिक विवेक भगोशिया, जिला विकास अधिकारी शिव प्रताप परमेश, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नरेंद्र कुमार एवं संबंधित विभागों की अधिकारीगण उपस्थित रहे।

थाना बाबूगढ़ पुलिस ने पेश की मानवता की मिसाल

आमजन के लिए थाने के बाहर की ठंडे पेयजल और गुड़ की व्यवस्था

शाह टाइम्स संवाददाता
हापुड़। थाना बाबूगढ़ पुलिस ने इस भीषण गर्मी के मौसम में जब चिल्ला-चलाती धूप और तेज लू लोगों को बेहाल कर रही है, ऐसे समय में थाना बाबूगढ़ पुलिस ने एक सराहनीय और मानवता से भरी मिसाल पेश की है।

थाना गेट के बाहर आम जनता और राहगीरों के लिए मिट्टी के घड़ों में ठंडे पेयजल और साथ में गुड़ की निःशुल्क व्यवस्था की गई है। इस पहल का उद्देश्य न केवल लोगों को गर्मी से राहत पहुंचाना है, बल्कि यह दिखाता है कि पुलिस सिर्फ कानून व्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक सरोकारों



में भी बढ़-चढ़कर भाग ले रही है। थाना बाबूगढ़ प्रभारी विजय कुमार गुप्ता व उनकी टीम द्वारा शुरू की गई यह सेवा प्रतिदिन उपलब्ध

रहेगी। इससे गुजरने वाले राहगीरों को न केवल प्यास बुझाने का साधन मिल रहा है, बल्कि थोड़ी राहत और सूकून भी मिल रहा है। स्थानीय

नागरिकों और राहगीरों ने भी इस प्रयास की खुलकर सराहना की है। लोगों का कहना है कि यह एक छोटी सी पहल जरूर है। यह पहल

दिखाती है कि जब पुलिस अपने मानवीय चेहरे के साथ समाज के बीच आती है, तो वह विश्वास और सम्मान का सेतु बन जाती है। राहगीरों ने कहा कि यह पहल पुलिस की अच्छाई और समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता को दर्शाती है। किसी को प्यास को पानी पिलाना पुण्य का काम माना जाता है, और बाबूगढ़ पुलिस ने यह कार्य बखूबी निभाया है। सेवा सिर्फ ठंडा पानी और गुड़ नहीं है, यह एक संदेश है कि खाकी वर्दी में भी एक इंसान धड़कता है, जो समाज की भलाई के लिए हर संभव प्रयास करता है।



नहीं कर सके। सीओ वरुण मिश्रा ने बताया कि युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का

पता चल जाएगा। उन्होंने बताया कि पुलिस सभी पहलुओं पर गहनता से जांच कर रही है। जल्द ही युवक की पहचान की जाएगी और जल्द ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

प्रेमी के साथ मिलकर की थी लाखों की चोरी, पुलिस ने किया खुलासा

शाह टाइम्स संवाददाता
हापुड़। थाना हापुड़ नगर पुलिस ने थाना क्षेत्र के गांव अमीपुर नागौला में हुई चोरी की घटना का खुलासा करते हुए एक प्रेमी युगल को गिरफ्तार किया है जिसके कब्जे से चोरी की लाखों की नगदी, सोने व चांदी के आभूषण एवं घटना में प्रयुक्त मोटर साईकिल बरामद की गई है।

थाना प्रभारी निरीक्षक मुनीश प्रताप ने बताया कि थाना हापुड़ नगर पुलिस द्वारा गांव अमीपुर नागौला में हुई चोरी की घटना का खुलासा करते हुए एक प्रेमी युगल निगम पुत्र सुभाष निवासी ग्राम अटोला, अनामिका उर्फ नंदा पत्नी शुभम निवासी ग्राम अमीपुर नागौला को गांव अमीपुर नागौला के पास से गिरफ्तार किया गया है। जिनके कब्जे से चोरी



किया हुआ शत-प्रतिशत सामान 1,50,000 रुपये की नकदी, सोने के आभूषण कंटी गले की, एक ओम, एक मंगल सूत्र, एक का हार व चांदी के आभूषण एक जोड़ी बच्चे के हाथ के कढ़े, एक जोड़ी पायल, एक जोड़ी सैम्पल एवं घटना में प्रयुक्त मोटर साईकिल बरामद हुई है। उन्होंने बताया कि प्रेमिका

द्वारा योजनाबद्ध तरीके से अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने ससुराल में चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया था। उन्होंने बताया कि 7 जून को एक व्यक्ति द्वारा सूचना दी कि दो अज्ञात व्यक्तियों द्वारा घर का एलआईसी एजेंट बताकर धर का दरवाजा खुलवाया गया तथा मेरी पुत्र वधु अनामिका व बच्चों को

नशीला पदार्थ सुर्धार कर आभूषण व नगदी चोरी कर ले गये हैं। उन्होंने बताया कि संबंधित मामले में मुकदमा दर्ज कर पुलिस मामले को जांच पड़ताल में जुट गई थी। जांच करने पर पता चला कि गिरफ्तार की गई प्रेमिका अनामिका द्वारा अपने प्रेमी निगम के साथ षडयंत्र रचकर करीब 15 लाख रुपये के कीमती आभूषण व 1,50,000 रुपये की नकदी दे दी गई थी और अपने ससुराल वालों व पुलिस को चोरी की झूठी सूचना दी गई थी। थाना प्रभारी ने बताया कि सोमवार को चोरी की घटना का खुलासा करते हुए एक प्रेम युगल को गिरफ्तार कर चोरी का शत प्रतिशत सामान बरामद किया गया है।

जिलाध्यक्ष पद के दो वर्ष सफल होने पर कार्यकर्ताओं ने दी शुभकामनाएं

शाह टाइम्स संवाददाता

हापुड़। समाजवादी पार्टी के कर्मठ, जुझारू एवं जनप्रिय नेता बबलू गुर्जर ने समाजवादी पार्टी जिलाध्यक्ष पद पर अपने दो वर्ष के कार्यकाल को पूर्ण कर लिया है। इस अवसर पर पार्टी के कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों तथा जनसामान्य ने उन्हें दिल से बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

जिलाध्यक्ष बबलू गुर्जर का यह दो वर्षीय कार्यकाल संगठनात्मक मजबूती, कार्यकर्ता संवाद, जनसंपर्क अभियानों और समाजवादी नीतियों के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय उपलब्धियों से भरा रहा। उन्होंने लगातार समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की नीतियों और विकास की सोच को गांव-गांव, गली-गली तक पहुंचाने का काम किया। इस अवसर पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि आने वाले वर्ष 2027 के विधानसभा चुनावों में जनपद हापुड़ की तीनों विधानसभा सीटों धौलाना, गढ़मुक्तेश्वर व हापुड़ पर समाजवादी पार्टी की ऐतिहासिक जीत सुनिश्चित की जाएगी और उत्तर प्रदेश में पुनः अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाना है। इस मौके पर सभी शुभचिंतकों ने ईश्वर से प्रार्थना की कि बबलू गुर्जर को लंबी उम्र, उत्तम स्वास्थ्य और आगे भी पार्टी सेवा का अवसर मिले।



ग्यारह टीबी रोगियों को किया गया पोषण पोटली का वितरण

शाह टाइम्स संवाददाता
हापुड़। जिले को टीबी मुक्त करने के लिए की एक नई पहल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मुदाफरा पर तैनात डा. चंद्रपाल सिंह गौतम का सेवानिवृत्ति कार्यक्रम था। इस अवसर पर डा. चंद्रपाल सिंह गौतम ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर टीबी की दवाइयां ले रहे 11 रोगियों को गोद लेकर पोषण पोटली का वितरण किया एवं सभी मरीजों को जलपान कराया।

डा. चंद्रपाल सिंह ने बताया कि पूर्व में भी वह जनपद बुलंदशहर में जिला क्षय रोग अधिकारी के पद पर कार्य का निर्वहन कर चुके हैं एवं भविष्य में भी जब भी कहीं टीबी रोगियों की सेवा का अवसर सुझे प्राप्त होगा। में इसके लिए तत्पर रहूंगा। टीबी रोगियों का सहयोग



करके मैं अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। समय-समय पर मैं टीबी रोगियों के सहयोग के लिए तत्पर रहूंगा। इस अवसर पर जिला क्षय रोग अधिकारी डा. राजेश सिंह, चिकित्सा अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोहरा डा. धर्मेश

कंसल चिकित्साधिकारी डा. भारती बिरला जिला पीएमडीटी कोआर्डिनेटर मनोज कुमार वरिष्ठ प्रयोगशाला परिमेक्षक बृजेश कुमार लैब टेक्नीशियन अजय मालिक जिला पीपीएम कोआर्डिनेटर सुशील चौधरी आदि उपस्थित रहे।

सांसद के लापता की पोस्ट वायरल होने पर जिले में गरमाई राजनीति

शाह टाइम्स संवाददाता
हापुड़। मेरठ-हापुड़ लोकसभा सांसद अरुण गोविल के हापुड़ में लापता होने का पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मेरठ-हापुड़ लोकसभा सीट से भाजपा सांसद अरुण गोविल फिर से चर्चा में हैं। लेकिन इस बार उनका कोई बयान नहीं बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक यूजर द्वारा पोस्ट किया गया गुमशुदगी का पोस्ट है। जैसे ही यह पोस्ट वायरल हुआ, जिले की राजनीति में हलचल मच गई है।

भाजपा सांसद अरुण गोविल मेरठ में रहते हैं। इन दिनों चर्चा में कि वह हापुड़ विधानसभा क्षेत्र में काफी समय से नजर नहीं आए हैं। हाल ही में एक यूजर ने एक्स पर एक पोस्ट किया। जिसमें सांसद को गुमशुद बताया है। लिखा गया कि ये हमारे हापुड़-मेरठ लोकसभा क्षेत्र के सांसद हैं। इन्हें हापुड़ विधानसभा क्षेत्र में आखिरी बार पिछले वर्ष लोकसभा चुनाव में देखा गया था। उसके बाद से ही ये लापता है। अगर



किसी बंधु को ये हापुड़ विधानसभा में कहीं दिखाई दे तो कृपया सूचित करें। सांसद के गुमशुदगी का पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद जिले में राजनीति गरमा गई है। विपक्षी दलों खासकर कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के नेताओं ने इस मुद्दे पर सांसद अरुण गोविल को घेरते हुए जमकर निशाना साधा। समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष आनंद गुर्जर बल्लू प्रधान ने कहा कि भाजपा सांसद अरुण गोविल अब जनता से रूबरू नहीं हो रहे हैं और केवल सोशल मीडिया पर अपनी शिलान्यास किया था। इस लेखक जनता में उनके लिए नाराजगी



राकेश त्यागी कांग्रेस जिलाध्यक्ष (हापुड़)

साफ दिखाई दे रही है। कांग्रेस जिला अध्यक्ष राकेश त्यागी ने कहा कि भाजपा सांसद अरुण गोविल न तो जनसुर्धार करते हैं और न ही उनका क्षेत्र में कोई प्रवास होता है। जिससे क्षेत्र की जनता में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। भाजपा सांसद अरुण गोविल ने 27 मई को हापुड़-पिलखुवा विकास प्राधिकरण के तहत आठ करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले अरससीसी नाले और पुलिया का शिलान्यास किया था। इस परियोजना से क्षेत्र में जलभराव की



आनंद गुर्जर जिलाध्यक्ष सभा (हापुड़)

समस्या का समाधान होने की उम्मीद है और हजारों परिवारों को इसका सीधा लाभ मिलेगा। हालांकि, इस शिलान्यास के बाद भी सांसद अरुण गोविल के लापता की पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है।

क्रिकेट मैच के दौरान खिलाड़ियों के बीच मारपीट, पांच घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

छपरीली। क्षेत्र के हेवा गांव में रविवार को चल रहे एक स्थानीय क्रिकेट मैच के दौरान दो टीमों के खिलाड़ियों के बीच कहासुनी हो गई। कहासुनी में दोनों पक्षों के बीच जमकर मारपीट शुरू हो गई। देखते ही देखते दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर बैट और स्टम्प से हमला कर दिया। मारपीट में दोनों पक्षों से पांच युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने हालात को काबू में किया और घायलों को सीएचसी छपरीली में भर्ती कराया गया, जहां उनका उपचार चल रहा है।

पुलिस ने पीड़ित पक्ष की तहरीर के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव वालों का

कहना है कि स्थानीय स्तर पर आयोजित इन क्रिकेट मैचों में अक्सर विवाद की स्थिति बन जाती है, लेकिन इस बार मामला हिंसक हो गया। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।



महिला ने पड़ोसी पर लगाया दुष्कर्म करने के प्रयास का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता
गढ़मुक्तेश्वर। क्षेत्र के गांव निवासी महिला ने पड़ोसी युवक पर दुष्कर्म के प्रयास का आरोप लगाया। पीड़िता का आरोप है कि आरोपी का विरोध करने पर उसने अपने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर उसको और उसके परिजन को पीटकर धाया कर दिया। पीड़िता ने न्यायालय के आदेश पर पांच नामजद समेत छह लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है।

गांव निवासी महिला ने बताया कि उसका पति गाजियाबाद में काम करता है। घर पर वह अकेली रहती है जबकि ससुराल पक्ष के लोग दूसरे मकान में रहते हैं। पीड़िता ने बताया कि उसका पड़ोसी युवक उसको समय समय पर अश्लील इशारे करता है। इसको लेकर कई बार विवाद हो चुका है। पीड़िता बताया कि 25 मई को आरोपी उसके घर पर में घुस गया और उसको खाना बनाने के दौरान पीछे से आकर पकड़ लिया। आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास किया उसने विरोध किया तो आरोपी ने उसके साथ पिटाई कर दी। इस दौरान वह वहां से भाग कर देवर के घर पहुंच गई और पति को मामले की जानकारी दी। पीड़िता ने बताया कि उसका पति गांव आया तो आरोपी अपने परिजन के साथ उसके देवर के घर आ गए और उन पर हमला कर धाया कर दिया। पीड़िता ने बताया कि घटना की जानकारी पुलिस को दी, लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पीड़िता ने न्यायालय की शरण में जाकर कार्रवाई करने की मांग की। न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने पांच नामजद समेत छह लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।



भारत देश की तरक्की, एकता और आपसी भाईचारे के लिए खुसूसी से दूआ की गई। मुफ्ती साहब ने कहा कि हमारा मुलक विभिन्न धर्मों और जातियों का गुलदस्ता है, जिसे आपसी समझदारी और मोहब्बत से ही महकया जा सकता है। इस सफल आयोजन के लिए शहर

ईदगाह केमेट्री और मुफ्ती मकसूद आलम साहब ने जिलाधिकारी अभिषेक पांडे, पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानंजय सिंह, एसडीएम सदर इला प्रकाश, क्षेत्राधिकारी जितेंद्र कुमार शर्मा, नगर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मुनीष प्रताप सिंह, जदीद चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक प्रवीण

ईदगाह केमेट्री और मुफ्ती मकसूद आलम साहब ने जिलाधिकारी अभिषेक पांडे, पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानंजय सिंह, एसडीएम सदर इला प्रकाश, क्षेत्राधिकारी जितेंद्र कुमार शर्मा, नगर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मुनीष प्रताप सिंह, जदीद चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक प्रवीण

ईदगाह केमेट्री और मुफ्ती मकसूद आलम साहब ने जिलाधिकारी अभिषेक पांडे, पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानंजय सिंह, एसडीएम सदर इला प्रकाश, क्षेत्राधिकारी जितेंद्र कुमार शर्मा, नगर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मुनीष प्रताप सिंह, जदीद चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक प्रवीण

ईदगाह केमेट्री और मुफ्ती मकसूद आलम साहब ने जिलाधिकारी अभिषेक पांडे, पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानंजय सिंह, एसडीएम सदर इला प्रकाश, क्षेत्राधिकारी जितेंद्र कुमार शर्मा, नगर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मुनीष प्रताप सिंह, जदीद चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक प्रवीण



कुमार, नगर पालिका अध्यक्ष पुष्पा देवी और समस्त जिला व पुलिस प्रशासन का तहे दिल से आभार व्यक्त किया। जनपद की सभी मस्जिदों और ईदगाहों में नमाज का आयोजन शांतिपूर्वक और अनुशासन के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुस्लिम समुदाय के

लोगों में विशेष उत्साह देखा गया। शहर भर में अमन, भाईचारे और अनुशासन की मिसाल पेश करते हुए मुस्लिम समुदाय ने बकरीद का पर्व शांतिपूर्वक ढंग से मनाया। हर ओर से यह संदेश गया कि त्योहार का असली उद्देश्य प्रेम, त्याग और समाज में एकता को बढ़ावा देना है।



कैंट में खंडहर पड़े रिवोली हॉल में महिला का शव मिलने से मचा हड़कंप

काफी दिनों से पड़ा था शव, बदबू उठने पर आर्मी अधिकारियों ने दी पुलिस को सूचना

शाह टाइम्स संवाददाता मेरठ। सदर थाना क्षेत्र के गांधी बाग चौराहे के पास खंडहर पड़े रिवोली हॉल के अंदर सोमवार सुबह लगभग 40 वर्षीय महिला का सिर में चोट लगा शव बरामद हुआ। इस दौरान महिला के शरीर पर कपड़े इधर-उधर बिखरे हुए थे।

सूचना पर एसपी सिटी, सीओ कैंट फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची और मामले की जांच की। पुलिस ने महिला के शव को पोस्टमार्टम के

लिए भेज दिया। एसपी सिटी आर्युष विक्रम सिंह ने बताया कि आर्मी के अधिकारियों ने एक पुराने खंडहर पड़े सिनेमा हॉल के अंदर से बदबू उठने की बात बताई थी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची थी। पुलिस में आसपास के क्षेत्र में पृष्ठताछ की जहां उन्हें जानकारी हुई की महिला अपने सात वर्षीय बेटे के साथ लगभग सात साल से खंडहर पड़े सिनेमा हॉल के आसपास घूमती थी। वह लोगों से मांग कर खाना खाती थी। महिला के



सिर पर चोट के तीन निशान हैं। इस दौरान जमीन पर खून दिख था। पुलिस ने महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। एसपी

सिटी का कहना है पास के क्षेत्र में सीसीटीवी फुटेज चेक किया जा रहे हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट व सीसीटीवी के आधार पर आगे कार्रवाई की जाएगी।

गृह क्लेश में विवाहिता ने पिया तेजाब

शाह टाइम्स संवाददाता मेरठ। थाना लिसाडी गेट क्षेत्र के खुशहाल नगर में एक विवाहिता ने गृह क्लेश के चलते तेजाब पी लिया, विवाहिता की हालत बिगड़ने पर उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसका इलाज चल रहा है। सोमवार को थाना लिसाडी गेट में गृह क्लेश के चलते विवाहिता ने घर के टॉयलेट में रखा तेजाब पी लिया। मामले की जानकारी मिलने पर विवा. हिता के मायके वाले उसकी ससुराल पहुंच गए और उसकी हालत बिगड़ने पर उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कर दिया। विवा. हिता की हालत गंभीर बनी हुई है। वहीं विवाहिता के मायके वालों ने पति व उसके परिवार वालों को खिलाफ शिकायती पत्र देकर कार्यवाही की मांग की है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। शालीमार गार्डन की

रहने वाली फरहाना पुत्री रईसुद्दीन ने कहा करीब डेढ़ साल पहले खुशहाल नगर के रहने वाले चुबेर पुत्र शमशाद के साथ हुआ था। विवाहिता का 5 माह का एक बेटा भी है। जानकारी के अनुसार विवाहिता अपने पति से अपने ससुराल वालों से अलग रहने की जद कर रही थी पति ने अलग रहने से इंकार कर दिया। इसी को लेकर सोमवार को विवाहिता ने घर के टॉयलेट में रखा तेजाब पी लिया जिसके चलते उसकी हालत बिगड़ गई हालत बिगड़ता देख उसका पति और ससुराल वाले फरार हो गए। पड़ोसियों द्वारा विवाहिता के मायके वालों को जानकारी मिली मायके वाले उसकी ससुराल पहुंच गए और उसकी हालत को बिगड़ता देख उन्होंने विवाहित फरहाना को हापुड़ स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कर दिया। उसकी हालत गंभीर बनी

कोल्डड्रिंक पीते किशोर को पीटा, रिपोर्ट दर्ज किठौर। दुकान पर खड़े होकर कोल्डड्रिंक पी रहे किशोर के साथ गांव के ही तीन भाइयों ने मारपीट कर दी। जिसमें पीड़ित की गंभीर चोट आई। जाकिर पुत्र महंदाहसन निवासी राधाना ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उसका पुत्र अनस गांव की ही दुकान पर कोल्डड्रिंक पी रहा था। तभी गांव के अजहर, सबाहत, शोएब पुत्रगण मुन्बवर ने बातचीत के दौरान गाली गलौच शुरू कर दी। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

हुई है। फिलहाल फरहाना के मायके वालों ने उसके पति सहित परिवार वालों के खिलाफ तहरीर दी है पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

भीषण गर्मी से फसल हो रही है नष्ट

शाह टाइम्स संवाददाता किठौर। भीषण गर्मी के चलते किसान की फसल नष्ट हो रही है क्योंकि किसानों को देहात में द्यूबवेलो को पहले 18 घंटे तक बिजली मिलती थी लेकिन अब 8 घंटे बिजली मिलने की वजह से किसान को पानी पूर्ति करनी मुश्किल हो रही है। ऐसे में किसान सरकारी नाली के पानी के लिए मजबूर हैं लेकिन नाली की सफाई न होने की वजह से नाली में कबाड़ होने के कारण पानी नहीं मिल रहा है। सीसीएसयू के छात्र नेता शान मुहम्मद ने सिंचाई विभाग के एसडीओ विकास सैनी व जई हेमंत कुमार से नाली सफाई कराने की लेकर शिकायत की है अधिकारियों ने तत्काल नाली सफाई के आदेश दिए। वहीं भीषण गर्मी से किसान जल्द बारिश की दुआ कर रहे हैं।

भूमि विवाद में फसल जोतने का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता किठौर। अमरपुर में जमीन पर कब्जा करने की नीयत से कुछ लोगों ने ट्रैक्टर चलाकर फसल नष्ट कर दी। विरोध करने पर उक्त लोगों ने जमीन मालिक के साथ मारपीट भी की। दीपक त्यागी पुत्र मांगू सिंह निवासी माछरा ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि अमरपुर में उसकी व उसके बड़े भाई संजीव की भूमि स्थित है। जिस पर राजेन्द्र, करणवीर पुत्रगण दयाराम, सचिन, संजय सहित दो अज्ञात लोगों ने कब्जा करने की नियत से ट्रैक्टर चला दिया। विरोध करने पर आरोपियों ने दीपक व उसके पुत्र देवव्रत, भाई संजीव के साथ गाली गलौच करते हुए लाठी डंडों से हमला कर दिया। पीड़ित ने पांच को नामजद कराते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। वहीं थानाध्यक्ष का कहना है कि मामले की निष्पक्ष जांच करकर कार्रवाई की जाएगी।

धर्म के नाम पर अल्पसंख्यक समुदायों को बनाया जा रहा है निशाना: अल्पसंख्यक विकास समिति

ईसाई समाज व अन्य सभी अल्पसंख्यक वर्ग पर हो रहे अत्याचार बंद करने की मांग: राष्ट्रीय क्रिश्चियन मोर्चा



शाह टाइम्स संवाददाता मेरठ। देश भर में ईसाई समुदाय पर हो रहे प्रहार के विरुद्ध राष्ट्रीय क्रिश्चियन मोर्चा ने अल्पसंख्यक विकास समिति मेरठ के साथ सोमवार को जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन कर राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। अल्पसंख्यक विकास समिति के अध्यक्ष सुदीप जैन ने कहा कि इतिहास से पता चलता है कि जब जब किसी धर्म को कट्टरता किसी राजा पर हावी हुई है तब-तब अन्य धर्मों पर संकट आया है। इसीलिए बाबा साहेब

डॉ. भीम राव अंबेडकर ने भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र बनाया जो सभी धर्मों के सापेक्ष है। परंतु आज धर्म के नाम पर सभी अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाया जा रहा है चाहे वो मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, कोई भी हो। सुदीप जैन ने कहा कि धर्म के नाम पर उन्माद फैलाना बन्द होना चाहिए। राष्ट्रीय क्रिश्चियन मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष प्रकाश ए प्रसाद ने कहा कि भारत पूरे विश्व में अनेकता में

एकता के लिए जाना जाता है। उन्होंने कहा कि धर्म के नाम पर पूरे देश में ईसाईयों पर हो रहे अत्याचार तुरंत बंद होने चाहिए। इस अवसर पर सरदार परमजीत सिंह, नाजिम सेफी, अक्षय जैन अरि. हंत, सौरभ जैन, किशोर मेसी, रेव युसुफ दास, रेव डेनियल मसीह, रेव डेविड मसीह, रेव गौतम सिंह, राहुल कुमार एडवोकेट, हरीश गौतम, एबनेजर फ्रांसिस, रेव फिन्नी अब्राहम, रेव दिनेश चंद आदि मौजूद रहे।

झोलाछाप और फर्जी अस्पतालों ने बिगाड़ी महिला की हालत

प्रसव के लिए भर्ती कराया था अस्पताल में, पीड़ित पति ने की सीएम्ओ से शिकायत

शाह टाइम्स संवाददाता मवाना। पैसा कमाने के चक्कर में फर्जी अस्पताल संचालक और झोलाछाप मरीजों की जान से खिलवाड़ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। मवाना नगर में ऐसा ही मामला प्रकाश में आया, जहां एक महिला को प्रसव के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। चिकित्सक के बजाए झोलाछाप ने महिला की छोटी सर्जरी कर दी। जिससे प्रसव से पूर्व ही अत्यधिक खून निकलने से महिला की हालत बिगड़ गई। महिला के पति ने उसे मेरठ के एक अस्पताल में भर्ती कराया, तब जाकर उसकी जान बच सकी। अब पीड़ित पति ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत कर दो अस्पतालों व महिला झोलाछापों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। हस्तिनापुर क्षेत्र के पाली गांव निवासी रिकू ने बताया कि 7 जून को उसने अपनी पत्नी को प्रसव के लिए मवाना नगर में पक्का तालाब के पास एक अस्पताल में भर्ती कराया। अस्पताल संचालक ने उसे प्रशिक्षित चिकित्सकों से प्रसव कराने का भरोसा दिया,



लेकिन एक महिला झोलाछाप को बुलाकर प्रसव कराने की कोशिश की। इस कोशिश में महिला को ब्लॉडिंग होने लगी, जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। इस पर भी झोलाछाप नहीं रुके। चोरा लगाने

वाली उस महिला झोलाछाप ने मरीज के पति को अपने अस्पताल में भर्ती कराने की सलाह दी। परेशान पति अपनी पत्नी को लेकर उस महिला झोलाछाप के मुबारिकपुर रोड स्थित अस्पताल में लेकर पहुंच गया। पीड़ित पति ने बताया कि वहां भी एक महिला झोलाछाप ने प्रसव कराने को बड़ा चोरा लगा दिया, जिससे ब्लॉडिंग और बढ़ गई और महिला की हालत गंभीर हो गई। इस पर झोलाछापों ने अपना पल्ला झाड़ते हुए महिला मरीज को वहां से रफक करने को कहा। अपनी पत्नी की जान बचाने के लिए परेशान पति उसे लेकर सीधा मेरठ पहुंचा और एक अस्पताल में भर्ती करा दिया। वहां अनुभवी और प्रशिक्षित चिकित्सकों ने बड़ी मशकत से मरीज की जान बचाई और उसका प्रसव कराया। महिला की हालत में सुधार होने पर पीड़ित पति ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत कर दोनों अस्पतालों का पंजीकरण रद्द करने व उनके संचालकों व दोनों महिला झोलाछापों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने की मांग की है।

हस्तिनापुर में दिगंबर जैन मंदिर के 50 साल हुए पूरे



शाह टाइम्स संवाददाता मेरठ। हस्तिनापुर में दिगंबर जैन महासमिति जैन समाज की सदन का 50 वां स्थापना राष्ट्रीय स्वरूप जयंती वर्ष समारोह का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि संजय जैन सी. ए रहे। स्वागत समारोह संयुक्त परिवार दिगंबर जैन महासमिति उत्तर प्रदेश उत्तरांचल एवं महिला आंचल द्वारा किया गया। राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष एवं कार्यवाहक अध्यक्ष विपिन कुमार जैन सराफ ने मुख्य अतिथि डॉ. संजय जैन सी ए सम्मान किया। इस दौरान सुरेंद्र हेगड़े, डॉ. अशोक जैन, सुरेंद्र कुमार जैन आदि लोग मौजूद रहे।

अब ऑनलाइन कर सकते हैं गृहकर और जलकर का भुगतान

चेयरमैन अखिल कौशिक ने की कर्मचारियों संग समीक्षा बैठक, गृहकर जलकर के संबंध में दिए निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता मवाना। नगर पालिका परिषद् मवाना के अध्यक्ष अखिल कुमार कौशिक द्वारा पालिका के कर विभाग के कर्मचारियों के साथ बैठक की गई, जिसमें कर विभाग में चल रहे कार्यों की समीक्षा की गयी। जिसमें पत्रावलियों के नामान्तरण किये जाने के सम्बन्ध में कर अधीक्षक से जानकारी की गयी तथा शीघ्रता से नामान्तरण की पत्रावलियों के निस्तारण व पालिका की कर वसूली में बढ़ोतरी करने हेतु चेयरमैन द्वारा कर विभाग के कर्मचारियों को कड़े निर्देश निर्गत किये गये। बैठक में चेयरमैन अखिल कौशिक द्वारा नगर के नागरिकों को अपना गृहकर जलकर के बिलों का ऑनलाइन भुगतान किये जाने हेतु नगर पालिका के ऑनलाइन पोर्टल के बारे में जानकारी दी गयी, जिसमें उन्होंने बताया कि नगर के नागरिक <https://nppmawana-nppnp.com/consumer&taU-aspU> साइट पर जाकर अपने-अपने गृहकर-जलकर के बिलों का ऑनलाइन भुगतान कर सकते हैं। पालिका अध्यक्ष द्वारा गृहकर जलकर जमा करने हेतु विस्तार पूर्वक जानकारी दी गयी कि सर्वप्रथम साइट पर जाकर अपना वार्ड चुनें, उसके पश्चात अपना मोहल्ला चुनें, एवं अकाउंट नम्बर प्रकाशित कर जाकर बिल पर लिखे डिमाण्ड नम्बर की संख्या को डालें, उसके बाद शी बटन पर जाकर अपने गृहकर-जलकर का

विवरण देख सकते हैं और वहीं से अपने गृहकर-जलकर का ऑनलाइन भुगतान कर सकते हैं। गृहकर जलकर का ऑनलाइन भुगतान होने से अब नागरिकों को लम्बी लाईनों में नहीं लगना होगा, और बड़ी सुगमता से



अपने गृहकर-जलकर का बिल जमा कर सकते हैं। उक्त बैठक में पालिका अध्यक्ष अखिल कुमार कौशिक के साथ कर विभाग के कर अधीक्षक अनिल कुमार, कर लिपिक उमेश कुमार, अनुचर भेन्नेन्द्र कुमार, सहायक दीपक कुमार आदि कर्मचारी रहे।

महिलाएं व छात्राएं खुलकर कहें अपनी बात: डॉ. हिमानी अग्रवाल

शाह टाइम्स संवाददाता मेरठ। महिला आयोग आपके द्वार कार्यक्रम के अंतर्गत उ.प्र. राज्य महिला आयोग की सरस्वती डॉ. हिमानी अग्रवाल मवाना में जाट कॉलेज के पीछे मोहल्ला मुन्ना लाल में पीड़िता से उसके आवास पर मिलने पहुंची। बता दें कि मोहल्ला मुन्ना लाल निवासी महिला ने रविवार को डॉ. हिमानी अग्रवाल को प्रार्थना पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगाते हुए कहा कि उसके घर के पास एक खंडरनुमा मकान में मोहल्ले के रहने वाले शराबी आये दिन शराब पीते हैं और जुआ खेलते हैं। जिस कारण बेटी का स्कूल जाना बंद हो गया है, पीड़िता ने बताया कि उसकी बड़ी बेटी ने भी 2023 उसकी छेड़छाड़ के कारण स्कूल जाना बंद कर दिया था, इस संबंध में पुलिस से शिकायत की



गई, लेकिन कोई भी कार्रवाई नहीं होने के आरोपियों के हासले दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। हिमानी अग्रवाल ने पीड़ित महिला को आश्वासन दिया कि बेटी को पढ़ने के लिए भेजे। उनके खिलाफ पुलिस सख्त कार्रवाई करेगी।

विनीत भराला ने किसान पंचायत के बहाने टटोली जाटों की नब्ब

सपा के सांसद हरेंद्र मलिक ने भाजपा सरकार पर किए तीखे प्रहार

शाह टाइम्स संवाददाता दौराला। सपा नेता विनीत भराला ने रविवार को गांव में ही किसान पंचायत का आयोजन किया और पंचायत के दौरान 2027 में पीडीए की पूर्ण बहुल सरकार बनाने की बात कही। पंचायत में सपा सांसद हरेंद्र मलिक ने भी शिरकत की और भाजपा पर भड़कास निकालते हुए तीखे सवालों के जवाब मांगे। विनीत कुमार आगामी विधानसभा चुनाव में सरधाना विधानसभा से चुनाव की तैयारी में जुटे हुए हैं। इसलििए उन्होंने रविवार को किसान पंचायत के बहाने विधानसभा क्षेत्र के जाटों की नब्ब भी टटोली। पंचायत के दौरान आसपास क्षेत्र से हजारों की संख्या में लोगों ने शिरकत की।

सांसद हरेंद्र मलिक ने अपने उद्घोषण की शुरुआत सपा नेता स्वर्गीय सत्यप्रकाश भराला को नमन करते हुए किया। उन्होंने सत्य प्रकाश भराला को अपना पुराना साथी बताते हुए भावुक हुए और उनके बेटे विनीत को अपने बेटे पंकज के समान



बताया। भीषण गर्मी के बीच पहुंचे हजारों लोगों को देखने के बाद हरेंद्र मलिक ने कहा कि आज का किसान योद्धा है भीषण गर्मी में आपकी इतनी बड़ी संख्या में मौजूदगी 2025 में ही 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में सपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने का संदेश है। उन्होंने कहा कि पहलगाय की आतंकी घटना बहुत ही दुखद थी हुआ। लेकिन आतंकियों के आने-जाने का पता नहीं चला। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा राज में हर वर्ग छोटा बड़ा या नौजवान सब दुखी हैं। उन्होंने पूर्व

सपा प्रमुख स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव को याद करते हुए कहा कि अगर गरीब किसानों को किसी ने कुछ दिया है तो उन्होंने दिया है और अब राष्ट्रीय अध्यक्ष किसानों गरीबों की लड़ाई लड़ रहे हैं। पंचायत के दौरान लोगों ने बार-बार स्वर्गीय सत्य प्रकाश भराला को याद किया और भावुक भी हुए। किसान पंचायत के संयोजक विनीत भराला ने किसानों का आभार जताते हुए भाजपा सरकार की नीतियों को किसानों और गरीबों के खिलाफ बताते हुए जमकर हमला किया और आगामी विधानसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत से सपा की सरकार बनवाने की अपील की। और सरधाना से टिकट की मांग करते हुए सीट जिताने का संकल्प लिया। संचालक अजीत कुमार व अध्यक्षता नंबरदार दौराला ने की। इस दौरान विश्वास प्रमुख, राजेंद्र प्रधान, मोनु पंथार, विनीत प्रधान चांदना, हरेंद्र प्रधान टांडा, डॉ. संजीव, मोहित सिंधु, अक्षय भफावत, शरा जाट, अमर सिंह प्रधान, शबीहसन बेदील, नेता सलीम, नादिर रिजवी आदि हजारों लोग मौजूद रहे।

कांवड़ मेला व शिवरात्रि पर्व को सफल बनाने के लिए डीएम ने अधिकारियों के साथ किया मंथन

प्रत्येक अस्पतालों में दस प्रतिशत बेड रहेंगे रिजर्व

शाह टाइम्स संवाददाता मेरठ। विकास भवन सभागार में डीएम डॉ. वी.के. सिंह की अध्यक्षता में कांवड़ मेला एवं शिवरात्रि पर्व को सफल बनाने के लिए अधिकारियों के साथ तैयारियों के संबंध में बैठक आहूत की गई। बैठक में नगर निगम, विद्युत विभाग, विद्युत सुरक्षा, पुलिस विभाग, लोक निर्माण विभाग, वन विभाग, जल निगम, पंचायती राज विभाग, खाद्य एवं रसद विभाग, स्वास्थ्य विभाग, एनएचआई सहित अन्य संबंधित विभागों के



अधिकारियों को कांवड़ से संबंधित समस्त तैयारियां समय से पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि कांवड़ मार्ग तथा मंदिरों के आसपास विद्युत व्यवस्था, पथ प्रकाश, साफ-सफाई, सीसीटीवी कैमरे, साईनेज आदि व्यवस्थाओं को समय से पूर्ण कर लिया जाये। उन्होंने नगर निगम को समुचित साफ-सफाई,

तथा सभी मार्गों पर साईनेज प्लाइंट का चिन्हांकन करते हुये कार्यवाही की जाये। सभी संबंधित विभागों से सुरक्षा मानक के प्रमाण पत्र अवश्य प्राप्त कर लिये जाये। उन्होंने कहा कि कांवड़ शिविर सड़क से अंदर की तरफ लगाये जाये। स्वास्थ्य विभाग की निर्देशित किया गया कि चिकित्सा शिविर, एम्बुलेंस प्लाईंट तथा आवश्यक स्वास्थ्य उपकरण, दवाई, कर्मचारियों की ड्यूटी इत्यादि की कार्य योजना तैयार कर कार्यवाही सुनिश्चित की जाये। डीएम ने कहा कि कांवड़ यात्रा के दुष्टिगत प्रत्येक अस्पताल में दस प्रतिशत बेड रिजर्व रहेंगे। उन्होंने विद्युत विभाग के अधिकारियों को कांवड़ मार्ग पर विद्युत पोल, ट्रांसफार्मर दुरुस्त को कहा है।

7217.410.410, 9412.486.198

जीरो बन कर आये, हीरो बन कर जाये

(R.N.-70885)

जनता क्लीनिक

केवल गुप्त रोगी मिले

अवाई विनर बेस्ट सेक्सोलोजिस्ट IN INDIA 2024

नामर्दी, शीघ्रपतन, हस्त मैथुन, जल्दी डिस्चार्ज हो जाना के स्पेशल विशेषज्ञ।

वागपत में प्रतिदिन सुबह 10:00 बजे से दोपहर 03:00 बजे तक पता: पेट्रोल पम्प के सामने, गौरीपुर मोड, वागपत

भारत और साउथ अफ्रीका के बीच दिसम्बर 2023 में आखिरी टेस्ट सीरीज हुई थी। यह 1-1 से टाई रही थी। इंडिया ए के मैच अब राजकोट में खेले जाएंगे इंडिया ए और साउथ अफ्रीका के के बीच 30 अक्टूबर से दो मल्टी-डे और तीन वनडे मैच खेले जाएंगे। मल्टी-डे मैच बेंगलुरु के बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में होंगे।

सम्पादकीय

मंगलवार , 10 जून 2025

पक्षपातपूर्ण नीति का नतीजा

मण्णपुर में हुई ताजा हिंसक घटनाओं के बाद खाने-पीने की चीजें और दवाइयों की भारी कमी हो गई है, यहां तक कि जरूरी सामानों के दाम बेतहाशा बढ़ गए हैं। हिंसा प्रभावित कई इलाकों में दवाइयों तक नहीं मिल रही हैं। अब सारी चीजें मिजोरम के रास्ते आ रही हैं। इसलिए महंगी हो गई हैं। पहले जैसी स्थिति नहीं रही है।
तीन मई 2023 को कुकी-मैतेई समुदाय को बीच संघर्ष शुरू हुआ था, जो अब तक जारी है। इस दौरान 300 से ज्यादा लोगों की मौत हुई है। एक-दूसरे के खिलाफ खड़े समुदायों की शिकायतों की प्रकृति एवं उसके स्तर के चलते अन्य किस्म के बखेड़ों के मुकाबले जातीय संघर्षों को खत्म करना कहीं ज्यादा मुश्किल होता है। उत्पीड़न के इस किस्म के अहसास को उन लोगों द्वारा खाद- पानी दिया जाता है, जो भावनाओं को इस हद तक बढ़ा देते हैं कि पारस्परिक समझौतों और शांति बहाली के जरिए मेल-मिलाप को लेकर कोई सार्थक रख अपनाना मुश्किल हो जाता है, भले ही लोगों का बहुमत मूक रूप से इसके पक्ष में हो। हथियारों को लहराकर धमकियां देते हुए, कौमपरस्त वर्ग भय और प्रतिशोध की भावना पैदा करके तार्किक आवाजों को दबाने का प्रयास करते हैं। मण्णपुर के मामले में भी कुछ ऐसी ही स्थिति जान पड़ती है, जहां हिंसा के संरक्षकों से निपटने में महीनों की टालमटोल के बाद, भाजपा की अगुवाई वाली केंद्र सरकार ने आखिरकार ऐसे तत्वों को अलग-थलग करने और उन्हें कानून के दायरे में लाने का फैसला लिया है। कट्टरपंथी पहचानवादी संगठन अरम्बाई तेंगोल के नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में इम्फाल घाटी में फिर से विरोध भड़क उठा है। यह घटनाक्रम एक जातीय संघर्ष के दौरान कानून प्रवर्तन के उपायों को लागू करने की ज़रूरत और उसमें पेश आने वाली दिक्कतों को उजागर करता है। यह चरमपंथी समूह बेखौफ होकर बेलगाम आतंकता की करतूतों में संलिप्त था तथा जो लोग इसके उग्रवादी एजेंडे से सहमत नहीं थे, उन्हें हिंसा और धमकियों के जरिए निशाना बनाता था। इसने विधायकों को भी अपने कौमपरस्त मकसदों से जुड़े संकल्पों पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया था। चौकाने वाली बात यह है कि भाजपा की अगुवाई वाली तत्कालीन राज्य सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया, यह मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह की अपनी पक्षपातपूर्ण नीति से ऊपर न उठ पाने का नतीजा था। इन हिंसक अपराधियों को जनता का संरक्षण मिलने के चलते सुरक्षा बल भी कार्रवाई करने में नाकाम थे। जल्द ही, ऐसे समूह शांति के लिए एक बड़ा खतरा बन गए और राष्ट्रपति शासन लागू करने के बाद ही सरकार इस समूह के साथ-साथ अन्य समूहों से पुलिस कर्मियों से लूटे गए अधिकांश हथियारों को वापस करवाने में सफल हो पाई। ये गिरफ्तारियां पहाड़ी इलाकों के उन उग्रवादी स्वयंसेवकों के खिलाफ इसी किस्म की कार्रवाई के साथ हुई हैं, जो कथित तौर पर कानून लागू कराने वाले अधिकारियों के खिलाफ हिंसा में शामिल थे। मण्णपुर सरकार, जो फिलहाल राष्ट्रपति शासन के अधीन है, को अपराध में गिरफ्तार लोगों की संलिप्तता का स्पष्ट मामला बनाना चाहिए तथा उन्हें न्याय के कठघरे में लाना चाहिए।

राज्यों के हकों की अनदेखी हुई

मोदी सरकार के 11 साल के शासन काल के दौरान राज्यों की अनदेखी हुई तथा संघीय ढांचे को कमजोर किया गया है, पिछले 11 वर्ष में मोदी सरकार ने लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने को गहरा आघात पहुंचाया है, भाजपा –आरएसएस ने हर संवैधानिक संस्था को कमजोर कर, उनकी स्वायत्तता पर कड़ा प्रहार किया है, चाहे वो जनमत चुराकर पिछले दरवाजे से सरकारों गिराना हो या एक-दलीय तानाशाही शासन जबरन लागू करना हो, इस दौरान, राज्यों के हकों की अनदेखी हुई है और संघीय ढांचे को कमजोर किया गया है, समाज में नफरत, धमकी और डर का वातावरण फैलाने की कोशिश जारी है। दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक तथा कमजोर वर्गों का शोषण लगातार बढ़ा है।

–मल्लिकार्जुन खड़गे, अध्यक्ष, कांग्रेस

भारत एक और जहां लगातार तेज ग़्रोथ करते हुए बीते दिनों जापान को पीछे छोड़ दुनिया की चौथी सबसे बड़ी इकोनॉमी बना, तो वहीं उपलब्धियों का सिलसिला जारी है और दुनिया इसका लोहा मान रही है। अब एक और खुश करने वाली रिपोर्ट आई है, जो विश्व बैंक ने जारी की है, जिसमें भारत में

अत्यधिक गरीबी में आई उल्लेखनीय कमी को रोशनी है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2022-23 में यह दर 5.3 प्रतिशत रह गई है, जो वर्ष 2011-12 में 27.1 फीसदी थी। रिपोर्ट के निष्कर्षों के अनुसार भारत ने लगभग एक दशक से कुछ कम समय में 27 करोड़ लोगों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकाला है, जो पैमाने और गति के मामले में उल्लेखनीय एवं ऐतिहासिक उपलब्धि कही जा सकती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शासन के 11 स्वर्णिम वर्षों में गरीबी को कम करने के लिए सामूहिक कार्रवाई की ज़रूरत पर जोर दिया है, गरीबों के संघर्षों और उनकी चिंताओं को सुनकर, उन्हें गरीबी से बाहर आने में मदद करके और अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करके उन्होंने गरीब उन्मूलन की योजनाओं को जमीन पर उतारा है। मोदी सरकार ने गरीबी में रहने वाले लोगों और व्यापक समाज के बीच समझ और संवाद को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा है। उनकी दृष्टि में गरीबी को खत्म करना सिर्फ गरीबों की मदद करना नहीं है-बल्कि हर महिला और पुरुष को सम्मान के साथ जीने का मौका देना है।

विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चलाई जा रही सरकारी पहलों, तेज आर्थिक सुधारों और जरूरी सेवाओं तक सबकी पहुंच का ही यह नतीजा है कि गरीबी दिन-ब-दिन तेजी से घट रही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार रोजगार में वृद्धि हुई है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। भारत ने बहुआयामी गरीबी को कम करने में भी जबरदस्त प्रगति की है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआइ) 2005-06 में 53.8 प्रतिशत से घटकर 2019-21 में 16.4 प्रतिशत और 2022-23 में 15.5 प्रतिशत हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों को गरीबी से उबारने के लिए केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों और सशक्तीकरण, बुनियादी ढांचे और समावेशन पर फोकस पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, जन-धन योजना और आयुष्मान भारत जैसी पहलों ने आवास, स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन, बैंकिंग और स्वास्थ्य सेवा तक उनको पहुंच को बढ़ाया है। डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर (डीबीटी), डिजिटल समावेश और मजबूत ग्रामीण बुनियादी ढांचे ने अंतिम जन तक लाभों की पारदर्शिता और तेज वितरण सुनिश्चित किया है। इससे 25 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी पर पार पाने में मदद मिली है। मोदी सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को संवल और आत्मनिर्भर बनाने के लिए

महाराष्ट्र में जब भी बारिश होती है, तो लोनावला से लेकर माथेरान और महाबलेश्वर जैसी जगहों पर पर्यटकों की भीड़ लगने लगती है। वहीं महाराष्ट्र की फेमस जगहों से दूसर संगमेश्वर एक ऐसी जगह है, जिसके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।

गरीबी के साथ आर्थिक असमानता दूर करने का लक्ष्य हो



अनेक योजनाएं चलाई हैं और उनका बेहतर क्रियान्वयन किया है। अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों की संख्या 34.44 करोड़ से घटकर 7.52 करोड़ रह गई है। पूरे भारत में अत्यधिक गरीबी को कम करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसमें प्रमुख राज्यों ने गरीबी में कमी लाने और समावेशी विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पांच बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और बंगाल में 2011-12 में देश के 65 फीसदी अत्यंत गरीब लोग थे। इन पांच राज्यों ने ही 2022-23 तक गरीबी कम करने में दो-तिहाई का योगदान दिया है।

विश्व बैंक ने पाकिस्तान को आईना दिखाते हुए भारत से गरीबी उन्मूलन की योजनाओं एवं सोच से प्रेरणा लेने की बात कही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान की 45 प्रतिशत आबादी गरीबी में है। भारत की गरीबी दर 5.3 प्रतिशत और पाकिस्तान की 42.4 प्रतिशत है। इसका सबसे बड़ा कारण पाक अपना सारा ध्यान आतंकवाद एवं आतंकवादियों के पोषण पर देता है, गरीबी दूर करना उसकी योजनाओं एवं नीतियों में दूर-दूर तक नहीं है। इसीलिए भारत ने वैश्विक मंचों पर पाक पर यह आरोप भी लगाया है कि वह अंतर्राष्ट्रीय सहायता का दुरुपयोग आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए कर रहा है। भारत ने विश्व बैंक और आईएमएफ जैसे संस्थानों से अनुरोध किया है कि वे पाक को दी जाने वाली सहायता को समीक्षा करें, क्योंकि इसका उपयोग आम लोगों के कल्याण के बजाय सैन्य खर्च और आतंकवादी गतिविधियों में हो रहा है। हाल के पाहलगाम हमले के बाद भारत ने इस मुद्दे को और जोरदार तरीके से उठाया, जिसमें

उसने पाक को सैन्य बजट में 18 प्रतिशत वृद्धि और सामाजिक कल्याण पर कम खर्च को उजागर किया। गरीबी किसी व्यक्ति के मानवाधिकारों का हनन है। यह न केवल अभाव, भूख और पीड़ा का जीवन जीने की ओर ले जाती है, बल्कि मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं के आनंद का भी बड़ा अवरोध है। पाक में यही स्थितियां देखने को मिल रही है। आजादी के अमृत काल में सशक्त भारत एवं विकसित भारत को निर्मित करते हुए गरीबमुक्त भारत के संकल्प को भी आकार दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार ने वर्ष 2047 के आजादी के शताब्दी समारोह के लिए जो योजनाएं एवं लक्ष्य तय किए हैं, उनमें गरीबी उन्मूलन के लिए भी व्यापक योजनाएं बनाई गई हैं। विगत ग्यारह वर्ष एवं मोदी के तीसरे कार्यकाल में ऐसी गरीब कल्याण की योजनाओं को लागू किया गया है, जिससे भारत के भाल पर लगे गरीबी के शर्म के कलंक को धोने के सार्थक प्रयत्न हुए हैं एवं गरीबी की रेखा से नीचे जीने वालों को ऊपर उठाया गया है।

निश्चित रूप से इस उपलब्धि में विभिन्न कल्याण कार्यक्रमों मसलन आर्थिक विकास और ग्रामीण रोजगार योजनाओं की बड़ी भूमिका रही है। निस्संदेह, इसने सबसे गरीब तबके के लोगों को आय बढ़ाने में मदद की है। निश्चित रूप से सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, बिजली, शौचालयों और आवास तक इस तबके की पहुंच बढ़ाने जैसी पहल ने ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत में जीवन की गुणवत्ता बेहतर बनाने में योगदान दिया है। लेकिन जहां हम गरीबी उन्मूलन में मिली सफलता पर आत्ममुग्ध हैं तो वहीं समाज में बढ़ती



ललित गर्ग

आर्थिक असमानता हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। गरीबी-अमीरी के बीच के बढ़ते फासले को कम करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। पिछले साल जारी की गई विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 से पता चलता है कि भारत में शीर्ष एक प्रतिशत लोगों की संपत्ति में बड़ा उछाल आया है। वे लोग देश की चालीस फीसदी संपत्ति नियंत्रित करते हैं। भारत में गरीबी का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या, कमजोर कृषि, भ्रष्टाचार, रुढ़िवादी सोच, जातिवाद, अमीर-गरीब में ऊंच-नीच, नौकरी की कमी, अशिक्षा, बीमारी आदि हैं। एक आजाद मुल्क में, एक शोषणविहीन समाज में, एक समतावादी दृष्टिकोण में और एक कल्याणकारी समाजवादी व्यवस्था में गरीबी रेखा नहीं होनी चाहिए। अब तक यह रेखा उन कर्णधारों के लिए शर्म की रेखा बनी रही है, जिसको देखकर उन्हें शर्म आनी चाहिए थी। एक बड़ा प्रश्न था कि जो रोटी नहीं दे सके वह सरकार कैसी? जो अभय नहीं बना सके, वह समाज कैसा? जो इज्जत व स्नेह न दे सके, वह समाज कैसा? गांधी और विनोबा ने सबसे उदय एवं गरीबी उन्मूलन के लिए सर्वोदय की बात की, लेकिन राजनीतिज्ञों ने उसे निज्योदय बना दिया था। गरीबी हटाओ में गरीब हट गए। अब तक जो गरीबी के नारे को जितना धुना सकते थे, वे सत्ता प्राप्त कर सकते थे, लेकिन अब मोदी सरकार गरीबी उन्मूलन के लिए सार्थक प्रयत्न कर रही है। मोदी सरकार की तकनीकी प्रेरित सेवाओं में उछाल के चलते, वर्ष 2000 के बाद विकास मॉडल ने गरीब वर्ग को लाभान्वित किया है। निर्विवाद रूप से सामाजिक न्याय के लिए गरीबी कम करने के साथ, कमजोर तबकों के लिए सम्मान, समानता और नीतियों में लचीलापन जरूरी है। वास्तव में गरीबी मुक्त भारत का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है जब सरकार की कल्याणकारी नीतियां न केवल उन्हें गरीबी के दलदल से बाहर निकालें, बल्कि उन्हें स्वावलंबी भी बनाएं। आर्थिक कल्याणकारी नीतियों का मकसद मुक्त की रेबड़ियां बांटना न होकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना होना चाहिए। तभी गरीबी का कुचक्र स्थाई रूप से कम किया जा सकता है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

वीकेंड में संगमेश्वर घूमने का बनाएं प्लान

महाराष्ट्र हमारे देश का एक खूबसूरत और प्रमुख राज्य है। महाराष्ट्र एक ओर से अरब सागर और दूसरी ओर से सतपुड़ा पर्वतमाला से घिरा हुआ है। यह एक ऐसा राज्य है, जो रिमझिम बारिश में पर्यटन हब का सबसे बड़ा केंद्र माना जाता है। महाराष्ट्र में जब भी बारिश होती है, तो लोनावला से लेकर माथेरान और महाबलेश्वर जैसी जगहों पर पर्यटकों की भीड़ लगने लगती है। वहीं महाराष्ट्र की फेमस जगहों से दूसर संगमेश्वर एक ऐसी जगह है, जिसके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है। वहीं हल्की रिमझिम बारिश में संगमेश्वर की खूबसूरती किसी हसीन खजाने से कम नहीं लगती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको संगमेश्वर की खासियत के बारे में बताने जा रहे हैं।

महाराष्ट्र में संगमेश्वर

संगमेश्वर को खासियत और खूबसूरती बेहद कमाल की है। यह रत्नागिरी में स्थित एक खूबसूरत और मनमोहक जगह है। संगमेश्वर महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई से करीब 284 किमी, पुणे से 247 किमी और कोल्हापुर से करीब 120 किमी दूर है।

क्यों फेमस है संगमेश्वर

महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में स्थित संगमेश्वर भले ही एक छोटा सा शहर है, लेकिन यह जगह अपने धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व और खूबसूरत पर्यटन स्थलों के लिए पूरे राज्य में फेमस है। खासकर यह जगह संगमेश्वर मंदिर और संगमेश्वर शहर के लिए फेमस है। जोकि भगवान शिव को समर्पित है। संगमेश्वर

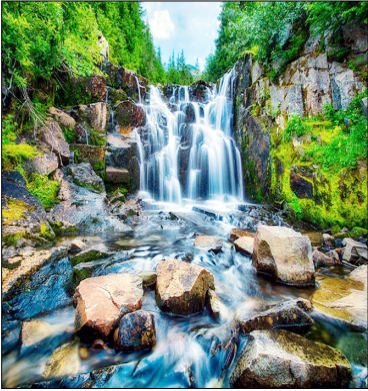
महाराष्ट्र का एक ऐसा शहर है, जो शास्त्री नदी और सोनावी नदी के संगम पर स्थित है। इसके चलते यहां पर रिमझिम बारिश में राज्य के हर कोने से लोग घूमने के लिए आते हैं। इस स्थान को रत्नागिरी का छिपा हुआ खजाना भी माना जाता है। वहीं गमेश्वर वहीं स्थान है, जहां पर औरंगजेब ने छत्रपति शिवाजी महाराज के बेटे छत्रपति संभाजी महाराज को बंदी बनाया था।

पर्यटकों के लिए क्यों खास है ये जगह

संगमेश्वर का इतिहास प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ण माना जाता है। रिमझिम बारिश में स्थित वॉटरफॉल से लेकर घास के मैदान और नदियों की खूबसूरती इस जगह को बेहद खूबसूरत बनाने का काम करती है। संगमेश्वर की हरियाली देखते ही बनती है। संगमेश्वर अपने शांत और शुद्ध वातावरण के लिए जाना जाता है। शहर की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी से दूर संगमेश्वर में आप सुकून के कई पल बिताने के लिए पहुंचते हैं। संगमेश्वर अपनी खूबसूरती के साथ ही एडवेंचर एंक्टिविटी के लिए भी जाना जाता है। कई लोग मानवों में यहां पर सिर्फ ट्रेकिंग का लुत्क उठाने के लिए पहुंचते हैं।

संगमेश्वर मंदिर

संगमेश्वर के सबसे प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में संगमेश्वर मंदिर काफी फेमस है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। पहाड़ी की चोटी पर स्थित होने के कारण पर्यटक यहां घूमने के लिए पहुंचते रहते हैं। मंदिर के आसपास से बेहद खूबसूरत नजारा देखने को मिलता है। कर्णेश्वर मंदिर को भी एक्सप्लोर कर सकते हैं और यह मंदिर भी भगवान शिव को समर्पित है।



मार्लेश्वर वॉटरफॉल

संगमेश्वर के पहाड़ों में स्थित मार्लेश्वर एक फेमस और खूबसूरत वॉटरफॉल है। मानसून में यहां सिर्फ स्थानीय पर्यटक नहीं बल्कि अन्य कई शहरों से पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। यह वॉटरफॉल प्रकृति प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहां के आसपास की हरियाली पर्यटकों को खूब आकर्षित करती है। इसके साथ ही आप छत्रपति संभाजी महाराज की समाधि को एक्सप्लोर करना न भूलें।

2018 से 2023 के बीच पशुओं से इंसानों में फैले थे 8% संक्रामक रोग

भारत में 2018 से 2023 के बीच इंटीग्रेटेड डिजीज सर्विलांस प्रोग्राम द्वारा दर्ज 8.3 फीसदी प्रकोप जानवरों से इंसानों में फैले थे। गौरतलब है कि जानवरों से इंसानों में फैलने वाली इन बीमारियों को जूनोटिक डिजीज के रूप में जाना जाता है। इनमें कोविड-19 जैसी महामारियां भी शामिल हैं। यह जानकारी इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एपिडेमियोलॉजी द्वारा किए एक वर्ष विश्लेषण में सामने आई है। इस विश्लेषण के नतीजे अंतराष्ट्रीय जर्नल द लॉसेट रीजनल हेल्थ साउथईस्ट एशिया में प्रकाशित हुए हैं। गौरतलब है कि अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने 2018 से 2023 के बीच इंटीग्रेटेड डिजीज सर्विलांस प्रोग्राम (आईडीएसपी) के तहत रिपोर्ट हुए कुल 6,948 प्रकोपों का विश्लेषण किया है। इनमें से 583 यानी 8.3 फीसदी प्रकोप जूनोटिक थे। मतलब कि इस दौरान हर महीने औसतन सात जूनोटिक प्रकोप सामने आए। शोधकर्ताओं ने पाया है कि हर साल जून से अगस्त के बीच यह प्रकोप अपने चरम पर होते हैं। चिंता की बात यह है कि इन प्रकोपों में साल दर साल वृद्धि दर्ज की गई है।

पूर्वोत्तर भारत रहा सबसे ज्यादा प्रभावित

अध्ययन में यह भी सामने आया है कि इन जूनोटिक बीमारियों में जापानी इंटोफेलाइटिस सबसे आम था, जो कुल जूनोटिक प्रकोपों का 29.5 फीसदी था। इसके बाद लेटोस्पायरॉसिस (18.7 फीसदी) स्कूब टायफस (13.9 फीसदी) का स्थान रहा। वहीं भारत में क्षेत्रीय आधार पर देखें तो देश के पूर्वोत्तर हिस्से में सबसे ज्यादा 35.8 फीसदी प्रकोप सामने आए हैं। वहीं इसके बाद दक्षिण भारत (31.7 फीसदी) और पश्चिम भारत (15.4 फीसदी) में इनका सबसे ज्यादा प्रकोप देखा गया।

देरी अभी भी बनी हुई है समस्या

अध्ययन में यह भी सामने कुल प्रकोपों में से एक-तिहाई मामलों यानी करीब 34.6 फीसदी में रिपोर्टिंग देर से हुई थी। हालांकि, धीरे-धीरे रिपोर्ट में सुधार आया है। आंकड़ों पर नजर डालें तो 2019 में जहां 52.6 फीसदी मामले देर से रिपोर्ट हुए थे, जबकि 2023 में यह आंकड़ा घटकर 5.2 फीसदी रह गया। हालांकि चिंता की बात यह रही कि जूनोटिक प्रकोपों के 97.2 फीसदी मामलों में कोई फॉलो-अप रिपोर्ट उपलब्ध नहीं थी, यानी यह पता ही नहीं चला कि बाद में क्या कदम उठाए गए या रोग को कैसे नियंत्रित किया गया। अध्ययन में शोधकर्ताओं ने कहा है कि देश में खसरा, चिकनपॉक्स और डेंगू जैसी बीमारियों पर अलग-अलग विश्लेषण हुए हैं, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर जूनोटिक प्रकोपों पर अब तक कोई समग्र अध्ययन नहीं हुआ है। यही वजह है कि उन्होंने राष्ट्रीय निगरानी प्रणाली के तहत उन क्षेत्रों को चिह्नित किया जहां जानवरों से इंसानों में फैलने वाले रोगों के प्रकोप ज्यादा सामने आए हैं। हालांकि साप्ताहिक रिपोर्टों में कई गंभीर खामियां पाई गईं, खासकर फॉलो-अप जानकारी की कमी सबसे ज्यादा चिंताजनक थी। ऐसे में शोधकर्ताओं ने इन खामियों को दूर करने के लिए उन क्षेत्रों में जहां जूनोटिक रोगों का प्रकोप सबसे ज्यादा है, वहां बीमारी को ध्यान में रखते हुए विशेष निगरानी तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है। अध्ययन से पता चला है कि दुनियाभर में महामारी और प्रकोपों का बढ़ा कारण नई या दोबारा से उभरती बीमारियां हैं, जिनमें से करीब दो-तिहाई रोग जानवरों से इंसानों में फैलते हैं। देखा जाए तो इसके लिए कहीं न कहीं हम इंसान ही जिम्मेवार हैं। मानव गतिविधियों और पर्यावरण में हो रहे बदलाव, जैसे कि जंगलों की कटाई और वन्यजीवों के रहने की जगह में बढ़ता दखल, इंसानों और



जानवरों के बीच संपर्क को बढ़ा रहा है। इससे जूनोटिक रोगों के फैलने का खतरा भी बढ़ रहा है। **कैसे इंसानों में फैलती हैं जूनोटिक बीमारियां** आमतौर पर यह बीमारियां तब फैलती हैं जब कोई वायरस अपने मेजबान (होस्ट) से अलग एक नया होस्ट खोजने में सक्षम हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि कोई जानवर किसी खास वायरस से ग्रस्त है और वो किसी प्रकार इंसानों या दूसरे जानवरों के संपर्क में आता है तो वो उन्हें भी संक्रमित कर देता है। इस तरह यह बीमारियां एक से दूसरे के जरिए पूरे समाज में फैलना शुरू कर देती हैं। इस तरह का प्रसार तब ज्यादा होता है जब वायरस इंसान जैसे होस्ट के संपर्क में आता है या फिर उनमें म्यूटेशन होने लगते हैं। देखा जाए तो इंसान और जानवरों

के बीच भौतिक नजदीकी इस वायरस को इंसानों में फैलने के लिए आदर्श परिस्थितियां बनाती है। पिछले 100 वर्षों से जुड़े आंकड़ों को देखें तो औसतन हर साल दो वायरस अपने प्राकृतिक वातावरण से निकलकर इंसानों में फैल रहे हैं, लेकिन प्रकृति के विनाश की बढ़ती दर इनके फैलने के खतरे को और बढ़ा रही है। ये बीमारियां पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय हैं, लेकिन कमजोर और निम्न-मध्यम आय वाले देशों में यह समस्या कहीं ज्यादा गंभीर है। इन देशों में तेजी से बढ़ती इंसानी गतिविधियों के कारण वन्यजीवों और इंसानों के बीच घटकराव बढ़ रहा है, जिससे जानवरों से इंसानों में रोग फैलने की घटनाएं ज्यादा हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी अपनी रिपोर्ट में चेताया है कि नई उभरती जूनोटिक बीमारियां 2030 तक एक और

अमेरिकी एयरपोर्ट पर भारतीय छात्र को जमीन पर पटका, हथकड़ी लगाई स्टूडेंट चिल्लाता रहा: पागल नहीं हूं, भारत डिपोर्ट किया

वाशिंगटन। अमेरिका के न्यूजर्सी में एक भारतीय छात्र को न्यूयार्क एयरपोर्ट पर अपराधियों की तरह जमीन पटका गया और फिर हथकड़ी लगाकर भारत डिपोर्ट किया गया। भारतीय मूल के अमेरिका बिजनेसमैन कुनाल जैन ने रविवार को इसका वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया।

जैन ने एक्स पर लिखा-मैंने न्यूयार्क एयरपोर्ट पर एक युवा भारतीय छात्र को हथकड़ी लगाकर, रोते हुए, अपराधी की तरह ट्रीट होते देखा। वो अपने सपनों को सच करने आया था, किसी को नुकसान पहुंचाने नहीं। एक एनआरआई होने के नाते, मैं खुद को कमजोर और टूटा हुआ महसूस कर रहा हूँ। जैन को बताया कि छात्र हरियाणवी में कह रहा था कि मैं पागल नहीं हूँ, ये लोग मुझे पागल साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। अभी तक यह साफ नहीं है कि छात्र को किस वजह से डिपोर्ट किया गया। उन्होंने आगे कहा-ये बच्चे वीसा लेकर सुबह फ्लाइट से आते हैं। किसी कारण से इमिग्रेशन ऑथॉरिटीज को अपना आने का



■ जैन ने भारतीय दूतावास, अमेरिका और विदेश मंत्री एस. जयशंकर से इस मामले में हस्तक्षेप करने की अपील की
■ यह घटना ऐसे वक़्त पर हुई है, जब अमेरिकी सरकार अंतर्राष्ट्रीय छात्रों पर सख्ती बढ़ा रही है

कारण समझा नहीं पाते और शाम की फ्लाइट से हाथ-पैर बांधकर, मुजरिमा की तरह भेज दिए जाते हैं। हर दिन 3-4 ऐसे मामले हो रहे हैं। पिछले कुछ दिनों में ऐसे केस ज्यादा बढ़ गए हैं। जैन ने भारतीय दूतावास, अमेरिका और विदेश मंत्री एस. जयशंकर से इस मामले में हस्तक्षेप करने की अपील की। उन्होंने लिखा-किसी को पता लगाना चाहिए कि इस छात्र का क्या हो रहा है। यह घटना ऐसे वक़्त पर हुई है, जब अमेरिकी सरकार अंतर्राष्ट्रीय छात्रों पर सख्ती बढ़ा रही है और बिना नोटिस के वीजा रद्द कर रही

है। फलस्तीन के समर्थन से लेकर ट्रैफिक उल्लंघन तक, अलग-अलग वजहों से छात्र कानूनी मुश्किलों में पड़ जाते हैं। अमेरिकी सरकार ने दो हफ्ते पहले विदेशी छात्रों के लिए नए वीजा इंटरव्यू पर रोक लगा दी है। विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने इसे लेकर एक आदेश जारी किया था। आदेश का मकसद देश की यूनिवर्सिटीज में यहूदी विरोध और वामपंथी विचारों को रोकना था। रुबियो ने दुनिया भर में अमेरिकी दूतावासों को आदेश जारी कर कहा-वे स्टूडेंट वीजा के लिए नए इंटरव्यू



नई दिल्ली। चाणक्यपुरी स्थित संजय कैप में गर्मी के दिनों में जल संकट के बीच टैकर से पीने का पानी भरते और खेलते बच्चे।

रूस ने 1212 यूक्रेनी सैनिकों के शवों को अदला-बदली स्थल पर पहुंचाया

मॉस्को। रूस ने इस्तांबुल समझौते के अनुसार सीमा के अदला-बदली स्थल पर यूक्रेन के 1212 सैनिकों के शवों पहुंचाया है। लेफ्टिनेंट जनरल एलेक्जेंडर जोरिन ने रविवार को यह जानकारी दी। लेफ्टिनेंट जनरल जोरिन, जो रूसी वार्ता समूह के प्रतिनिधि भी हैं। उन्होंने कहा कि यूक्रेन ने संपर्क नहीं किया है, इसलिए शवों का स्थानांतरण और कैदियों को अदला-बदली अभी तक नहीं हुई है। उन्होंने बताया कि दोनों पक्षों को ओर से आदान-प्रदान की प्रक्रिया के लिए

स्थल पर प्रतीक्षा कर रहे कुछ विदेशी मीडिया प्रतिनिधियों ने शवों को ले जा रहे कुछ रेफ्रिजरेटेड ट्रकों की जांच की है। लेफ्टिनेंट जनरल जोरिन ने कहा कि यूक्रेनी सैनिकों के अधिक शवों वाली ट्रेनें जल्द सीमा की ओर बढ़ना शुरू करगी। उन्होंने कहा कि रूस अगले सप्ताह यूक्रेनी सैनिकों के शवों को स्थानांतरित करने के लिए यूक्रेन की आधिकारिक पुष्टि का इंतजार कर रहा है। यह घटना दोनों पक्षों के बीच कैदियों की अदला-बदली को लेकर चल रहे विवाद के बीच हुई।

अमेरिका ने नहीं आने दिया 12 देशों के नागरिकों को, सात देशों पर आंशिक प्रतिबंध

वाशिंगटन। अमेरिका में आज से 12 देशों के नागरिकों की एंटी पर बैन लागू हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने 4 जून को इसे लेकर एक आदेश जारी किया था, जो आज 9 जून से लागू होगा।

12 देशों के अलावा 7 देशों के नागरिकों पर आज से आंशिक रोक लागू होगी। ये इमिग्रेशन और नान-इमिग्रेशन दोनों तरह के वीजा पर लागू होगी। ट्रम्प ने अपने इस फैसले के पीछे अमेरिकी लोगों की सुरक्षा और जान की हिफाजत का हवाला दिया था। ट्रम्प ने 4 जून को कहा था कि अमेरिका को ऐसे विदेशी नागरिकों से सुरक्षित रखना जरूरी है जो आतंकवादी हमले करने, राष्ट्रीय सुरक्षा को नुकसान पहुंचाने, नफरत फैलाने या इमिग्रेशन कानूनों का गलत फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। अमे.



ट्रम्प ने 4 जून को कहा था कि अमेरिका को ऐसे विदेशी नागरिकों से सुरक्षित रखना जरूरी है जो आतंक फैलाने की कोशिश करते हैं

रिकी विदेश विभाग के मुताबिक पूर्ण बैन का मतलब है कि उस देश के अधिकतर नागरिकों का अमेरिका में प्रवेश पूरी तरह से प्रतिबंधित होता है। इनमें ट्रिस्टीन वीजा, स्टूडेंट वीजा, वर्क वीजा और इमिग्रेंट वीजा चाहने वाले लोग शामिल होते हैं। वहीं, आंशिक बैन का मतलब है कि उस देश के नागरिकों पर कुछ खास प्रकार के वीजा या एंटी पर रोक लगाई जाती है, बाकी पर नहीं। यानी इमिग्रेंट

इमरान की 11 जून को रिहाई की उम्मीद पीटीआई अध्यक्ष गौहर अली खान ने किया दावा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान तहरीक-ए-इस्लाम (पीटीआई) के एक शीर्ष नेता ने दावा किया कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान जल्द जेल से रिहा हो सकते हैं। उनकी इस बात से संकेत मिलता है कि सेना प्रमुख असीम मुनीर आखिरकार खान के सामने झुक सकते हैं।

न्यूज एंजेंसी 'पीटीआई' के मुताबिक, पीटीआई अध्यक्ष गौहर अली खान ने दावा किया अगस्त 2023 से रावलपिंडी को उच्च सुरक्षा वाली अस्थायी जेल में बंद इमरान खान को 11 जून को जमानत मिल सकती है। यह बयान ऐसे समय आया है, जब कुछ दिन पहले ही इमरान खान ने खुद को पीटीआई का संरक्षक घोषित किया था और जेल से ही राष्ट्रव्यापी आंदोलन का एलान किया था। गौहर का दावा उन खबरों के बाद भी आया है, जिनमें कहा गया कि इमरान की रिहाई को लेकर पदों के पीछे बातचीत चल रही है। हालांकि,

इमरान खान ने खुद इन खबरों को सिर से खारिज किया है। जनता में इमरान खान के लिए बढ़ते समर्थन और जेल से ही देशव्यापी आंदोलन का नेतृत्व करने के उनके फैसले ने सेना प्रमुख असीम मुनीर पर दबाव बढ़ा दिया है। पहले से ही 'ऑपरेशन सिंदूर' के चलते बैकफूट पर चल रहे मुनीर अब इमरान के सामने पीछे हटते दिख रहे हैं। हालांकि, इमरान खान ने अभी तक कुछ स्पष्ट नहीं कहा है। लेकिन गौहर अली खान ने कराची के एआरवाई न्यूज के हवाले से कहा कि 11 जून का दिन इमरान खान और उनकी पत्नी दोनों के लिए अहम होगा। गौहर ने यह भी स्पष्ट किया कि इमरान खान की रिहाई किसी भी समझौते के तहत नहीं होगी। इस्लामाबाद हाईकोर्ट पहले ही अल-कादिर ट्रस्ट मामले की सुनवाई

■ हालांकि, इमरान खान ने खुद इन खबरों को सिर से खारिज किया

को 11 जून तक के लिए टाल चुकी है। इमरान खान पर कई केस चल रहे हैं और वह अगस्त 2023 से रावलपिंडी की अस्थायी जेल में बंद हैं। वह अपनी गिरफ्तारी को गैरकानूनी बताते हैं। उनकी पार्टी पीटीआई लगातार प्रदर्शन करती रही है, जिसमें नवम्बर 2024 में इस्लामाबाद की घेराबंदी भी शामिल थी। जनवरी 2024 में इमरान की पत्नी बुशरा बीबी को तोशाराखाना मामले में 14 साल की सजा सुनाई गई थी। उन पर राज्य को मिले तोहफों को गैरकानूनी तरीके से बेचने का आरोप है। इमरान खान का असीम मुनीर से टकराव लंबे समय से चला आ रहा



लॉस एंजिल्स में हिंसा, झंडे पर थूका, सैकड़ों गाड़ियां जलाई दुकानों और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में लूट-पाट की

लॉस एंजिल्स। अमेरिका के लॉस एंजिल्स में अवैध प्रवासियों पर हो रही कार्रवाई के विरोध में चल रहा प्रदर्शन बीते दो दिनों से हिंसक हो गया है। उपद्रवियों ने शहर की सड़कों को जाम कर, सैकड़ों गाड़ियों में आग लगा दी। दुकानों और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में लूट-पाट की है। शहर के एक चौराहे पर प्रदर्शनकारियों ने अमेरिकी झंडे पर थूका और उसे जला दिया। कई इलाकों में उपद्रवियों ने सुरक्षाबलों पर पत्थर और पटाखे फेंके।

वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने लॉस एंजिल्स में हो रहे प्रदर्शनों को रोकने के लिए कड़ा रुख अपनाया है। उन्होंने कानून प्रवर्तन एजेंसियों को आदेश दिया है कि जो लोग प्रदर्शन के दौरान मास्क पहन रहे हैं, उन्हें तुरंत गिरफ्तार किया जाए। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कहा कि अब से किसी भी प्रदर्शन में मास्क पहनने की अनुमति नहीं दी जाएगी। अमेरिका के लॉस एंजिल्स शहर में सरकार की आज्ञा न नीतियों के

■ मास्क पहनने वालों की तुरंत गिरफ्तारी का आदेश

खिलाफ 3 दिन से हिंसक प्रदर्शन हो रहे हैं। उपद्रवियों ने पूरे शहर में कई सड़कों पर आगजनी की है। इस दौरान सैकड़ों गाड़ियों को आग के हवाले किया है। कई प्रदर्शनकारी अमेरिकी झंडे पर थूकते और जलाते भी नजर आए। प्रदर्शनकारी मास्क पहनकर सड़कों पर उतर रहे हैं ताकि वे सुरक्षा कैमरों से बच सकें। ट्रम्प ने लॉस एंजिल्स में फैली हिंसा और तोड़फोड़ के बाद वहां तैनात किए गए नेशनल गार्ड के जवानों की तारीफ भी की है। ये जवान आमतौर पर राज्य के गवर्नरों के आदेश पर बुलाए जाते हैं, लेकिन इस बार ट्रम्प ने खुद उनकी तैनाती कर दी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर लिखा कि शहर पर अवैध प्रवासियों का कब्जा है, इसे जल्द आजाद कराया जाएगा। उन्होंने प्रदर्शनकारियों पर एक्शन लेने की बात भी कही है।

इजरायल ने ग्रेटा थनबर्ग के जहाज को कब्जे में लिया

तेल अवीव। इजरायल ने स्वीडिश पर्यावरण कार्यकर्ता और नोबेल पुरस्कार विजेता ग्रेटा थनबर्ग और उनके जहाज को कब्जे में ले लिया है। सोमवार तड़के इजरायल की 5 स्पीड बोट्स ने जहाज को घेर लिया। इसके बाद सैनिकों ने जहाज पर चढ़कर उसे अपने कंट्रोल में ले लिया।

यह जहाज गाजा के लोगों के लिए राहत सामग्री लेकर जा रहा था। मैडलोन नाम के इस जहाज पर 12 लोग सवार हैं। सभी सैनिकों के पहुंचने के बाद जहाज पर सवार सभी कार्यकर्ताओं ने इमरजेंसी से निपटने के लिए लाइफ जैकेट पहन लिए थे। काटज ने यह आदेश देते हुए खासतौर पर थनबर्ग का नाम लिया। उन्होंने कहा कि ग्रेटा और उनके शरास शराम समर्थक साथियों को



■ हिरासत में लिए स्वीडिश पर्यावरण कार्यकर्ता इजरायली सेना हमला हमले का वीडियो दिखाएगी

के 7 अक्टूबर 2023 के हमले का वीडियो दिखाया जाएगा। रक्षा मंत्री इजरायल काटज ने सेना को यह आदेश दिया है। इजरायली सैनिकों के पहुंचने के बाद जहाज पर सवार सभी कार्यकर्ताओं ने इमरजेंसी से निपटने के लिए लाइफ जैकेट पहन लिए थे। काटज ने यह आदेश देते हुए खासतौर पर थनबर्ग का नाम लिया। उन्होंने कहा कि ग्रेटा और उनके शरास शराम समर्थक साथियों को

बम की धमकी के बाद गल्फ एयर विमान कुवैत में सुरक्षित उतरा

कुवैत सिटी। कुवैत में गल्फ एयर के एक विमान को उड़ान भरने के कुछ समय बाद बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद कुवैत अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतर लिया गया है। विमान से सभी यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया और संदिग्ध को गिरफ्तार किया गया है। कुवैत के विमान प्रधिकरण ने यह जानकारी दी। कुवैत के नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने एक बयान में कहा कि उड़ान जोएफ213 के आपमन पर पूरी सुरक्षा जांच की गई और डीजीसीए और आंतरिक मंत्रालय के समन्वय में आपातकालीन प्रक्रियाएं सक्रिय की गईं। बयान में कहा गया कि रविवार को सभी यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया और

■ संदिग्ध को लिया हिरासत में

किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। साथ ही कहा गया कि यात्रियों को हवाई अड्डे के निर्दिष्ट लॉन्ज में ले जाया गया और उनकी हालत अच्छी है। डीजीसीए के प्रवक्ता अब्दुल्ला अल राजी ने कहा कि इस घटना से हवाई अड्डे के संचालन पर कोई असर नहीं पड़ा और उड़ानें निर्धारित समय पर जारी रहें। सुरक्षा टीमों ने मानक आपातकालीन प्रक्रियाओं के अनुरूप विमान की गहन जांच की और एहतियात के तौर पर यात्रियों को उतार दिया गया। अधिकारियों ने पुष्टि की है कि बम की धमकी देने वाले व्यक्ति को हिरासत में ले लिया गया है।

अमेरिकी संसद में मस्क पर इशारा करते हुए स्पीकर की दो टूक

मस्क के लिए कानून नहीं बदलूंगा

वाशिंगटन। स्पीकर माइक जोनसन ने साफ कर दिया कि वह एलन मस्क के खिलाफ और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के साथ हैं। मस्क ने रिपब्लिकन पार्टी के टेक्स और बजट विधेयक की आलोचना की थी, लेकिन जोनसन ने कहा कि मस्क की आलोचना से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। उन्होंने जीओपी-नियंत्रित कांग्रेस पर मस्क के प्रभाव को कम करके आंका।

एक टीवी शो में जोनसन ने कहा कि मैं दुनिया के सबसे अमीर आदमी को खुश करने के लिए कानून नहीं बनाऊंगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमारा मकसद मेहनत करने वाले आम अमेरिकियों की मदद करना है। जो अपने परिवारों के लिए प्रावधान करने और गुजारा करने की कोशिश कर रहे हैं। जोनसन ने कहा कि उन्होंने ट्रम्प के सरकारी दक्षता विभाग के पूर्व प्रमुख मस्क से कुछ टेक्स्ट संदेशों का आदान-प्रदान किया, जब



■ मस्क पर स्पीकर ने कसा बड़ा तंज

मस्क ने जीओपी बिल को 'घटिया' कहा और कहा कि इससे अमेरिका का कर्ज और भी बढ़ेगा। मस्क ने कैपिटल हिल में मतदाताओं से इस बिल के खिलाफ वोट करने की अपील की, जो सदन से पारित होने के बाद सीनेट में लंबित है। मस्क को इस आलोचन से राष्ट्रपति ट्रम्प भी नाराज हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें मस्क के साथ अपने संबंधों

को सुधारने की कोई इच्छा नहीं है। स्पीकर जोनसन ने रिपब्लिकन नेताओं के खिलाफ डेमोक्रेट्स को फंड देने की मस्क की धमकियों को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि हमें कांग्रेस के किसी भी रिपब्लिकन सदस्य की ओर से कोई चिंता नहीं दिख रही है। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि लोग प्रतीक्षा करने और देखने का रवैया अपना रहे हैं। कुछ लोग उनके कुछ तर्कों से सहमत हो सकते हैं, लेकिन बाकी लोग समझते हैं कि यह एक बहुत ही रोमांचक कानून है। स्पीकर जोनसन ने कहा कि मस्क को सही जानकारी नहीं है, और जो रिपोर्ट कहती है कि इस बिल से अमेरिका का कर्ज 2.4 ट्रिलियन डॉलर और बढ़ेगा, वह रिपोर्ट गलत आधार पर बनाई गई है। उन्होंने तर्क दिया कि कम टेक्स और खर्च की कटौती से अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और इससे आगे चलकर घाटा भी कम हो सकता है।

ईरान में सड़क पर कुत्ता घुमाने पर बैन

तेहरान। ईरान के 20 शहरों में पाक या फिर सड़कों पर लोगों के कुत्ते टहलाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, सरकार ने यह कदम लोगों की सेहत, समाज में शांति और सुरक्षा के लिए उठाया गया है। यह बैन 6 जून से लागू हो गया है। एक स्थानीय अधिकारी ने कहा कि जो लोग इस नियम का पालन नहीं करेंगे, उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस तरह का नियम पहले 2019 में तेहरान में भी लागू किया गया था। अब यह इस्फहान और केरमान जैसे बड़े शहर में भी लागू हो गया है। ईरान में 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद से कुत्ते पालने और उन्हें सार्वजनिक तौर पर

■ लोगों की सुरक्षा के लिए 20 शहरों में नियम लागू

घुमाना एक विवाद का विषय रहा है। कुछ अधिकारी मानते हैं कि कुत्ते पालने की आदत पश्चिमी देशों की संस्कृति का हिस्सा है और इसे ईरानी संस्कृति के लिए खतरा माना जाता है। वहीं, कई धार्मिक नेता मानते हैं कि कुत्तों को छूना या उनकी लार से संपर्क में आना धार्मिक रूप से गंदा होता है। ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्ला खामेनेई ने 2017 में कहा था कि सिर्फ चरवाहों, शिकारी या सुरक्षा के लिए कुत्ता पालना सही है। हालांकि इन्हें लेकर कोई सख्त कानून नहीं है, जो कुत्तों को पालने से पूरी तरह रोकें।